अभ्यासवान् भव

दशमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्

1075

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

प्रथम संस्करण
मई 2019 ज्येष्ठ 1941

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941
फ़रवरी 2021 माघ 1942

PD 30T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2019

₹ ??-00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ....

ISBN 978-93-5292-141-6

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 — फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 — फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 — फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	विपिन दिवान
उत्पादन सहायक	:	

आवरण एवं चित्र
डी.टी.पी. प्रकोष्ठ

© NCERT not to be republished

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्श-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद: भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे दशमकक्षाया: छात्राणां संस्कृतव्याकरणस्य अभ्यासार्थं चतुर्दशाध्यायेषु निर्मितस्य "अभ्यासवान् भव" इति नामधेयस्य अभ्यासपुस्तकस्य संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र अपठितावबोधनेन सह पत्रलेखनम्, अनुच्छेदलेखनम्, रचनानुवाद:, चित्रवर्णनम्, सन्धि:, समय:, वाच्यम्, अशुद्धिसंशोधनं, प्रत्ययसमासाव्ययप्रयोग: इति विषयेषु अभ्यासक्रमा: दत्ता: येन छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासो भवेत्। एतदतिरिच्य मिश्रिताभ्यासद्वयम् आदर्शप्रश्नपत्रमेकम् अपि प्रदत्तं येन छात्रा: भाषाकौशलेन सह परीक्षाया: कृतेऽपि सन्नद्धा: भवेयु:। परिशिष्टे ध्येयवाक्यानां, व्यवहारवाक्यानां चापि सन्निवेश: कृत: येन कक्षायामपि छात्रा: संस्कृतभाषया सम्भाषणे समर्था: भवेयु:। अनेन पुस्तकेन छात्रा: संस्कृतस्य भाषाप्रयोगे दक्षा: भवेयु: इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहित:।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यै: विशेषज्ञै: अनुभविभि: संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोग: कृत:, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शा: सदैवास्माकं स्वागतार्हा:।

हृषिकेश: सेनापति:

निदेशक:

राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

नवदेहली

मार्च, 2019

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

पुस्तक निर्माण समिति

सदस्य

आभा झा, *पी.जी.टी.* संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं 3, दिल्ली कैंट, नयी दिल्ली

वेदप्रकाश मिश्र, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

शशिपाल शर्मा, *निदेशक*, जयति संस्कृतम्, नोएडा

सरोज गुलाटी, *पी.जी.टी.* संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली

सरोज पुरी, सेवानिवृत्त, *टी.जी.टी.* संस्कृत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पीतम पुरा, नयी दिल्ली

समन्वयक

के.सी.त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर* संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। परिषद्, अनीता, रेखा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* रिंकेश भदूला, *जे.पी.एफ.*, भाषा शिक्षा विभाग एवं पुस्तक के संपादन के लिए ममता गौड़, *संपादक-संविदा*, प्रवीन कुमार, नरेश कुमार, आरती, *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* प्रकाशन प्रभाग, के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

© NCERT not to be republished

भूमिका

गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

शुद्ध भाषा प्रयोग के लिए और ग्रन्थों के भावों को आत्मसात् करने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि व्याकरण का प्रत्यक्ष ज्ञान देने का प्रचलन आज की शिक्षा पद्धति में नहीं है, पाठों में प्रयुक्त व्याकरण-बिंदुओं को अनेक उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इस तरह व्याकरण के नियमों को स्मरण करने की नीरस प्रक्रिया से बच्चों को गुज़रना नहीं पड़ता और व्याकरण वाक्य सरंचना का नियमानुसार ज्ञान भी हो जाता है।

अभ्यासवान् भव में दशम कक्षा के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमानुसार अभ्यास हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराई गई है, जिससे वे न केवल आवश्यक व्याकरण-बिंदुओं से परिचित होते हैं, बल्कि वाक्य संरचना कौशल का पर्याप्त ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। पुन:-पुन: अभ्यास करने से विषयों का ज्ञान हो जाता है और वह स्मृत विद्या चिरकालपर्यन्त याद रहती है। 'अनभ्यासे विषं विद्या' यह जानते हुए विद्यार्थियों को पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास पुस्तिका में अपठितांश, पत्र, चित्रवर्णन, अनुच्छेदलेखन, संस्कृतानुवाद, सन्धि, समास, प्रत्यय, अव्यय, समय, वाच्य और अशुद्धि संशोधन पर आधारित बारह पाठ हैं। इसके अतिरिक्त मिश्रित अभ्यास हेतु दो कार्यपत्रिकाएँ त्रयोदश पाठ में समाविष्ट की गई हैं। चतुर्दश पाठ में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार एक आदर्श प्रश्न पत्र भी समाविष्ट किया गया है, जो परीक्षा हेतु तैयारी में सहायक होगा।

परिशिष्ट में ध्येय-वाक्यों और व्यवहार-वाक्यों का संकलन है, जिससे छात्रों की संभाषण क्षमता में वृद्धि होगी।

आशा है यह अभ्यास पुस्तिका छात्रों को संस्कृत भाषा-संरचना, व्याकरण एवं संस्कृत व्यवहार का अभ्यास कराने में सफल होगी। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुधी समालोचकों के सत् परामर्शों का सदैव स्वागत है।

© NCERT not to be republished

मङ्गलम्

अभ्यास: कार्यसिद्ध्यर्थं
नित्यं कुर्वन्ति पण्डिता:।
संसारे सिद्धिमन्त्रोऽयं
तस्मादभ्यासवान्भव।।

कार्य की सिद्धि के लिए समझदार लोग नित्य अभ्यास करते हैं। यह (अभ्यास) संसार में सिद्धि (प्राप्त करने) का मंत्र है। इसलिए (तुम भी) अभ्यास करने वाले बनो।

अभ्यसामो वयं विद्यां
यावतीमधिकाधिकाम्।
तावदग्रे जगत्यस्मिन्
सरिष्यामो न संशय:।।

हम विद्या का जितना अधिक से अधिक अभ्यास करते हैं, संसार में उतना ही आगे बढ़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।

© NCERT not to be republished

विषयानुक्रमणिका

	पुरोवाक्	*iii*
	भूमिका	*vii*
	मङ्गलम्	*viii*
1.	अपठितावबोधनम्	1
2.	पत्रलेखनम्	11
	(क) अनौपचारिकम् पत्रम्	
	(ख) औपचारिकम् पत्रम्	
3.	अनुच्छेदलेखनम्	18
4.	चित्रवर्णनम्	21
5.	रचनानुवाद: (वाक्यरचनाकौशलम्)	31
6.	सन्धि:	38
7.	समासा:	48
8.	प्रत्यया:	57
9.	अव्ययानि	76
10.	समय:	81
11.	वाच्यम्	84
12.	अशुद्धिसंशोधनम्	89
13.	मिश्रिताभ्यास:	94
14.	आदर्शप्रश्नपत्रम्	101
	परिशिष्टम्	
	व्यवहार-वाक्यानि	108
	ध्येय-वाक्यानि	112
	संवादा:	113

© NCERT not to be republished

© not to be republished

1

1075CH01

अपठितावबोधनम्

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

1. धात्रीफलं सर्वेषु ऋतुषु लाभदायकं भवति। धात्रीफलम् 'आमलकम्' इत्यपि कथ्यते। शरीरस्य स्वास्थ्यरक्षणाय फलस्यास्य प्रयोगः अवश्यमेव कर्त्तव्यः। इदं फलं नेत्रयोः ज्योतिर्वर्धनाय, केशानां सौन्दर्यवृद्धये, त्वचः कान्तिवर्धनाय च बहूपयोगि भवति। सामान्यतया अस्य प्रयोगः अवलेहरूपेण, उपदंशरूपेण च भवति। इदं रक्तकोशिकानिर्माणे अपि सहायकं भवति। अस्य सेवनेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति। ग्रीष्मर्तौ फलमिदं शरीरस्य तापम् अपनयति। अस्य नियमितसेवनेन स्मरणशक्तिरपि वर्धते। प्राचीनकाले कार्तिकमासस्य नवम्यां तिथौ धात्रीवृक्षस्य अधः सहभोजस्य अपि परम्परा आसीत्। केषुचित् स्थलेषु अधुना अपि एषा परम्परा परिपाल्यते। वृक्षस्य अधः भोजनं पच्यते चेत् भोजनं सुस्वादु स्वास्थ्यवर्धकं च भवतीति अस्माकं पूर्वजानां चिन्तनमासीत्। एतदतिरिच्य सहभोजनेन प्रेम्णः भावोऽपि जागर्ति वर्धते च इत्यपि जनाः आमनन्ति। सर्वतोऽधिकं परम्परेयं धात्रीफलस्य महिमानं प्रकटीकरोति।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत—

(क) धात्रीफलं कदा लाभदायकं भवति? ....

(ख) धात्रीफलस्य अपरं नाम किम्? ....

(ग) धात्रीफलं कस्मिन् सहायकं भवति? ....

(घ) सहभोजनेन कीदृशः भावः जागर्ति? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) धात्रीफलं कथं बहूपयोगि अस्ति?

....

(ख) प्राचीनकाले कीदृशी परम्परा आसीत्?

....

© NCERT not to be republished

(iii) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत —

(क) 'सर्वेषु ऋतुषु' इत्यनयो: पदयो: किं विशेषणपदम्?

....

(ख) 'क्षीयते' इति क्रियापदस्य विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत।

....

(ग) 'स्नेहस्य' इति पदस्य कृते गद्यांशे किं पदं प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'अस्य सेवनेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति' इत्यस्मिन् वाक्ये 'अस्य'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

....

(iv) अनुच्छेदस्यास्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

....

2. महान् स्वतन्त्रतासेनानी: स्वतन्त्रभारतस्य प्रथम: उपप्रधानमन्त्री गृहमन्त्री च लौहपुरुष: सरदार-वल्लभभाईपटेलमहोदय: 1875 तमे वर्षे अक्तूबरमासस्य एकत्रिंशत-तारिकायां जन्म अलभत। प्रान्तानाम् एकीकरणे केन्द्रीयां भूमिकां निर्वहन् पटेलमहोदय: अद्यापि सर्वेषां भारतवासिनां श्रद्धाभाजनम्। पटेलमहोदयं प्रति कृतज्ञतां प्रकटयितुं गुजरातप्रान्तस्य तत्कालीन: मुख्यमन्त्री नरेन्द्रमोदिमहोदय: 2013 तमे वर्षे अक्तूबरमासस्य एकत्रिंशत्-तारिकायां तस्य मूर्ते: शिलान्यासं कृतवान्। अस्या: विशालकायाया: मूर्ते: निर्माणे पञ्चवर्षाणां काल: उपयुक्त:। तस्यैव जन्मदिवसे अक्तूबरमासस्य एकत्रिंशद्दिनाङ्क एव भारतस्य प्रधानमन्त्रिणा नरेन्द्रमोदिमहोदयेन मूर्तिरियं राष्ट्राय समर्पिता। इयं प्रतिमा एकताया: मूर्ति: (*स्टैच्यू ऑफ़ लिबर्टी*) इति नाम्ना ख्याता अस्ति। इदं स्मारकं सरदार- सरोवरबन्धत: प्रायश: त्रिकिलोमीटरमिते दूरे साधूबेरनामके उपद्वीपे स्थितमस्ति। अस्या: प्रतिमाया: उच्चता द्वयशीत्यधिकशतमीटरमिता (182मी. /597 फीट) अस्ति। इयं विश्वस्य उच्चतमा मूर्ति: अस्ति। मूर्ते: उच्चता पटेलमहोदयस्य व्यक्तित्वस्य कृतित्वस्य च उच्चताया: सूचिका वर्तते।

अभ्यास:

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) भारतस्य प्रथम: उपप्रधानमन्त्री गृहमन्त्री च क: आसीत्? ....

(ख) पटेलमहोदय: कस्मिन् केन्द्रीयां भूमिकां निर्व्यूदवान्? ....

© NCERT not to be republished

(ग) नरेन्द्रमोदिमहोदयेन मूर्तिः कस्मै समर्पिता? ....

(घ) पटेलमहोदयस्य प्रतिमा केन नाम्ना ख्याता? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) कः सर्वेषां भारतीयानां श्रद्धाभाजनम्?

....

(ख) मूर्तेः उच्चता किं सूचयति?

....

(iii) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

(क) 'केन्द्रीयां भूमिकाम्' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?

....

(ख) 'तस्यैव जन्मदिवसे.................समर्पिता'? इत्यस्मिन् वाक्ये तस्य इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

....

(ग) 'समीपे' इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

....

(घ) 'महान् स्वतन्त्रतासेनानी: जन्म अलभत' इत्यस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?

....

(iv) अनुच्छेदस्यास्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

....

3. जयदेवः वेदशास्त्रज्ञः सदाचारी वयोवृद्धः च आसीत्। तस्य पुत्रः धनेशः अस्ति। धनेशस्य सर्वाणि कार्याणि परिश्रमेण एव सिध्यन्ति। सफलता परिश्रमिणः पुरुषस्य चरणौ चुम्बति। विद्यार्थी परिश्रमेण ज्ञानं लभते, धनार्थी चापि परिश्रमेण एव धनं प्राप्नोति। शक्तेः प्राप्तये अपि परिश्रमः आवश्यकः। 'उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मीः' इति उक्तिः स्पष्टं व्यनक्ति यत् धनस्य देवी लक्ष्मीः उद्योगिनं पुरुषं प्रति गच्छति। अत एव साफल्यं लब्धुं परिश्रममः अवश्यं करणीयः। अत्यधिकः मेधावी अपि यदि सततं पठनाभ्यासं न करोति तदा असफलः भवति, परं सामान्यमेधासम्पन्नः अपि अध्ययनशीलः छात्रः सफलतायाः उच्चशिखरं प्राप्नोति— 'उद्यमेनैवहि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः' इति प्राचीनोक्तिः सदैव स्मारयति- कर्मसहचरी इच्छा एव साकाररूपताम् एति। श्रीमद्भगवद्गीता अपि कर्मणः महत्त्वं स्मारयति। अत एव छात्राः सर्वदा परिश्रमस्य अवलम्बनं कुर्वन्तु, भाग्यस्य शरणं मा गच्छन्तु।

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

अभ्यास:

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) साफल्यं लब्धुं किं करणीयम्? ....

(ख) सर्वाणि कार्याणि केन सिध्यन्ति? ....

(ग) क: असफल: भवति? ....

(घ) अध्ययनशील: छात्र: किं प्राप्नोति? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) 'उद्यमेनैव ....मनोरथै:' इति उक्ति: किं स्मारयति?

....

(ख) धनस्य देवी कं प्रति गच्छति?

....

(iii) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

(क) 'परिश्रमस्य अवलम्बनं कुर्वन्तु' इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

....

(ख) 'कुशाग्रबुद्धि:' इत्यस्य समानार्थकपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

....

(ग) 'कर्मसहचरी इच्छा' इत्यनयो: पदयो: किं विशेषणपदम्।

....

(घ) विद्यार्थी परिश्रमेण ज्ञानं लभते इत्यस्मिन् वाक्ये किं कर्तृपदम्?

....

(iv) अस्य गद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

....

4. जीवनस्य मूल्यम् अर्थात् ते मानवीयगुणा: ये मानवजीवनम् उत्कर्षं प्रापयन्ति। तेषु प्रमुखा: दया-सत्य-अहिंसा-अस्तेय-अक्रोधादय: सन्ति। मानवजीवनस्य उत्थानाय एतेषां महती आवश्यकता भवति। मनुष्य: वास्तव: मनुष्य: तदैव भवति यदा स: एतै: गुणै: सुशोभित: भवति। सर्वाङ्गीणविकासाय पुस्तकीयज्ञानेन समं नैतिकमूल्यान्यपि छात्रै: ग्रहीतव्यानि। बाल्यावस्थायां मूल्यानां शिक्षा प्रदीयते चेत् व्यक्तित्वस्य सर्वाङ्गीण: विकास: भवति। मानव: स्वकीयं पुरुषार्थं करोति जीवनलक्ष्यं च प्राप्नोति। भारतीयसंस्कृतौ आदिकालत: एव जीवनमूल्यानां प्राधान्यमस्ति। प्राचीनकालादेव भारतीयसंस्कृते: मूल्यपरकगुणानां

© NCERT not to be republished

स्तुति: भवति। एतै: गुणैरेव भारतं विश्वगुरुपदं प्राप्नोत्। सम्प्रत्यपि पुन: तत्पदं प्राप्तुं छात्रेषु बाल्यादेव एते संस्कारा: स्थापनीया:। विद्यालयेषु अध्ययनेन सह जीवनमूल्यशिक्षाया: आवश्यकता वर्तते। प्रार्थनासभायामपि एषा शिक्षा स्वीकर्तुं शक्यते।

अभ्यास:

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) मानव: स्वकीयं पुरुषार्थं कृत्वा किं प्राप्नोति ? ....

(ख) कस्य उत्थानाय दयादिगुणानां महती आवश्यकता ? ....

(ग) सर्वाङ्गीणविकासाय केन समं नैतिकमूल्यान्यपि ग्रहीतव्यानि? ....

(घ) केषु बाल्यादेव एते संस्कारा: स्थापनीया:? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) मनुष्य: वास्तव: मनुष्य: कै: गुणै: भवति?

....

(ख) प्राचीनकालादेव भारतं विश्वगुरुपदं कथं प्राप्नोत्?

....

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'सर्वाङ्गीण: विकास:' अत्र विशेषणपदं किम्?

....

(ख) 'भारतं विश्वगुरुपदं प्राप्नोत्' अत्र प्राप्नोत् इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

....

(ग) गद्यांशे 'सज्जित:' इति पदस्य कृते पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'मानवजीवनस्य उत्थानाय एतेषां महती आवश्यकता भवति' अत्र 'एतेषां' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

....

(iv) अस्य गद्यांशस्य उचितं शीर्षकं लिखत।

....

5. एकस्मिन् विद्यालये नवमकक्षाया: छात्रेषु अकिञ्चन: इतिनामा एक: छात्र: आसीत्। कक्षाया: सर्वे छात्रा: सम्पन्नपरिवारेभ्य: आसन्, परन्तु अकिञ्चनस्य पिता एकस्मिन्

© NCERT not to be republished

कार्यालये चतुर्थश्रेण्या: कर्मकर: आसीत्। इतरान् सम्पन्नान् छात्रान् दृष्ट्वा प्राय: अकिञ्चनस्य मनसि हीनभावना प्राविशत्। स: अचिन्तयत् एतेषां सहपाठिनां जीवनं धन्यम् अस्ति। धिक् मम अभावपूर्णं जीवनम्। मम सहपाठिनां जीवनं पर्वत इव उच्चम् मम च जीवनं धूलिवत् निम्नम्। यदा स: एवं चिन्तयति स्म तदैव वैभव: तम् अवदत् भो: मित्र! अहं त्वत्त: गणितं पठितुम् इच्छामि। किं त्वम् अद्य सायङ्काले मम गृहम् आगन्तुं शक्नोषि। अकिञ्चन: वैभवस्य आमन्त्रणं स्वीकृत्य सायङ्काले यदा तस्य गृहम् अगच्छत् तदा स: अपश्यत् यत् वैभवस्य गृहे मातापितरौ अनुपस्थितौ आस्ताम्। वैभव: तस्मै असूचयत् यत् रात्रौ विलम्बेन एव तौ गृहम् आगच्छत:। वैभवस्य विषादपूर्णं जीवनं दृष्ट्वा अकिञ्चन: अबोधयत् यत् तस्य गृहे मातापित्रो: अधिकसान्निध्येन तस्य एव जीवनं वरम् न तु वैभवस्य। सत्यमेवास्ति — दूरत: पर्वता: रम्या:। इति

अभ्यास:

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) अकिञ्चनस्य कक्षाया: अन्ये छात्रा: कीदृश-परिवारेभ्य: आसन्? ....

(ख) अकिञ्चनस्य मनसि किम् प्राविशत्? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) अकिञ्चनस्य पिता क: आसीत्?

....

(ख) अकिञ्चन: हीनभावनया किम् अचिन्तयत्?

....

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'सम्पन्नान्' इति पदस्य विशेष्यपदं किम् अस्ति ?

....

(ख) 'आस्ताम्' इति पदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

....

(ग) 'निकटत:' इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'वैभव: तम् अवदत्' इति वाक्यांशे 'तम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

....

(iv) गद्यांशं पठित्वा यथोचितं शीर्षकं लिखत।

....

© NCERT not to be republished

6. विधात्रा निर्मिता इयं सृष्टि: अतीव सौन्दर्यमयी। प्रकृते: शोभा वस्तुत: अतीव आह्लादकारी, परं निरन्तरं विकासशीलै: मानवै: विकासेन सह प्रदूषणमपि वर्धितं येनास्माकमेव स्वास्थ्यहानि: भवति। वायुप्रदूषणम्, ध्वनिप्रदूषणम्, जलप्रदूषणम् एतत् त्रिविधं प्रदूषणमेव मुख्यतया सर्वं वातावरणम् आकुलीकरोति। वायुप्रदूषणेन श्वासग्रहणे काठिन्यं वर्धते। एतत् सर्वेषां स्वास्थ्याय हानिकरं सिध्यति। ध्वनिप्रदूषणं मार्गेषु वाहनानां 'पों पों' इति शृङ्गवादनेन, ध्वनिविस्तारकयन्त्रैश्चापि भवति। अनेन श्रवणशक्ते: हानिर्भवति। प्रदूषितजलोपयोग: तु सर्वेषां व्याधीनां मूलभूतमेव।

तस्मादस्माकं सर्वेषामेव कर्तव्यमिदं यदत्र तत्र सर्वत्र अवकररहितस्य वातावरणस्य निर्माणं वयं कुर्याम, येन वायुप्रदूषणम् अस्माकं स्वास्थ्यं नाशयितुं क्षमं न भवेत्। तथैव ध्वनिप्रदूषणं जलप्रदूषणञ्चापि रोद्धुम् वयं सर्वे मिलित्वैव प्रयासं कृत्वा—सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: इति भावनां बलं प्रापयेम।

अभ्यास:

(i) एकपदेन उत्तरत—

(क) मुख्यतया प्रदूषणं कतिविधं भवति? ....

(ख) ध्वनिप्रदूषणेन कस्या: हानि: भवति? ....

(ग) केन निर्मिता इयं सृष्टि: अतीव सौन्दर्यमयी? ....

(घ) सर्वै: मिलित्वा प्रदूषणावरोधाय किम् विधेयम्? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) अद्यत्वे अस्माकं स्वास्थ्यहानि: कथं भवति?

....

(ख) वयं मिलित्वा कां भावनां बलं प्रापयेम?

....

(iii) यथानिर्देशमुत्तरत—

(क) सततम्/अनवरतम् इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रापयेम?

....

(ख) 'क्षीयते' इति पदस्य विपरीतार्थकं पदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

....

© NCERT not to be republished

(ग) 'सौन्दर्यमयी सृष्टि:' अत्र विशेष्यपदं किम्?

....

(घ) 'विकासेन सह प्रदूषणमपि वर्धितम् येन स्वास्थ्यहानि: भवति' अत्र 'भवति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

....

(iv) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

....

7. अद्यत्वे यत्र तत्र सर्वत्र वयं पश्याम: यत् उष्णताया: प्रभाव: दिनानुदिनं वर्धते। जनसङ्ख्यावृद्धे: कारणात् भवनानां निर्माणस्य आवश्यकता वृद्धिमाप्नोति। एतस्मात् कारणात् वृक्षा: कर्त्यन्ते, वनानि क्षेत्राणि चाऽपि विनाश्यन्ते, अनेन पर्यावरणे असन्तुलनात् वैश्विकी उष्णता वर्धते। जीवाश्मेन्धनस्य ज्वालनेन विषाक्तवायूनाम् उत्सर्जने वृद्धिर्जायते यत: सौरविकिरणं भूमे: वातावरणे निबद्धम् इव तिष्ठति, तापमानं च निरन्तरं वर्धमानम् एवास्ति। एतादृश्या: स्थिते: निराकरणाय अनियन्त्रितम् औद्योगिकीकरणं निवारणीयम्। एतदेव वस्तुत सम्पूर्णविश्वस्य कृते समस्याम् उत्पादयति। अत: सर्वै: मिलित्वैव स्थिते: संशोधनाय प्रयास: करणीय:। एतदर्थम् नेत्रयो: ऊर्जार्थम् उपायान्वेषणं करणीयं, सामान्यविद्युदपेक्षया पवनोर्जां, सौरोर्जां प्रति च ध्यानं दातव्यम्। वृक्षकर्तनमवरुध्य अधिकाधिकं वृक्षारोपणं कृत्वा वनसंरक्षणं प्रत्यपि ध्यानं दातव्यम्।

अभ्यास:

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) कस्य ज्वालनेन विषाक्तवायूनाम् उत्सर्जने वृद्धिर्जायते? ....

(ख) कीदृशम् औद्योगीकरणं निवारणीयम्? ....

(ग) कस्मिन् असन्तुलनात् वैश्विकी उष्णता वर्धते? ....

(घ) वृक्षारोपणं कृत्वा किं प्रत्यपि ध्यानं दातव्यम्? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) वैश्विकी उष्णता कथं वर्धते?

....

(ख) वैश्विकोष्णताया: स्थिते: संशोधनाय ऊर्जां प्रति कथं ध्यानं दातव्यम्?

....

© NCERT not to be republished

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'दूरीकरणाय' अस्य कृते किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

....

(ख) 'वृक्षकर्तनम्' इति पदस्य विपरीतार्थकपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

....

(ग) 'उष्णतायाः प्रभावः दिनानुदिनं वर्धते' अस्मिन् वाक्ये 'वर्धते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

....

(घ) 'अनियन्त्रितम् औद्योगिकीकरणम्' अत्र विशेषणपदं किम्?

....

(iv) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

....

8. मानवः विकासशीलः। वयं पश्यामः यत् अस्माकं देशस्य जनसङ्ख्या सुरसामुखमिव सततं प्रवर्धमाना अस्ति। अस्मात् कारणात् प्रचुरनिवास-स्थानानाम् आवश्यकता अनुभूयते। एतत्कृते सततविकासे रतः मानवः नवीनाविष्कारपरम्परायां लघुस्थाने बहुभूमिकभवनानां निर्माणं कृतवान्। एतादृशेषु भवनेषु विविधानि तलानि भवन्ति येषु अधिकाधिकपरिवारेभ्यः निवासव्यवस्था कर्तुं शक्यते। अत्र उन्नयनयन्त्रेण (लिफ़्ट इति अनेन) उपरिगमनम् अधः आगमनं च अतीव सुकरं भवति। अत एव जनाः एतादृशानि भवनानि प्रति आकृष्टाः भवन्ति। अद्यत्वे नगरेषु महानगरेषु च बहुभूमिकभवनानां प्रचलनमेव वर्तते। एतेषां भवनानां परिसरे एव देवालयः, तरणतालः, समाजसदनं, 'जिम' इति व्यायामस्थानम्, उद्यानम् इत्यादीनि उपयोगीनि सुविधाप्रदायकसाधनानि अपि भवन्ति। अतिशोभनमेतत् सर्वं परं विकासं प्रति अन्धधावनशीलः मानवः प्रकृतेः उपेक्षां करोति इति अनुचितं प्रतीयते। अस्माभिः प्रकृतिमातुः संरक्षणपूर्वकं विकासस्य दिशि प्रयतितव्यम्।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) जनसङ्ख्या कथम् वर्धते? ....

(ख) बहुभूमिक-भवनेषु उपरिगमनम् अधः आगमनं केन सुकरं भवति? ....

Rationalised 2023-24

(ग) विकासं प्रति अन्धधावनशील: मानव: कस्या: उपेक्षां करोति?

(घ) नगरेषु महानगरेषु च केषां प्रचलनं वर्तते?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) प्रचुरनिवासस्थानस्य कृते मानव: किं कृतवान्?

(ख) बहुभूमिकभवनानां परिसरे कानि सुविधासाधनानि भवन्ति?

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'मानव: बहुभूमिकभवनानां निर्माणं कृतवान्' — अत्र किं क्रियापदम्?

(ख) 'एतादृशानि भवनानि' — अनयो: पदयो: किं विशेष्यपदम्?

(ग) 'अद्यत्वे बहुभूमिकभवनानां प्रचलनं वर्तते' — अत्र किम् अव्ययपदम्?

(घ) 'उचितम्' — इति पदस्य किं विपरीतार्थकं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

(iv) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

© NCERT not to be republished

2

1075CH02

पत्रलेखनम्

(क) अनौपचारिकम् पत्रम्

1. चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचनार्थम् आरक्ष्यधिकारिणं प्रति पत्रं लिखत।

आरक्ष्यधिकारि-महोदय!

लाजपतनगर-क्षेत्रम्

नवदेहली

विषय:— चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचना।

श्रीमन्,

अनेन पत्रेण अहं भवते एतत् सूचयामि यत् ह्य: प्रात: एकादश-वादने रेलमैट्रोयानेन विश्वविद्यालयात् अहं लाजपतनगरम् अगच्छम्। मार्गे मम स्यूतं चोरितम् अभवत्। यस्मिन् द्विसहस्रं रूप्यकाणि, कार्यालयस्य परिचय-पत्रं, मैट्रोचिटिकापत्रं मम आधार-परिचयपत्रं चासन्। स्यूतस्य वर्ण: कृष्ण: आसीत्। अहं प्रार्थये यत् यथाशीघ्रं मम स्यूतम् अन्वेष्य मां कृतार्थं करोतु भवान्।

सधन्यवादम्

निवेदक:

अजय:

निवासस्थानम् – ....

दूरभाष-संख्या – ....

दिनाङ्क:–..

© NCERT not to be republished

2. **चोरितायाः घटिकायाः प्राथमिक-सूचनार्थम् आरक्ष्यधिकारिणं प्रति पत्रं लिखत।**

....
....
....
....
....

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

....
....
....
....
....

© NCERT not to be republished

(ख) औपचारिकम् पत्रम्

1. विज्ञानविषयं प्राप्तुं प्राधानाचार्यं प्रति आवेदनपत्रम्।

सेवायाम्
प्रधानाचार्यमहोदय!
मीमांसाविद्यालय:, नवदेहली
विषय:- एकादशकक्षायां विज्ञानविषयग्रहणार्थं विशेषानुमतये निवेदनम्।
महोदय,

सविनयं निवेद्यते यदहमस्मिन् विद्यालये प्रथमकक्षात: पठामि। प्रतिवर्षमहम् उत्तमान् अङ्कान् प्राप्य कक्षायां प्रथमस्थानमेव अधिगच्छामि स्म। परमस्मिन् वर्षे परीक्षामध्ये एवाहम् अकस्मात् ज्वरग्रस्त: अभवम्। विज्ञानविषयस्य तु परीक्षाऽपि मया चिकित्सालयात् एव परीक्षाकेन्द्रं प्राप्य प्रदत्ता। फलत: मया आशानुकूल: परीक्षापरिणाम: न प्राप्त:। विद्यालयनियमानुसारं विज्ञानविषय-ग्रहणाय प्रतिशतं केवलम् एकस्य एव अङ्कस्य न्यूनता अस्ति।

महोदय! शैशवादेव मम हार्दिकी इच्छा जीवविज्ञाने शोधं कृत्वा वैज्ञानिक: भवितुमासीत्। परं यदि अहं विज्ञानविषये प्रवेशमेव प्राप्तुमसमर्थ: भविष्यामि तदा कथमहं स्वकीयं स्वप्नं सार्थकारं करिष्यामि। अत: मम करबद्ध: अनुरोध: अस्ति। यन्मह्यं विज्ञानविषयं पठितुम् भवान् अनुमतिं प्रयच्छतु। एतदर्थम् अहं पुन: परीक्षणाय अपि सज्ज: अस्मि।

आशासे यत् भवान् मम स्थितिमवगत्य मम विशेषानुरोधं स्वीकरिष्यति।

कृपाकाङ्क्षी
भवदाज्ञाकारी शिष्य:

2. अध्ययनं प्रति मातरं समाश्वासयितुं पुत्र्या लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदै: पूरयित्वा पुन: लिखत—

कुशलम्, प्रतियोगिता:, कुशलिनी, परिणाम:, चिन्तिता, मतिम्, आनन्देन, करणीया, खेलप्रतियोगितासु, काल:

परीक्षाभवनत:
दिनाङ्क:..............................

पूज्यमातृचरणा:,
प्रणतीनां शतम्।

अत्र अहं ....। आशासे भवती पितृमहोदय: च ....स्त:। मात:! अहं जानामि यद् भवती मम अर्धवार्षिक-परीक्षापरिणामकारणात् ....अस्ति।

Rationalised 2023-24
© NCERT not to be republished

अत्र चिन्ता न ....। प्रथमसत्रे तु अहं .... रता आसम्। पठनाय तु .... एव न आसीत् परम् अधुना तु सर्वा: .... समाप्ता:। अद्यारभ्य अहं केवलं पठने एव .... विधास्यामि। आशासे वार्षिकपरीक्षायां मम .... भवताम् आशानुकूल: भविष्यति। शेषं सर्वं .... भवत्या: चरणयो: प्रणामा:

भवत्या: पुत्री

सुकन्या

3. जलसंरक्षणस्य महत्त्वं वर्णयन्त: मित्रं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदै: पूरयित्वा पुन: लिखत —

देशस्य, प्रयतमाना:, अपव्ययम्, विचारयति, जागरूकता, प्रयास:, जानीम:, जीवनम्, सह, अस्तु

छात्रावासत:

दिनाङ्क: ....

प्रिय मित्र!

सप्रेम नमो नम:,

अत्र कुशलं तत्र ....। भवत: पत्रं पठित्वा अतीव प्रसन्नताम् अनुभवामि यत् भवान् मित्रै: .... जलसंरक्षणप्रचारकार्ये रतोऽस्ति। एष: तु उत्तम: .... अस्ति। वयं सर्वे एव .... यत् जीवने जलस्य महत्त्वं तु अतुलनीयम्। जलम् एव .... इति वयं सर्वे जानीम: परं पुनरपि वयम् अस्य .... कुर्म:। अनेन आगामिकाले कियम् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति कोऽपि न ....। जलसंरक्षणार्थं .... अनिवार्या एव। यदि जना: अत्र ध्यानं न दास्यन्ति तदा अस्माकं .... स्थितिरपि अफ्रीकादेशवत् भविष्यति। यथा ते जलबिन्दुप्राप्त्यर्थं .... सन्ति तथा एव अस्माकं देशस्य अपि स्थिति: भविष्यति। अत: जलसंरक्षणार्थं जागरूकता अनिवार्या। शेषं सर्वं कुशलम्। पितृभ्यां चरणयो: मम्वन्दन।

भवत: मित्रम्

उमेश:

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

4. स्वस्थभोजनस्य महत्त्वं वर्णयन्त्या: अग्रजाया: अनुजं प्रति पत्रम्।

प्रिय अमित!

सप्रेम नमो नम:।

माता लिखितं पत्रं प्राप्तम्। तेन पत्रेण मया ज्ञातम् यत् भवान् सन्तुलितभोजनं न सेवते, प्रतिदिनं च 'चाऊमीन-बर्गर' इति खादति। ईदृशं भोजनं स्वास्थ्याय सम्यक् न अस्ति। कदाचित् तु अस्य सेवनं कर्तुं शक्यते परं प्रतिदिनं त्वरितभोजनस्य सेवनं स्वास्थ्याय हानिकरम्।

स्वास्थ्याय तु सन्तुलितभोजनं ग्रहीतव्यम् एव यत: 'स्वस्थशरीरे एव स्वस्थमनस: वास:' भवति अत: भवान् त्वरितभोजनस्य सेवनं मा करोतु। स्वास्थ्यवर्धकभोजनमेव खादतु। अनेन भवान् कदापि रुग्ण: न भविष्यति। भवान् स्वस्वास्थ्यविषये जागरूक: तिष्ठतु इति मे अनुरोध:।

भवत: अग्रजा

अमिता

5. सन्तुलितभोजनमेव सेवनीयम् इति वर्णयत: अग्रजस्य अनुजां प्रति पत्रम् लिखत —

परीक्षाभवनत:

दिनाङ्क:..............................

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

भवत: अग्रज:

....

© NCERT not to be republished

6. प्रतियोगिपरीक्षार्थं सन्नद्धीकरणाय आरम्भत: एव सामान्यज्ञानस्य अभ्यास: करणीय: इति उपदिशत: पितु: पुत्रं प्रति पत्रम्।

जयपुरत:

दिनाङ्क:..........................

प्रिय पुत्र अविनाश!

शुभाशिषो लसन्तु।

आशासे त्वं सकुशल: स्वाध्याये रत: असि। पुत्र! अहं जानामि परीक्षायां तव प्रस्तुति: शोभना भवति। त्वं प्रतिवर्षं कक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्नोषि इति अहं जानामि। ग्रीष्मावकाशे त्वं कथितवान् यत् तव लक्ष्यं प्रतियोगिपरीक्षामुत्तीर्य सङ्घलोकसेवा-आयोगक्षेत्रे सेवाप्रदानम् अस्ति। पुत्र! एतल्लक्ष्यं प्राप्तुं बाल्यकालादेव सामान्यज्ञानस्य अध्ययनं करणीयम्। अत एव विषयस्य अभ्यासेन समम् एकहोरापर्यन्तं सामान्यज्ञानं वर्धयितुं प्रतिदिनं सामाचारपत्रं पठ तदा यदि अधुनात: एतल्लक्ष्यं प्राप्तुं नियमितम् अध्ययनं करिष्यसि नूनमेव साफल्यं लप्स्यसे। यदि काऽपि सहायता अपेक्षिता तर्हि अहम् करिष्यामि।

तव जनक:

आशीषकुमार:

7. जीवने सफलतां लब्धुं परिश्रमस्य महत्त्वं वर्णयन्त्या: मातु: पुत्रीं प्रति पत्रम् पूरयत—

कानपुरत:

दिनाङ्क:..........................

प्रिय पुत्रि!

....

....

....

....

....

....

....

....

तव जननी

सुधा

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

8. स्वदेशस्य संस्कृतिं वर्णयन्तीं विदेशिनीं सखीं प्रति पत्रं लिखत—

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

9. 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अभियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्वविचारं प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत—

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

3

1075CH03

अनुच्छेदलेखनम्

(श्रवण-भाषण-कौशल-विकासार्थम्)

1. **जन्तुशाला**

जन्तूनां शाला जन्तुशाला इति कथ्यते। जन्तुशालायाम् अनेके पशवः पक्षिणः च भवन्ति। जनाः इमान् पक्षिणः पशून् च द्रष्टुम् दूरतः आगच्छन्ति। जन्तुशालायाः सर्वाः व्यवस्थाः प्रशासनेन क्रियन्ते। बालकाः जन्तुशालां गत्वा प्रसन्नाः भवन्ति।

2. **स्वच्छता**

स्वच्छता जीवने आवश्यकी भवति। सामान्यतया जनाः स्वगृहं स्वच्छीकुर्वन्ति, परं मार्गस्य प्रतिवेशस्य च स्वच्छतायाः विषये अवधानं न यच्छन्ति। अस्माकं प्रधानमन्त्री नरेन्द्रमोदी राष्ट्रपितुः गान्धिनः जन्मदिवसे स्वच्छताभियानस्य आरम्भं कृतवान्। अधुना बालकाः अपि स्वच्छताविषये जागरूकाः सन्ति। ते स्वगृहं विद्यालयं च यथाशक्ति स्वच्छं कर्तुं प्रयतन्ते।

3. **वृक्षो रक्षति रक्षितः**

वृक्षाः जीवनस्य आधाराः भवन्ति। वृक्षैः, नदीभिः, पर्वतैः च सुशोभिता इयं प्रकृतिः मानवानां कृते उपयोगिनी भवति। परं स्वार्थरताः मानवाः विकासं प्रति अन्धधावनशीलाः निर्ममभावेन वृक्षान् कृन्तन्ति। अस्माभिः सर्वैः तथ्यमिदं ध्यातव्यं यत् यदा वयं वृक्षाणां रक्षणं करिष्यामः तदा वृक्षाः अस्माकं रक्षां करिष्यन्ति। वृक्षाणाम् अवदानविषये श्लोकोऽयं दर्शनीयः अपि—

पत्रपुष्पफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः।
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्यैः कामान् वितन्वते॥

4. **हीमादासः**

हीमादासः असमराज्यस्य एकस्मिन् अतिनिर्धने कृषकपरिवारे जन्म अलभत। अस्याः जन्म जनवरीमासस्य नवम्यां तिथौ द्विसहस्रतमे (2000) वर्षे अभवत्। दारिद्र्यात् सुविधानाम् अभावे सा नियमितं प्रशिक्षणमपि न प्राप्नोत् तथापि सा हतोत्साहा नाभवत्। विंशतिवर्षपर्यन्तवयसां कृते या आइ.ए.ए.एफ धावनप्रतियोगिता अभवत् तस्यां सा

© NCERT not to be republished

स्वर्णपदकं प्राप्य भारतवर्षं गौरवान्वितम् अकरोत्। वस्तुत: आदर्शरूपा प्रेरणास्वरूपा च सा सर्वस्मै युववर्गाय।

5. सहिष्णुता

वयं प्रतिदिनं समाचारेषु यातायातमार्गेषु वर्धमानां हिंसाम् अधिकृत्य समाचारान् शृणुम:। अतीव दु:खदायिनी एषा स्थिति: यत: अद्यत्वे जनेषु सहिष्णुताया: अभाव: जात:। वस्तुत: सहिष्णुताया: अभावे मानवस्य दुर्गति: एव भवति। समाजस्य विघटनस्य कारणमपि धार्मिक-सहिष्णुताया: अभाव: एवास्ति। यदि अस्माकं मनसि 'वयं सर्वे सदृशा: स्म:' इति भावना भवेत् तदा प्रकृत्या एव वयं सहनशीला: भविष्याम:। क्रोधं संयम्य उचितानुचितं विचार्य एव कोऽपि निर्णय: कर्तव्य:।

6. संस्कृतशिक्षणम्

प्राचीनकाले संस्कृतं व्यवहारस्य भाषासीत् परम् अधुना एषा तथा न दृश्यते मन्यते। संस्कृतभाषा जनभाषा भवेद् एतदर्थं 'संस्कृतभारती' नामकं संस्थानं संस्कृतभाषाया: प्रचाराय प्रसाराय च प्रयतते। अत्र अनेका: परियोजना: प्रचाल्यन्ते यासु बालानां वयस्कानां च कृते संस्कृतसम्भाषण-शिक्षणस्य रुचिकरी व्यवस्था क्रियते। 'वदतु संस्कृतम्', 'संस्कृतव्यवहार-साहस्री', 'भाषाप्रवेश:', 'गीतसंस्कृतम्', शिशुसंस्कृतम् इत्यादीनि अनेकानि बालोपयोगीनि पुस्तकानि अपि अनेन संस्थानेन प्रकाशितानि। सान्द्रमुद्रिका: ध्वनिमुद्रिका: अपि इत: प्राप्तुं शक्यन्ते। एवं संस्कृतभाषाधिगमाय सर्वथा उपयुक्तमेतत् स्थानम्।

7. मम धर्म:

अहं मानव: अस्मि। मानवता मम गुण: धर्म: च। धर्मस्य दृष्ट्या अहं केवलं भारतीय: एव अस्मि। विस्तरेण यदि कथयामि तर्हि भारतीय-परम्परानुसारं धर्म: जीवनव्यवहार: भवति। एवं भ्रातृत्वं, पितृत्वं, शिक्षकत्वं, छात्रत्वं, सहयोगित्वं, मित्रत्वचेत्यादम: मे अनेके धर्मा:। एतै: सर्वै: धर्मै: उपेत: अहम् एक: भारतीय: एतदेव सत्यम्। भारतस्य उन्नत्यर्थं प्रयतिष्ये भारतीयां संस्कृतिम् च उन्नेष्यामि-एष मम सङ्कल्प:।

8. पुस्तकम्

पुस्तकानि मानवस्य सर्वोत्तममित्राणि। कुपितं मित्रम् अस्माभि: सह कपटं कर्तुं शक्नोति परं पुस्तकानि सदैव अस्माकं कल्याणाय सज्जानि भवन्ति, अत: अस्माभि: एतादृशं हितकरं मित्रं कदापि न त्याज्यम्। प्रत्यक्षम् अप्रत्यक्षं सर्वविधं ज्ञानं पुस्तकेभ्य: प्राप्तुं शक्यते। अत एव कथितमपि— 'सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव स:।' अत: पुस्तकमेलकानि अपि भवन्ति यत्र वयं विविधविषयाणां पुस्तकानि एकस्मिन्नेव स्थाने प्राप्तुं क्षमा:, अत: अस्माभि: सदैव स्वाध्यायपरै: भवितव्यम्।

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

9. स्वाध्याय:

विद्यालये पठितस्य पाठस्य यदा गृहे वयं पुन: अध्ययनं कुर्म: तद्विषये चिन्तनं कुर्म: अभ्यासं वा कुर्म: तत्कर्म 'स्वाध्याय' इति कथ्यते। अद्यत्वे छात्राणां मूलसमस्या स्वाध्यायस्य अभाव: अस्ति। विद्यालये पञ्च-षड्-होरापर्यन्तम् अध्यापकेभ्य: विविधविषयानवगत्य छात्र: गृहं प्राप्नोति तदा च अन्यशिक्षकेभ्य: व्यक्तिगतरूपेणापि पाठनस्य प्रबन्धं पितरौ कुरुत:। एवं छात्रेभ्योऽपि इदमेव प्रतीयते यद् वयं प्रात:कालात् आरभ्य सायं यावत् पठाम: एव, अत: अधुना मनोरञ्जनाय अन्यत् किमपि कर्तव्यम्। एवं स्वाध्यायस्य अभावे विषयस्तु हृदयङ्गम: एव न भवति अपि तु परीक्षा चिन्ताकारणं सिध्यति अत: आवश्यकता तु इयमस्ति यत् पठित: विषय: प्रतिदिनं स्वाध्यायेन हृदयङ्गम: करणीयय:।

10. मयूर:

मयूर: अस्माकं राष्ट्रियपक्षी अस्ति। एष: मूलत: वन्यपक्षी अस्ति। बहुरङ्ग: मयूर: अतिसुन्दर: प्रतिभाति। वर्षाकालं वसन्तर्तुं च प्राप्य एष: सुन्दरम् आकर्षकञ्च नृत्यं करोति। एतस्य नृत्यं दृष्ट्वा केकारवञ्च श्रुत्वा जना: मुदिता: भवन्ति। भारतवत् म्याँमारस्य, श्रीलङ्कायाश्चापि राष्ट्रियपक्षी मयूर: अस्ति। देवानां सेनापते: कार्तिकेयस्य वाहनम् अपि मयूर: एवास्ति। मयूरपिच्छं विना श्रीकृष्णस्य शृङ्गार: अपूर्ण: मन्यते। अस्माभि: मयूरप्रजाति: रक्षणीया।

11. आतङ्कवाद:

हिंसात्मकक्रियाभि: स्वकीय-वर्चस्त्वस्थापनाय भयोत्पादनम् अथवा भयस्य वातावरण-निर्माणम् एव आतङ्कवाद: उच्यते। एष: केनापि एकेन जनेन समूहेन वा भवितुं शक्यते। अयम् असामाजिकतत्त्वै: असंवैधानिक-क्रियाभि: स्वकीयेच्छां पूरयितुं विभिन्नस्तरेषु सञ्चाल्यमान: भवति। अनेन सामान्यजीवनं सङ्कटापन्नं भवति। आतङ्कवादेन गृहे, समाजे, देशे, विदेशेषु च असुरक्षाया: भाव: भयञ्च उत्पद्यते। जनसम्मर्दे यत्र कुत्रापि, कदापि, किमपि भवितुं शक्यते। आतङ्कवादिसङ्घटनानां मुख्यं लक्ष्यं भयोत्पादनमेव। आतङ्कवादस्य समूलनाशाय सर्वेषां राष्ट्राणां सहयोग: परमावश्यक: अस्ति।

1. अधोलिखितविषयानधिकृत्य पञ्चवाक्यात्मकमनुच्छेदं लिखत –

(i) भूकम्पविभीषिका (ii) पर्वतारोहणम् (iii) पर्यावरणसंरक्षणम् (iv) गृहकार्यं कियत् उपयोगि? (v) मम जीवनलक्ष्यम् (vi) हास्योपचार: (vii) ग्राम्यजीवनम् (viii) जलसंरक्षणस्य उपाया: (ix) विद्यालयस्य उन्नत्यै छात्राणां सहयोग: (x) क्रीडाप्रतियोगिता।

© NCERT not to be republished

4

1075CH04

चित्रवर्णनम्

यहाँ ध्यातव्य है कि प्रत्येक चित्र के साथ दी गयी मञ्जूषा में प्रदत्त पद छात्रों की सहायता के लिए हैं, किन्तु उनका प्रयोग अनिवार्य नहीं है। छात्र स्वेच्छा से भी वाक्य संरचना कर सकते हैं।

1. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

अग्रजस्य, अनुजस्य, भगिनी, स्वक्रमस्य, रक्षाबन्धनम्, रक्षासूत्रम्, करोति, करिष्यति, मणिबन्धे, मिष्टान्नम्, अन्यम्, पश्चात्, पश्यति, प्रसन्नः, मातापितरौ, दृष्ट्वा, प्रसन्नौ, पर्वणः, बन्धति

उदाहरणवाक्यानि

(i) अत्र रक्षाबन्धनपर्वणः आयोजनं भवति।

(ii) भगिनी अग्रजस्य मणिबन्धे रक्षासूत्रस्य बन्धनं करोति।

(iii) तस्याः अनुजः अपि स्वक्रमस्य प्रतीक्षां करोति।

(iv) अग्रजस्य रक्षाबन्धनं कृत्वा भगिनी अनुजस्य मणिबन्धे अपि रक्षाबन्धनं करिष्यति।

(v) मातापितरौ रक्षाबन्धनं दृष्ट्वा मोदेते।

© NCERT not to be republished

(i) ....
(ii) ....
(iii) ....
(iv) ....
(v) ....

2. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

उदग्रविमानम्, सैनिक:, भोजनपुटकानि, जलौघपीडिता:, वृद्धस्य, लम्बितसोपाने, आरोहयति, पातयन्ति, सहायताम्, छदिषु, उत्थापयन्ति

(i) ....
(ii) ....
(iii) ....
(iv) ....
(v) ....

© NCERT not to be republished

3. **अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम् —**

मञ्जूषा

पलायितौ, धृत्वा, कुर्वन्ति, देशरक्षकेभ्यः, सैनिकाः, नमः, अन्ताराष्ट्रियसीमायाः, अवैधप्रवेशम्, प्रहरिणः, भुशुण्डिं, परितः, पर्वताः, दृष्ट्वा, आतङ्कवादिनौ, देशरक्षकान्, सन्नद्धाः

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

4. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम् —

मञ्जूषा

चिकित्सका:, परिचारिका:, उपवाहनानि, क्रेनयानेन, भीषणदुर्घटनाया:, रेलयानस्य, पतितानि, दुर्घटनायां, व्रणितम्, विपत्तौ, आवश्यकता

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

5. **अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम् —**

मञ्जूषा

यातायातस्य, शिरस्त्राणस्य, दण्डशुल्कम्, प्राप्तिपत्रम्, यातायातरक्षी, सुरक्षायै, धारयित्वा, निर्बाधम्, आमन्त्रणम्, शुल्कप्राप्तिपत्रम्, भवितुं शक्नोति, मुद्रयति, मोटरसाइकिलचालकः, आत्मरक्षायै

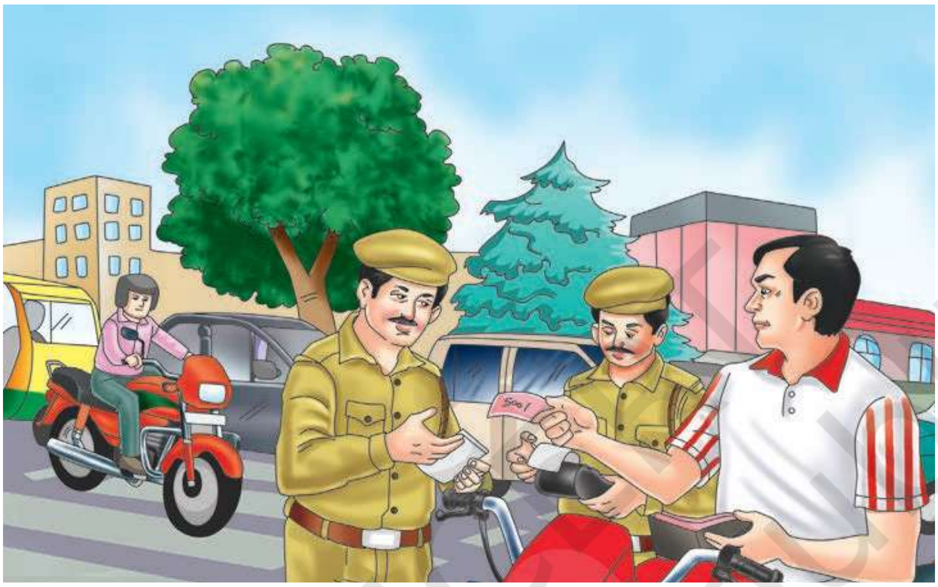

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

6. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम् —

मञ्जूषा

वृक्षेषु, मण्डूक:, तिस्र:, जलगर्तस्य, नृत्यति, इन्द्रधनुष:, दोलाभि:, टर्र-टर्र इति शब्दम्, श्रावणमासस्य, वर्षाया:, अनुभवन्ति, कुर्वन्ति

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

7. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम् —

मञ्जूषा

कारयानयोः, आक्रोशपूर्वकम्, क्रुद्धौ, दोषारोपणम्, आरक्षी, क्षतिग्रस्ते, कारयाने, क्षमाभावस्य, आवश्यकता, धैर्यस्य, दुर्घटनायाः, विचार्य

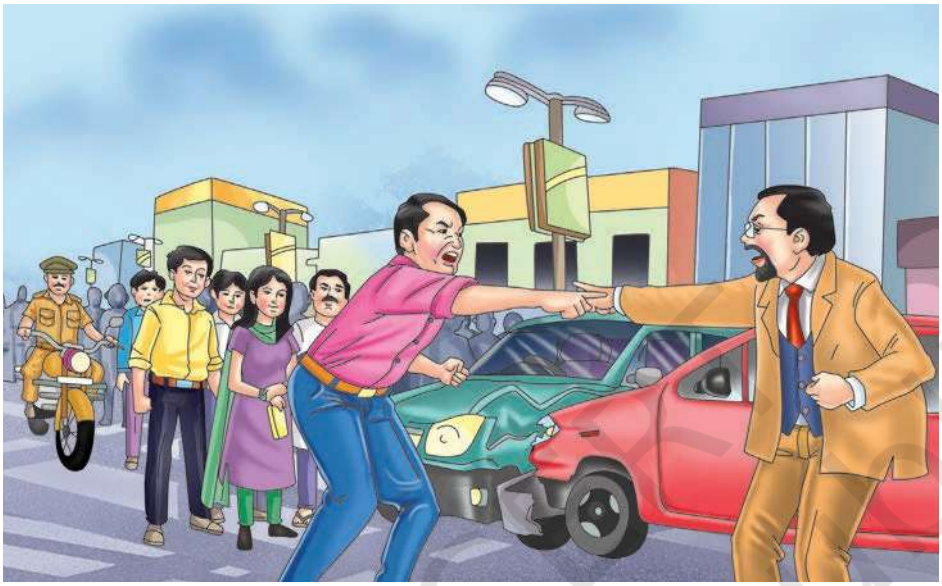

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

8. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम् —

मञ्जूषा

आपणम्, स्वास्थ्यवर्धनम्, फलविक्रेता, भक्षणम्, कदलीफलानि, द्राक्षा, मधुकर्कटिका, अमृतफलम्, नारिकेलानि, जम्बूफलानि, ग्राहकाय, तोलयति

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

9. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम् —

मञ्जूषा

धावन-प्रतियोगिता, सप्त बालिकाः, प्रशिक्षकः, सीटिकारवं कर्तुं, तत्पराः, विजेतृमञ्चम् तिस्रः, प्रथमस्थाने, तृतीयस्थानम्, स्वास्थ्यवर्धकम्

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

10. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम् —

मञ्जूषा

कृषकः, वृषभौ, स्वेदपूर्णम्, परिश्रमकारणात्, अन्नदाता, मेघानां प्रतीक्षाम्, सूर्यातपे, चालयति, कर्षतः, अन्नोत्पादने, हलम्, योगदानम्

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

© NCERT not to be republished

5

1075CH05

रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)

1. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठन्तु–

एकः राजा आसीत्। सः याचकेभ्यः धनं ददाति स्म। तेन सह राज्ञी अपि दानं यच्छति स्म। ततःपरं सा रथेन राजभवनं गच्छति। नृपस्य पुत्रः विद्वान् न आसीत्। सः पुत्रं गुरुकुलं प्रैषयत्। गुरुकुले सः आचार्यात् अध्ययनम् अकरोत्। प्रसन्नः राजा आचार्यम् अकथयत्- "भो आचार्य! अहम् कृतज्ञः अस्मि।"

अधुना वाक्याधारितानि प्रश्नोत्तराणि ध्यानेन पठन्तु—

	प्रश्नः	उत्तरम्
(i)	एकः कः आसीत्?	राजा
(ii)	सः कं गुरुकुलं प्रैषयत्?	पुत्रम्
(iii)	सा केन राजभवनं गच्छति स्म?	रथेन
(iv)	सः केभ्यः धनं ददाति स्म?	याचकेभ्यः
(v)	सः कस्मात् अध्ययनं करोति स्म?	आचार्यात्
(vi)	कस्य पुत्रः विद्वान् न आसीत्?	नृपस्य
(vii)	सः कुत्र अध्ययनं करोति स्म?	गुरुकुले
(viii)	राजा आचार्यं कथं सम्बोधयति?	भो आचार्य!

☞ अत्र वयं पश्यामः– प्रथमे वाक्ये 'राजा' इति पदं कर्ता अस्ति। यः क्रियां सम्पादयति सः कर्ता। कर्तरि च प्रथमा विभक्तिः प्रयुज्यते अतः 'राजा' इति पदे प्रथमा विभक्तिः अस्ति।

☞ द्वितीये प्रश्नोत्तरे 'पुत्रम्' कर्मकारकम् अस्ति। क्रियायाः फलं यस्मिन् पतति तत् कर्मसंज्ञकं भवति। 'कर्मणि द्वितीया' सूत्रानुसारेण 'पुत्रम्' इति पदे द्वितीया विभक्तिः प्रयुक्ता।

☞ तृतीये प्रश्नोत्तरे 'रथेन' इति पदे रथस्य साधनत्वात् करणार्थे तृतीया विभक्तिः प्रयुक्ता यतः 'साधकतमं करणम्' करणे च तृतीया विभक्तिः भवति।

☞ चतुर्थे प्रश्नोत्तरे 'याचकेभ्यः' पदे चतुर्थी विभक्तिः अस्ति। यस्मै किमपि दीयते क्रियते वा तत् सम्प्रदानम् भवति। सम्प्रदाने च चतुर्थी विभक्तिः भवति।

not to be republished © NCERT

- ☞ पञ्चमे प्रश्नोत्तरे 'आचार्यात्' इति पदे पञ्चमी-विभक्ते: प्रयोग: वर्तते। यस्माद् अधीते, गृह्यते पृथक्क्रियते वा अपादानं भवति। अपादाने पञ्चमी-विभक्ति: प्रयुज्यते।
- ☞ षष्ठे प्रश्नोत्तरे 'नृपस्य' इति पदं पुत्रेण सह सम्बन्धं ज्ञापयति। सम्बन्धे च षष्ठी विभक्ति: भवति अत: 'नृपस्य' पदे षष्ठी विभक्ति: प्रयुक्ता।
- ☞ सप्तमे प्रश्नोत्तरे 'गुरुकुलम्' अध्ययनकार्यस्य आधार: अस्ति। 'आधारोऽधिकरणम्' इत्यनेन आधारस्य अधिकरण-संज्ञा भवति अधिकरणे च सप्तमी-विभक्ति: प्रयुज्यते अत एव 'गुरुकुले' इति पदे सप्तम्या: विभक्त्या: प्रयोग: वर्तते।
- ☞ अष्टमे प्रश्नोत्तरे नृप: आचार्यं 'भो आचार्य!' इति सम्बोधयति। सम्बोधने अपि प्रथमा विभक्ति: एव प्रयुज्यते।

संक्षिप्तरूपेण इदं ध्यातव्यम्

विभक्ति:	**कारकम्**
प्रथमा	कर्ता
द्वितीया	कर्म
तृतीया	करणम्
चतुर्थी	सम्प्रदानम्
पञ्चमी	अपादान
षष्ठी	सम्बन्ध:
सप्तमी	अधिकरणम्
सम्बोधनम्	सम्बोधनम्

2. अनुवाद-प्रक्रियायां विभक्ति-प्रयोगार्थम् एतदपि स्मरणीयम्।

द्वितीया	अभित:, परित: सर्वत:, उभयत:, समया, निकषा, हा, प्रति, धिक्, उपरि, अध:, विना, अन्तरा, अन्तरेण, ✓गम्, ✓रक्ष् योगे
तृतीया	सह, समम्, साकम्, सार्धम्, सदृशम्, सम:, अलम्, विना योगे अङ्गविकारे च।
चतुर्थी	✓दा, ✓रुच्, ✓क्रुध्, ✓कुप्, ✓द्रुह्, ✓स्पृह्, ✓असूय्, ईर्ष्य्, नम:, स्वस्ति, स्वाहा योगे
पञ्चमी	✓भी, ✓त्रा, ✓त्रस्, ऋते, प्रभृति, पृथक्, आरभ्य, दूरम्, बहि:, अनन्तरम्, पूर्वम्, प्राक्-योगे, द्वयो: निर्धारणे
षष्ठी	कृते, हेतु:, समक्षम्, मध्ये, अन्त:, दूरम्, अनादरम्, अध:, उपरि, पुर:, निर्धारणे
सप्तमी	✓स्निह्, वि✓श्वस्, प्रवीण:, कुशल:, चतुर:, निर्धारणे, सति सप्तमी

© NCERT not to be republished

3. एतानि वाक्यानि पठन्तु—

पठति	एक बालक पढ़ रहा है।
विकसत:	पुष्पे
कूर्दन्ते	बन्दर वृक्ष पर कूद रहे हैं।
पतन्ति	पत्राणि

ध्यातव्यम्—

(क) उपरिप्रदत्तानि स्थूलपदानि कर्तृपदानि सन्ति।

(ख) कर्तृपदेषु प्रथमा विभक्ति: प्रयुक्ता।

(ग) क्रियापदस्य अन्विति: कर्तृपदै: सदैव भवति।

4. अधुना एतानि वाक्यानि पठत—

एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
बाल: गच्छति।	बालौ गच्छत:।	बाला: गच्छन्ति।
कन्या गच्छति।	कन्ये गच्छत:।	कन्या: गच्छन्ति।
त्वं गच्छसि।	युवाम् गच्छथ:।	यूयं गच्छथ।
अहं गच्छामि।	आवां गच्छाव:।	वयं गच्छाम:।

अत्र वयं पश्याम: यत् लिङ्गपरिवर्तनेन क्रियापदेषु किमपि परिवर्तनं न भवति परन्तु वचन-परिवर्तनेन पुरुषपरिवर्तनेन च क्रियापदानि परिवर्तितानि भवन्ति।

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

संस्कृते क्रियाया: मूलरूपं धातु: भवति। धातो: प्रयोग: दशलकारेषु भवति। तेषु प्रमुखा: पञ्चलकारा: अधोनिर्दिष्टा: सन्ति, अवशिष्टा: पञ्चलकारा: छात्रै: अन्वेषणीया: —

लट् लकार: — वर्तमानकाले
लृट् लकार: — भविष्यत्काले
लङ् लकार: — भूतकाले
लोट् लकार: — आज्ञार्थे आदेशादि-अर्थे
विधिलिङ् लकार: — विध्यर्थे सम्भावनादि-अर्थे

प्रत्येकं लकारे त्रय: पुरुषा: (प्रथम:, मध्यम:, उत्तम: च) त्रीणि च वचनानि (एकवचनम्, द्विवचनम्, बहुवचनञ्च भवन्ति।

5. अधुना वाक्यरचनाम् अवगच्छाम:—

अद्यत्वे त्वं कुत्र वससि? — आजकल तुम कहाँ रहते हो?
Where do you stay now a days?

अस्माकं विद्यालये वार्षिकोत्सव: अस्ति। — हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव है।
There is annual function in our school.

भवत: लेख: उत्तम: आसीत्। — आपका लेख उत्तम था।
Your essay was the best.

त्वं गृहकार्यं कदा करिष्यसि? — तुम अपना गृहकार्य कब करोगे?
When will you do your homework?

परिश्रमी सदैव सफल: भवति। — परिश्रमी सदैव सफल होता है।
Labourious people always succeed.

गङ्गाया: जलं पवित्रं भवति। — गंगा का जल पवित्र होता है।
The water of Ganga is pure.

विद्यया विना जीवनं व्यर्थम्। — विद्या के बिना जीवन व्यर्थ है।
Life is futile without knowledge.

भो छात्रा:! सदैव सत्यं वदत। — हे छात्रो! सदा सत्य बोलो।
Dear students! Always speak the truth.

© NCERT not to be republished

महाकविः कालिदासः सप्तग्रन्थान् अरचयत्। — महाकवि कालिदास ने सात ग्रन्थों की रचना की।

The great poet Kalidas wrote seven granthas (books).

वयं वृद्धजनानां सम्मानं कुर्याम। — हमें वृद्धजनों का सम्मान करना चाहिए।

We should respect the elderly people.

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

(i) छात्रों को ध्यान से कार्य करना चाहिए। ....

(ii) वृक्ष पर पक्षी चहचहाते हैं। ....

(iii) हम सब मिलकर गाएंगे। ....

(iv) खिलाड़ी फुटबॉल से खेल रहे हैं। ....

(v) अध्यापक ने कहा— "सदाचार का पालन करो।" ....

(vi) कृषक गाँव की ओर गए। ....

(vii) तुम दोनों खीर खाओ। ....

(viii) विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं। ....

(ix) माता बालक को दूध देती हैं। ....

(x) हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए। ....

(xi) कल राघव कहाँ था? ....

(xii) मेरे पिता भोजन पकाते हैं। ....

(xiii) मेरे पास आकर बैठो। ....

(xiv) उन सबको दीवाली उत्सव अच्छा लगता है। ....

(xv) ईश्वर को नमस्कार। ....

(xvi) घर के बाहर कौन है? ....

(xvii) भवन के ऊपर कौए बैठे हैं। ....

© NCERT not to be republished

(xviii) मैंने ऐसा नहीं कहा। ....

(xix) कक्षा में कितने छात्र हैं? ....

(xx) तुम बाज़ार से दही लाओ। ....

2. प्रत्ययाधारिता वाक्य-संरचना

गुरुं **सेवमानेन** छात्रेण या विद्या **अर्जिता** सा पूर्णजीवने तस्य सहायिका **भूतवती। जीवने** ज्ञानमेव सर्वथा **प्राप्तव्यम्** यत: ज्ञानं विना न कोऽपि **पूजनीय:**।

अत्र स्थूलाक्षरपदानि प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।

वाक्येषु प्रत्यय-प्रयोगार्थम् एते बिन्दव: ध्यातव्या:।

* शतृ-प्रत्ययस्य प्रयोग: परस्मैपदिधातुभि: सह भवति। शानच्प्रत्ययस्य प्रयोग: आत्मनेपदिधातुभि: सह भवति। आभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोग: विशेषणरूपेण भवति।
* क्त-क्तवतु-प्रत्यययो: प्रयोग: भूतकालार्थे क्रियते। क्त-प्रत्ययस्य प्रयोग: कर्मवाच्ये भाववाच्ये च भवति। क्तवतु-प्रत्ययस्य प्रयोग: कर्तृवाच्ये एव भवति।

* तव्यत्-अनीयर्-प्रत्यययो: प्रयोग: विधिलिङ्लकारस्य अर्थे भवति। एताभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोग: क्रियारूपेण विशेषणरूपेण च भवति।
  - भवन्त: एतेषां प्रत्ययानां विशिष्ट-अध्ययनम् अग्रिमेषु अध्यायेषु करिष्यन्ति।

एतानि वाक्यानि पठत —

1.	मित्र की सहायता करनी चाहिए।	मित्रस्य सहायता कर्तव्या।	*A friend should be helped.*
2.	उसने क्या कहा?	स: किम् उक्तवान्?	*What did he say?*
3.	मैंने उसे धन दिया।	मया तस्मै धनं दत्तम्।	*I gave him money.*
4.	कार्य करते हुए ही सब साध लेते हैं।	कार्यं कुर्वन्त: एव सर्वं साधयाम:।	*Everything is achieved by doing practice.*
5.	यह चलचित्र भूलने योग्य नहीं है।	इदं चलचित्रम् अविस्मरणीयम् न अस्ति।	*This movie is unforgettable.*
6.	बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णता को पाता है।	वर्धमान: चन्द्र: पूर्णतां याति।	*The rising moon attains completion.*

© NCERT not to be republished

3. **एतेषां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—**

(i) उसने पत्र लिखा। — ....

(ii) खाते हुए नहीं बोलना चाहिए। — ....

(iii) उस कन्या ने पुस्तक पढ़ी। — ....

(iv) तुम्हें भी पुस्तक पढ़नी चाहिए। — ....

(v) वह फल लेकर घर आई। — ....

(vi) तुमने ऐसा नहीं सोचा। — ....

(vii) पुस्तक पाता हुआ छात्र प्रसन्न होता है। — ....

(viii) जाते हुए बालक को देखो। — ....

(ix) शिमला नगर देखने योग्य है। — ....

(x) खाने योग्य भोजन ही खाना चाहिए। — ....

Rationalised 2023-24

6

1075CH06

सन्धिः

शिक्षकः — (कक्षां प्रविश्य) नीरजादित्योमेशौजसाः, किं भवद्भिः कार्यं कृतं न वा?

(सर्वे छात्राः विस्मयेन इतस्ततः दृष्ट्वा शिक्षकं पश्यन्ति।)

शिक्षकः — किं जातम्? नीरज! आदित्य! उमेश! औजस! युष्मान् एव पृच्छामि।

नीरजः — (आश्चर्येण) गुरुवर! भवद्भिः अस्माकं सर्वेषां नामानि कथं संयोजितानि ?

शिक्षकः — सन्धिमाध्यमेन।

उमेशः — किमेवम्? कृपया विस्तरेण बोधयतु।

शिक्षकः — बोधयामि, बोधयामि, धैर्यवन्तः भवन्तु। प्रथमं ह्यस्तनं कार्यं तु दर्शयत।

(सर्वे छात्राः शीघ्रतया कार्यं दर्शयन्ति।)

आदित्यः — महोदय! कार्यं सर्वैः कृतमस्ति। अधुना कृपया बोधयत।

शिक्षकः — नवमकक्षायां सन्धिविषये पठितम् आसीत्। किं स्मर्यते?

औजसः — आम्, आम्, स्मरामः वयम्। अस्तु-'नीरज+आदित्य' इति नीरजादित्य- अत्र दीर्घ-सन्धिः कृतः भवद्भिः।

उमेशः — आम्, आम्, स्मर्यते मयाऽपि नीरजादित्य+उमेश एवं तु दीर्घसन्धेः अनन्तरं गुणसन्धिः कृतः भवता।

आदित्यः — स्पष्टम्। पुनः वृद्धि-सन्धिः कृतः नीरजादित्योमेशौजसाः इति।

शिक्षकः — शोभनम्। अतीव शोभनम्। एवमेव प्रयोगेण पठितांशान् अवगन्तुं पारयामः।

अदितिः — गुरुवर! अत एव मम नाम्ना सह दीप्तेः नामयोजनेन 'दीप्त्यदिती' इति यण् सन्धेः नियमानुसारमेव भवता आकार्यते प्रायशः।

© NCERT not to be republished

शिक्षकः — आम्, सम्यगवगतम्। अधुना अभ्यासेन एतान् चतुरः भेदान् पुनरावर्त्य स्वरसन्धेः नवीनान् भेदान् पठिष्यामः।

अधोलिखितात् अनुच्छेदात् दीर्घ-गुण-यण् वृद्धि-सन्धीनाम् उदाहरणानि चित्वा लिखत —

जानामि+अहम् .... यत् जलोप्लवेन ....+.................... पीडितः रमा+ईशः .... वृक्षारूढः ....+.................... अभवत्। लीलया+एव .... सर्वमसहत। तदा सः साधु+उपदेशम् .... स्मृतवान् यत् कदापि धैर्यं न त्याज्यम्। स्थितेः सामान्ये जाते सः महा+औत्सुक्येन .... गृहं गतवान् अचिन्तयत् च सर्वं खल्विदम् ....+.................... ब्रह्म। तदा मोहनः सोहनः च द्वौ+अपि .... रमेशस्य गृहमागच्छतः। सर्वेऽपि ....+.................... एकत्रीभूय भोजनं पचन्ति।

(सर्वे छात्राः एकैकं कृत्वा सर्वेषाम् उदाहरणानाम् समाधानं कुर्वन्ति तदा एकः छात्रः वदति।)

आदित्यः — गुरुवर! अन्तिमौ द्वौ तु स्पष्टौ न भवतः।

शिक्षकः — अस्तु, अवबोधयामि एकैकं कृत्वा।

यथा — द्वौ+अपि – द्वावपि गृहमागच्छतः।

एवमेव

(i) द्वौ+एते – .... पठतः।

(ii) तौ+अत्र – .... लिखतः।

(iii) पो+अनः – पवनः मन्दं मन्दं वहति।

(iv) पौ+अकः – .... सर्वं दहति।

(v) भावुकः – ....+.................... न भवेत्।

(vi) ने+अनम् – नयनम् उद्घाट्य एव मार्गे चलत।

(vii) शे+अनम् – .... रात्रौ एव करणीयम्।

(viii) ....+.................... चयनम् कृत्वा एव खाद्याखाद्यं खादनीयम्।

(ix) गै+अकः – गायकः मधुरं गायति।

(x) नै+अकः – .... सुन्दरं नृत्यति।

(xi) शायिकाः – ....+.................... रेलयानेषु भवन्ति।

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

'एचोऽयवायाव:', इति नियमानुसारम् ए, ऐ, ओ, औ-इत्येतेषां स्वराणां परत: कस्मिंश्चिदपि स्वरे आगते एतेषां चतुर्णां स्थाने क्रमश: अय्, आय्, अव्, आव् च भवन्ति। एते 'अयादिचतुष्टयम्' इति नाम्नाऽपि ज्ञायन्ते।

छात्रा: – अवगत: अस्माभि: अयादिसन्धि: ।

शिक्षक: – पठिते अनुच्छेदे अन्तिमं वाक्यमासीत् - सर्वेऽपि (सर्वे+अपि) एकत्रीभूय भोजनं पचन्ति। एतत् पूर्वरूपसन्धे: उदाहरणम् अस्ति ।

एवमेव अन्यानि उदाहरणानि पश्यन्तु—-

(i) अन्येऽपि – ....+.............................. जना: भोजनं खादन्ति ।

(ii) सर्वेऽत्र – ....+.............................. उपविशन्ति ।

(iii) विष्णोऽवतु – विष्णो+अवतु माम्।

(iv) शिशोऽपि – ....+.............................. कुशली त्वम् ।

(v) साधोऽत्र – ....+.............................. भोजनं कुरु ।

'एङ: पदान्तादति', इति सूत्रानुसारं पदान्तयो: ए, ओ इत्येतयो: परत: यदि अकार: आगच्छेत् तर्हि द्वयो: स्थाने पूर्वरूपम् अर्थात् 'ए, ओ' एव भवति। अकारश्च ऽ इति अवग्रहस्य चिह्नेन दर्श्यते । एष: भेद: 'पूर्वरूपसन्धि:' इति कथ्यते ।

छात्रा: — पूर्वरूपसन्धिरपि स्पष्ट:। किं कोऽप्यन्य: भेद: भवति स्वरसन्धे: ।

शिक्षक: — आम्, प्रकृतिभाव: पररूपंच एतौ द्वौ अन्यौ भेदौ अपि स्त: । परं दशमकक्षायां केवलं षड्भेदा: । अधुना एतेषां पुनरभ्यासम् कुर्म: येन स्वरसन्धि: पूर्णतया हृदयंगम: भवेत् ।

अभ्यास:

1. अध: प्रदत्तवाक्येषु सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं वा कृत्वा लिखत —

(i) वानरा: सर्वत्र वृक्षे+अपि .... कूर्दन्ते ।

(ii) के+अत्र .... विद्यालयम् आगत्य कक्षां न आगता: ।

(iii) हे शिशोऽत्र ....+.............................. आगत्य उपविश ।

© NCERT not to be republished

(iv) ते पठन्ति, तावपि ....+............ पठतः।

(v) यथा+उचितं .... कार्यं करणीयम्।

(vi) एतत् पुस्तकं तु तवैवास्ति ....+............ +............।

(vii) साधूपरि ....+............ गच्छतः।

(viii) कवि+इन्द्रः .... नवीनां कवितां श्रावयति।

(ix) कस्मिन्नपि अत्याचारः ....+............ तु न करणीयः।

(x) भानो+ए .... जलार्पणं करणीयम्।

शिक्षकः — छात्राः! ह्यः अस्माभिः स्वरसन्धिः सम्यगवगतः। अद्य व्यञ्जनसन्धिं विसर्गसन्धिं चावबोधयामि।

छात्राः — (समवेतस्वरेण) आम् श्रीमन्! वयमपि सन्धेः अन्यान् भेदान् अवगन्तुम् इच्छामः।

(अध्यापकः श्यामपट्टसहायतया पाठयति।)

(छात्राश्च स्वपुस्तिकासु लिखन्ति।)

व्यञ्जन-सन्धिः

1. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत—

(क) चलत् + अनिशम् = चलदनिशम् एव उन्नतिं करोति।

(i) एतस्मादेव = ... +............ पाठात् त्वं पठ।

(ii) जगत् + ईशः = ... सर्वत्र विद्यमानः।

(iii) यस्य शब्दस्य अन्ते स्वरः सः शब्दः अजन्तः = ... +............ कथ्यते।

(iv) शब्दरूपं सुप् + अन्तम् = ... कथ्यते, धातुरूपं तिङन्तम्।

वर्गस्य प्रथमः वर्णः+ वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः वर्णः, स्वरः, य्, र्, ल्, व् वर्णाः ↓ प्रथमवर्णस्य स्थाने तृतीयः वर्णः (परिवर्तनम्)

© NCERT not to be republished

(ख) अस्मात् + नगरात् = अस्मान्नगरात् ग्राम: अतिदूर: ।

(i) सम्यक् + नेता = ………………… एव राष्ट्रोन्नत्यै प्रयतते ।

(ii) किन्नु = ………………… + ………………… खल्विदं लिखितम् ।

(iii) स: प्रत्यक् + आत्मा = ………………… भूत्वा परोपकारं करोति ।

(iv) दिङ्नाग: = ………………… + ………………… 'कुन्दमाला' इत्यस्य लेखक:।

(v) वर्षस्य षण्मासा: = ………………… + ………………… व्यतीता: ।

(ग) स: कदाचित् ध्यानेन शृणोति कदाचित् + च = कदाचिच्च न ।

(i) शरत् + चन्द्र: = ………………… मम मित्रस्य नाम ।

(ii) मनुष्य: ज्ञानेन सफलं कुर्याज्जीवितम् = ………………… + ………………… ।

(iii) मनस् + चञ्चलम् = ………………… हि भवति।

(iv) हरिश्शेते = ………………… + ………………… वैकुण्ठे।

स्, तवर्ग + श्, चवर्ग ↓ ↓ श्, चवर्ग (परिवर्तनम्)

(घ) धनुस् + टङ्कार: = धनुष्टङ्कार: तु युद्धस्य संकेत: ।

(i) प्रथमपंक्त्या: बालस् + षष्ठ: = ………………… पाठं पठेत् ।

(ii) रामायणं वाल्मीकिना लिखितम् , तट्टीका = ………………… + ………………… च केन लिखिता?

(iii) मह्यम् पक्षिणाम् उत् + डयनम् = ………………… अतीव रोचते ।

(iv) टीकां तु लेखकष्टीकते। = ………………… ।

स्, तवर्ग + ष्, टवर्ग ↓ ↓ ष्, टवर्ग (परिवर्तनम्)

© NCERT not to be republished

(ङ) अतिथेः सद् + कारः = सत्कारः करणीयः।

(i) परिश्रमी छात्रः एव परीक्षायां सफलतां लभ्+ स्यते = ... ।

(ii) दिक्पालः = ... +............................. कः भवति?

वर्गस्य द्वितीयः तृतीयः चतुर्थः वर्णः + वर्गस्य प्रथमः, द्वितीयः वर्णः, श्, ष्, स् ↓ स्ववर्गस्य तृतीयः वर्णः भवति। (परिवर्तनम्)

(च) अ. हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे जगद्गुरुम्।

(i) अहम् + पुनः = ... पाठं पठिष्यामि।

(ii) अपूर्वः खलु = ... + ... आसीत् नाटके नायकस्य अभिनयः।

(iii) त्वं माम् = ... + ... आकारयसि किम् ?

(iv) श्रेष्ठम् + कर्म = ... एव कर्तव्यम्।

पदान्त म् + व्यञ्जनवर्णः ↓ अनुस्वारः (·) (परिवर्तनम्)

(छ) आ. अति सम् + चयः = सञ्चयः न कर्तव्यः।

(i) शीतकाले शैत्यं कम्पनम् + च = ... अप्यनुभूयते।

(ii) शीतकाले रात्रौ सञ्चरणम्= .... + ... दुष्करम् ।

(iii) भुजनगरम् + तु = ... गुजरातराज्ये अस्ति।

(iv) त्वं किमर्थं कुम् + ठितः = ... असि?

म्/ अनुस्वारः + वर्गीय- व्यञ्जनम् ↓ परवर्ति-वर्गस्य पञ्चमः- (परिवर्तनम्)

© NCERT not to be republished

विसर्ग-सन्धि:

1. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —

(क) हे मित्र! नम: + ते = नमस्ते।

(i) शत्रो: अपि शिर: + छेद: = शिरश्छेद: न करणीय:।

(ii) कठिना परिस्थिति: दारुण: + च= .... काल:।

(iii) तुरङ्गा: + तुरङ्गै: = ... सह धावन्ति।

(iv) धनुष्टङ्कार: = ... + ... श्रूयते।

(v) स: कठिनं तपस्तेपे = ... + ... ।

विसर्ग (:) + श्, च्, छ् ↓ श् (परिवर्तनम्) विसर्ग + स्, त्, थ् ↓ स् (परिवर्तनम्) विसर्ग + ष्, ट्, ठ् ↓ ष् (परिवर्तनम्)

(ख) राम: वनमगच्छत् लक्ष्मण: + अपि = लक्ष्मणोऽपि तेन सह अगच्छत्।

(i) निर्धन: + जन: = निर्धनो जन: धनाभावे सदा दु:खित: भवति।

(ii) चौर: + अयम् = ... मम स्यूतं चोरितवान्।

(iii) एकस्मिन् वने व्याघ्र: + नष्ट: = ... अभवत्।

(iv) पण्डितो जन: = ... + ... विद्वान् भवति।

(v) स: पठति ततोऽसौ = ... + ... लिखति।

(vi) तस्य मनोरथ: = ... + ... सिध्यति।

(ग) वने वह्नि: + दह्यते = वह्निर्दह्यते पादपान्।

विसर्ग (:) + अ ↓ उ (गुण ओ) + ऽ (अवग्रह:) विसर्ग (:) + वर्गस्य तृतीय:, चतुर्थ: वर्ण:, य्, र्, ल्, व्, ह् उ (गुण ओ)

© NCERT not to be republished

(i) वसन्ते प्रकृतिः + एव = प्रकृतिरेव मनोहारिणी।

(ii) कन्या पितुः + गृहम्= .... त्यक्त्वा पतिगृहं गच्छति।

(iii) नाविकः = ... + ... नौकां चालयति।

(iv) नाटककारः कविरपि = ... + ... च काव्यं कुरुतः।

(v) अहं पदातिरेव = ... + ... विद्यालयम् आगच्छामि।

अ, आ भिन्नस्वरात् परः विसर्गः + स्वरः, वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः पञ्चमो वा वर्णः स्यात्। ↓ र् (परिवर्तनम्)

(घ) ध्यानेन न पठसि अतः + एव= अत एव उत्तमाङ्कान् न प्राप्नोषि।

(i) आकाशे = ... + ... कपोता उत्पतन्ति।

(ii) अर्जुनः + उवाच = ... अहं युद्धं न करिष्यामि।

(iii) विद्यालयं बालका आगच्छन्ति .... + ... पठन्ति च।

(iv) बसयानेन स गच्छति = ... + ... विद्यालयम्।

(v) एषः + आगच्छति = ... कार्यं करोति पठति च।

अनुनासिकसन्धिः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठत—

(क) एतन्न शोभनीयम्।

(i) तन्न उचितम्।

(ii) वाङ्मयं तपः।

(iii) तन्मयो भूत्वा कार्यं कुरु।

(iv) एतन्मुरारिः अस्ति।

(v) तन्नाम किमस्ति।

उपरि लिखितानि सर्वाणि उदाहरणानि अनुनासिकसन्धेः सन्ति।

अनुनासिकसन्धौ पूर्वपदस्य अन्तिमः वर्णः यदि वर्गस्य कोऽपि वर्णः भवति, उत्तरपदस्य प्रथमः वर्णः यदि अनुनासिकवर्णः भवति तदा पूर्वपदस्य अन्तिमवर्णः स्ववर्गस्य पञ्चमवर्णे परिवर्तितः भवति। यथा—

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

तन्नाम - तत् (त्) + नाम
वर्गस्य प्रथम: वर्ण:+वर्णस्य अन्तिम: वर्ण:

तदा त् वर्ण: स्ववर्गस्य अन्तिमे 'न्' इति वर्णे परिवर्तित: भवति।

एते सर्वे वर्णा: अनुनासिकवर्णा: सन्ति।

यथा- ङ्, ञ्, ण्, न्, म्

अभ्यास:

1. अधोलिखितानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत—

(i) हे ईश्वर! सन्मतिं यच्छ।
(ii) हे छात्रा:! सत् + मार्गे चलत।
(iii) प्रलयकाले सर्वत्र अम्मयं भवति।
(iv) जगन्नाथ: सर्वान् रक्षति।
(v) तन्मात्रम् एव खाद।
(vi) कक्षायां षट्+नवति: छात्रा: सन्ति।
(vii) सा जगत्+माता इति रूपेण प्रसिद्धा अस्ति।
(viii) मम सन्मुखे तिष्ठ।
(ix) दिक्+ नाग: सर्वान् रक्षति।

तुक् आगम-सन्धि:

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

(i) ग्रीष्मे जना: वृक्षच्छायां सेवन्ते।
(ii) हे छात्रा:! एकम् अनुच्छेदं लिखत।
(iii) पुरा भारते एकच्छत्रं राज्यम् आसीत्।
(iv) आकाश: मेघै: आच्छन्न: अस्ति।
(v) सम्बन्ध-विच्छेद: न करणीय:।

- उपरि यानि रेखाङ्कितपदानि सन्ति तानि सर्वाणि 'तुक्' आगम-सन्धे: उदाहरणानि सन्ति।
- तुक्-आगम: - सन्धौ यदि पूर्वपदे 'अ, इ, उ, ऋ स्वरा: भवन्ति उत्तरपदे च 'छ' भवति तदा उभयो: पदयो: मध्ये 'च्' वर्ण: आगच्छति।
- परं यदि पूर्वपदे आ, ई ऊ स्वरा: भवन्ति तदा 'च्' वर्णस्य आगम: विकल्पेन भवति।
- यथा- लक्ष्मी-छाया = लक्ष्मी छाया/लक्ष्मीच्छाया

© NCERT not to be republished

3. **अधोलिखितानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —**

(i) शोधच्छात्राः — ....
(ii) विच्छेदः — ....
(iii) अनु+छेदः — ....
(iv) परि+छेदः — ....
(v) लक्ष्मीच्छाया — ....
(vi) वृक्ष+छाया — ....
(vii) तव+छविः — ....
(viii) वृक्षच्छेदनम् — ....
(ix) छुरिका+ छिन्नः — ....
(x) शब्दच्छेदः — ....

© NCERT not to be republished

7

1075CH07

समासा:

श्रुति: – अहं दिनम् दिनम् विद्याया: आलयम् समयम् अनतिक्रम्य गच्छामि।

अनुकृति: – अहम् अपि प्रतिदिनं विद्यालयं यथासमयं गच्छामि।

श्रुति: – किं त्वं जानासि यद् वसुदेवस्य सुत: क: आसीत्?

अनुकृति: – जानामि। वसुदेवसुत: श्रीकृष्ण: आसीत्।

श्रुति: – मह्यं पीत: वर्ण: रोचते। स: अपि पीतम् अम्बरं धारयति स्म।

अनुकृति: – सत्यं वदसि। स: पीताम्बरं धारयति स्म अत: स: 'पीताम्बर:' इति नाम्ना अपि प्रसिद्ध:। मया पठितं यत् कृष्ण: च बलराम: च यमुनाया: तटे क्रीडत: स्म।

श्रुति: – मयापि पठितं यत् कृष्णबलरामौ यमुनातटे क्रीडत: स्म।

उपरिलिखितेषु संवादवाक्येषु श्रुति: यानि वाक्यानि वदति तेषु रेखाङ्कित-पदानि पृथक् पृथक् सन्ति परन्तु अनुकृति: यानि वाक्यानि वदति तेषु वाक्येषु तानि एव रेखाङ्कित-पदानि समस्तरूपेण (संक्षिप्तरूपेण) योजयित्वा प्रदर्शितानि सन्ति। यथा शब्दानां पृथक्-पृथक् लेखनं 'विग्रह:' कथ्यते तथैव समस्तरूपेण (संक्षिप्तरूपेण) वा लेखनं 'समास:' इति कथ्यते।

समासानां विभाजनं मुख्यत: चतुर्धा भवति —

1. अव्ययीभाव:
2. तत्पुरुष:
3. द्वन्द्व:
4. बहुव्रीहि:

(कर्मधारय: द्विगु: चेति तत्पुरुष-समासस्य एव द्वौ भेदौ स्त:।)

1. अव्ययीभाव:

(क) प्राय: जना: प्रत्यक्षम् एव सत्यं स्वीकुर्वन्ति।

(ख) तस्मिन् विद्यालये प्रतिमासं परीक्षा: भवन्ति।

(ग) छात्रा: यथामति अध्ययनं कुर्वन्ति।

(घ) हरिद्वारे उपगङ्गम् अनेके देवालया: सन्ति।

© NCERT not to be republished

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु चतस्रः विशेषताः सन्ति—

(i) सर्वेषु पदेषु प्रथम/ पूर्व-पदम् अव्ययम् उपसर्गो वा अस्ति।

(ii) सर्वाणि पदानि नपुसंकलिङ्गे सन्ति।

(iii) सर्वेषां पदानां प्रयोगः अव्ययवत् भवति।

(iv) एतेषु समस्तपदेषु पूर्वपदम् प्रधानम् अस्ति यतो हि वाक्येषु क्रियापदानि प्रथम/ पूर्व पदस्य अनुसारम् अर्थं बोधयन्ति।

इत्थं वयं जानीमः यत् अव्ययीभावसमासः पूर्वपदप्रधानः भवति। अयं समासः सर्वदा नुपसंकलिङ्गे तिष्ठति।

एवम् अव्ययीभावसमासं स्पष्टरूपेण विज्ञाय अस्य इतराणि उदाहरणानि द्रष्टव्यानि—

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	यथामति	मतिम् अनतिक्रम्य
2.	अनुगुणम्	गुणानाम् अनुरूपम्
3.	निर्बाधम्	बाधानाम् अभावः
4.	अनुरथम्	रथस्य पश्चात्
5.	निर्विघ्नम्	विघ्नानाम् अभावः
6.	प्रतिमासम्	मासं मासम् इति
7.	उपगुरु	गुरोः समीपम्
8.	अधिहरि	हरौ इति
9.	सपरिवारम्	परिवारेण सह
10.	प्रतिदिनम्	दिने दिने इति

अभ्यासः

प्रदत्त-तालिकायां समस्तपदं विग्रहं वा लिखत—

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	निर्मलम्	....
2.	....	एकम् एकम् इति
3.	....	दोषाणाम् अभावः
4.	सव्यवधानम्	....

© NCERT not to be republished

5.	निरर्थकम्	....
6.	....	चिन्ताया: अभाव:
7.	स्नेहेन सहितम्	....
8.	....	समयम् अनतिक्रम्य
9.	....	गङ्गाया: समीपम्
10.	सहर्षम्	....

2. तत्पुरुष:

(i) वानरा: **वृक्षोपरि** क्रीडन्ति। (वृक्षस्य उपरि)

(ii) **वनराज:** उच्चै: गर्जति। (वनस्य राजा)

(iii) संन्यासी **पदनिर्लिप्त:** भवति। (पदाय निर्लिप्त:)

(iv) राम: **शरणागतं** विभीषणम् अरक्षत्। (शरणम् आगतम्)

(v) चिकित्सक: **अग्निदग्धस्य** उपचारम् अकरोत्। (अग्निना दग्धस्य)

उल्लिखितेषु उदाहरणेषु वयं पश्याम: यत्—

(i) प्रथम/पूर्वपदेषु द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, षष्ठी चेति भिन्न-भिन्नविभक्तीनां प्रयोग: वर्तते।

(ii) क्रियाया: प्रयोग: द्वितीय/उत्तरपदाय भवति।

अत: यस्मिन् समासे प्रथम/ पूर्वपदेषु द्वितीया विभक्तित: सप्तमी विभक्ति-पर्यन्तं विभिन्नविभक्तीनां प्रयोग: भवति स: समास: तत्पुरुषसमास: भवति।

तत्पुरुषसमासस्य इतराणि उदाहरणानि—

क्रम	समास:	विग्रह:	उपभेद:
1.	ग्रामगत:	ग्रामं गत:	द्वितीया-तत्पुरुष:
2.	पर्वतारूढ:	पर्वतम् आरूढ:	द्वितीया-तत्पुरुष:
3.	कालिदासलिखितम्	कालिदासेन लिखितम्	तृतीया-तत्पुरुष:
4.	चक्रहत:	चक्रेण हत:	तृतीया-तत्पुरुष:
5.	यज्ञसामग्री	यज्ञाय सामग्री	चतुर्थी-तत्पुरुष:
6.	निद्राकुल:	निद्रया आकुल:	चतुर्थी-तत्पुरुष:
7.	सिंहभीत:	सिंहात् भीत:	पञ्चमी-तत्पुरुष:

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

8.	आकाशपतितम्	आकाशात् पतितम्*	पञ्चमी-तत्पुरुष:
9.	गृहपति:	गृहस्य पति:	षष्ठी-तत्पुरुष:
10.	गौरीश:	गौर्या: ईश:	षष्ठी-तत्पुरुष:
11.	सङ्गीतपटु:	सङ्गीते पटु:	सप्तमी-तत्पुरुष:
12.	चिन्तामग्न:	चिन्तायां मग्न:	सप्तमी-तत्पुरुष:
13.	असत्यम्	न सत्यम्	नञ्-तत्पुरुष:
14.	अनुपकार:	न उपकार:	नञ्-तत्पुरुष:

*आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कार: केशवं प्रति गच्छति॥

अभ्यास:

अधोलिखितेषु समासं विग्रहं वा कृत्वा लिख्यताम् —

क्रम:	समास:	विग्रह:
1.	....	न्यायस्य अधीश:
2.	देहविनाश:	....
3.	....	न मन्त्र:
4.	अयोग्य:	....
5.	वृक्षोपरि	....
6.	....	निद्राया: भङ्गस्य दु:खम्
7.	वनराज:	.... राजा
8.	....	नराणां पति:
9.	पक्षिकुलम्	....
10.	....	प्रीते: लक्षणम्
11.	निशान्धकारे	....
12.	....	न पक्वम्
13.	मृत्तिकाक्रीडनकम्	....
14.	....	वृद्धे: लाभा:
15.	अधर्म:	....

© NCERT not to be republished

कर्मधारय:

(विशेषण-विशेष्यौ)

(i) कृष्णसर्प: बिलम् प्राविशत्। (कृष्ण: च एष: सर्प:/कृष्ण: सर्प:)
(ii) महादेवी करुणां करोतु। (महती च इयं देवी/ महती देवी)
(iii) महावृक्ष: फलानि ददाति। (महान् च अयं वृक्ष:/महान् वृक्ष:)

(उपमानोपमेयौ (उपमान+उपमेयौ))

(i) सिंहपुरुष:/पुरुषसिंह: श्रीराम: रावणं हतवान्। (सिंह इव पुरुष:/पुरुष: सिंह: इव)
(ii) देव्या: कमलनेत्रे दृष्ट्वा भक्त: प्रसन्न: अभवत्। (कमले इव नेत्रे)
(iii) तस्या: चन्द्रमुखं दृष्ट्वा स: मोहित: अभवत्। (चन्द्र: इव मुखम्)

उल्लिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु विशेषणविशेष्ययो: अथवा उपमानोपमेययो: प्रयोग: अस्ति। एतेषु विशेष्यपदम् अथवा उपमेयपदम् एव प्रधानं भवति। उपमानपदस्य पश्चात् 'इव' इति अव्ययस्य प्रयोगेण उपमानोपमेय-कर्मधारयसमासस्य विग्रह: भवति। किन्तु विशेषण-विशेष्ययो: प्रथमा-विभक्त्या: प्रयोगेण समासविग्रह: भवति

अभ्यास:

1. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत—

क्रम:	समस्तपदम्	विग्रह:
1.	....	महान् वृक्ष:
2.	पुरुषव्याघ्र:	....
3.	....	महत् कम्पनम्
4.	महाविनाश:	....
5.	....	रक्तम् उत्पलम्
6.	पीतपुष्पाणि	....
7.	....	घन इव श्याम:
8.	महोत्सव:	....
9.	....	विशाल: पर्वत:
10.	महागौरी	....

द्विगु-समास:

(i) जगत्पालक: त्रिलोकं रक्षति।
(ii) नवरात्रे स: सप्तशतीं पठति।
(iii) दानस्य महत्त्वं चतुर्युगं यावद् भवति।
(iv) दण्डकारण्ये 'पञ्चवटी' इति स्थाने श्रीराम: सीतया लक्ष्मणेन च सह अवसत्।
(v) इयं शताब्दी विज्ञानस्य अस्ति।

© NCERT not to be republished

उल्लिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु चतस्रः विशेषता: सन्ति—

(क) एतानि पदानि सङ्ख्याशब्दैः प्रारभन्ते।

(ख) बहुवचनसङ्ख्याप्रयोगे अपि सर्वेषु पदेषु एकवचनस्य प्रयोग: विद्यते।

(ग) समस्तपदानि नपुंसकलिङ्गे अथवा स्त्रीलिङ्गे भवन्ति।

(घ) समस्तपदानि/समूहस्य/समाहारस्य बोधं कारयन्ति।

एतादृशा: समासा:/एतादृशानि समस्तपदानि द्विगुसमासा: कथ्यन्ते।

इत्थं वयं जानीम: यत् द्विगुसमासेषु प्रथमशब्द: सङ्ख्यावाचको भवति। एते समासा: नपुंसकलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे वा भवन्ति।

समाहार/समूहकारणात् एतेषां समासानां विग्रह: एवं भवति—

क्रम:	समस्तपदम्	विग्रह:
1.	नवरात्रम्	नवानां रात्रीणां समाहार:
2.	पञ्चवटी	पञ्चानां वटानां समाहार:
3.	चतुर्युगम्/चतुर्युगी	चतुर्णां युगानां समाहार:
4.	त्रिलोकम्/त्रिलोकी	त्रयाणां लोकानां समाहार:
5.	शताब्दम्/शताब्दी	शतस्य अब्दानां समाहार:

अधोलिखित-तालिकायाम् समस्तपदं विग्रहं वा लिखत—

क्रम:	समस्तपदानि	विग्रह:
1.	....	सप्तानाम् अह्नां समाहार:
2.	पञ्चानां पात्राणां समाहार:	....
3.	....	त्रयाणां भुवनानां समाहार:
4.	पञ्चरात्रम्	....
5.	अष्टाध्यायी	....

3. द्वन्द्व-समासः

(i) इतरेतरद्वन्द्वः

(i) दशरथस्य चत्वार: पुत्रा: रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्ना: आसन्। (राम: च लक्ष्मण: च भरत: च शत्रुघ्न: च)

(ii) रामलक्ष्मणौ मिथिलाम् अगच्छताम्। (राम: च लक्ष्मण: च)

(iii) मयूरीकुक्कुटौ संवदत:/कुक्कुटमयूर्यौ संवदत:। (मयूरी च कुक्कुट: च/कुक्कुट: च मयूरी च)

Rationalised 2023-24
© NCERT not to be republished

उल्लिखितवाक्येषु चतस्र: विशेषता: सन्ति —

(i) समासेषु शब्दानां सङ्ख्याया: अनुसारं द्विवचनं, बहुवचनं वा प्रयुक्तम्।

(ii) वाक्येषु सर्वेषां पदानां सङ्ख्याया: अनुसारं क्रियापदस्य वचनं निर्धारितम् भवति अत: सर्वाणि पदानि प्रधानानि सन्ति।

(iii) समासस्य अन्तिमपदानुसारं समासस्य लिङ्गं निर्धार्यते।

(ii) समाहार द्वन्द्व:

(i) योगिनं शीतोष्णं न बाधते। (शीतं च उष्णं च, तयो: समाहार:)

(ii) स: पुत्रपौत्रं दृष्ट्वा प्रसीदति। (पुत्र: च पौत्र: च, तयो: समाहार:)

(iii) स: दिवारात्रं प्रसन्न: तिष्ठति (दिवा च रात्रि: च, तयो: समाहार:)

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु यद्यपि द्वे एव पदे प्रधाने परन्तु तयो: समाहार/समूह-कारणात् एकवचनस्य प्रयोग: अभवत् एवम् एतेषु उदाहरणेषु अधोलिखित-विशेषता: सन्ति —

(i) समस्तपदानि नपुंसकलिङ्गे एकवचने सन्ति।

(ii) द्वयो: पदयो: एक: समाहार: भवति।

(iii) एकशेषद्वन्द्व:

पितरौ= माता च पिता च- अत्र एकस्य पितृशब्दस्य द्विवचने प्रयोगेण एकशेषद्वन्द्व: समास: कथ्यते। इतरेतरद्वन्द्व समासे 'मातापितरौ' इत्यस्य अपि प्रयोग: भवति।

अभ्यास:

अधोलिखिततालिकायां समस्तपदेभ्य: विग्रहं विग्रहेभ्य: च समस्तपदानि लिख्यन्ताम्—

क्रम:	समस्तपदानि	विग्रह:
1.	अग्निसोमौ	....
2.	पाणिपादम्	....
3.	....	सीता च राम: च
4.	इन्द्र: च वरुण: च	....
5.	....	रमा च शारदा च
6.	....	धर्म: च अर्थ: च काम: च मोक्ष: च
7.	लतापुष्पम्	....
8.	....	मूषक: च मार्जार: च
9.	अहोरात्रम्	....
10.	....	सुखं च दु:खम् च

© NCERT not to be republished

4. बहुव्रीहि:

(i) चतुर्मुख: ब्रह्मा सृष्टिरचनां करोति। (चत्वारि मुखानि यस्य स:)
(ii) चतुर्भुज: विष्णु: सृष्टे: पालनं करोति। (चतस्र: भुजा: यस्य स:)
(iii) त्रिनेत्र: शिव: जगत् संहरति। (त्रीणि नेत्राणि यस्य स:)
(iv) क्रूरकर्मा जन: आतङ्कवादी भवति। (क्रूरं कर्म यस्य स:)
(v) सिंहवाहना दुर्गा महिषासुरस्य वधम् अकरोत्। (सिंह: वाहनं यस्या: सा)

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु किमपि पदं प्रधानं नास्ति। अपि तै: पदै: सङ्केतितं किमपि अन्यद् एव पदं प्रधानम् अस्ति। एतेषु समासेषु अधोलिखिता: विशेषता: सन्ति।

(i) द्वे पदे मिलित्वा अन्यपदं सङ्केतयन्ति।
(ii) द्वे पदे यदा परस्परं विशेषणम् विशेष्यं च भवत: तदा ते प्रथमाविभक्तौ समानलिङ्गे च तिष्ठत:।
(iii) विग्रहाय अन्ते यस्य स:/यस्या: सा इत्यादीनां प्रयोग: भवति।

इत्थं वयं जानीम: यद् बहुव्रीहिसमास: अन्यपदप्रधान: भवति। यदा बहुव्रीहिसमासे द्वे पदे एकस्मिन् एव विभक्तौ भवत: तदा समानाधिकरण-बहुव्रीहि: भवति। बहुव्रीहिसमासे यदा द्वे पदे पृथक्-पृथक्- विभक्तौ भिन्न-लिङ्गे वा तदा व्यधिकरण-बहुव्रीहि: समास: भवति।

अभ्यास:

अधोलिखितसमस्तपदेभ्य: विग्रहा:, विग्रहेभ्य: च समस्तपदानि लिख्यन्ताम्—

क्रम:	समस्तपदानि	विग्रह:
1.	....	लम्बम् उदरं यस्य स:
2.	पीताम्बर:	....
3.	....	कृत: उपकार: येन स:
4.	प्रत्युत्पन्नमति:	....
5.	....	गज इव आननं यस्य स:
6.	चन्द्रमुखी	....
7.	....	चक्रं पाणौ यस्य स:
8.	चन्द्रमौलि:	....
9.	....	बहूनि कमलानि यस्मिन् तत्
10.	....	जितानि इन्द्रियाणि येन स:

Rationalised 2023-24

not to be republished © NCERT

मिश्रिताभ्यास:

अधोलिखितसमस्तपदेभ्य: विग्रहा: विग्रहेभ्य: च समस्तपदानि निर्माय तेषां नामानि अपि लिख्यन्ताम्—

क्रम:	समस्तपदम्	विग्रह:	समासनाम
1.	मेघश्याम:	....	....
2.	....	न युक्तम्	....
3.	देहविनाशाय	....	....
4.	....	नीलं च तत् कमलम्	....
5.	....	हर्षेण मिश्रितम्	....
6.	....	कर्कश: ध्वनि:	....
7.	....	पञ्चानां वटानां समाहार:	....
8.	वनराज:	....	....
9.	....	स्थिता प्रज्ञा यस्य: स:	....
10.	....	माता च पिता च	....

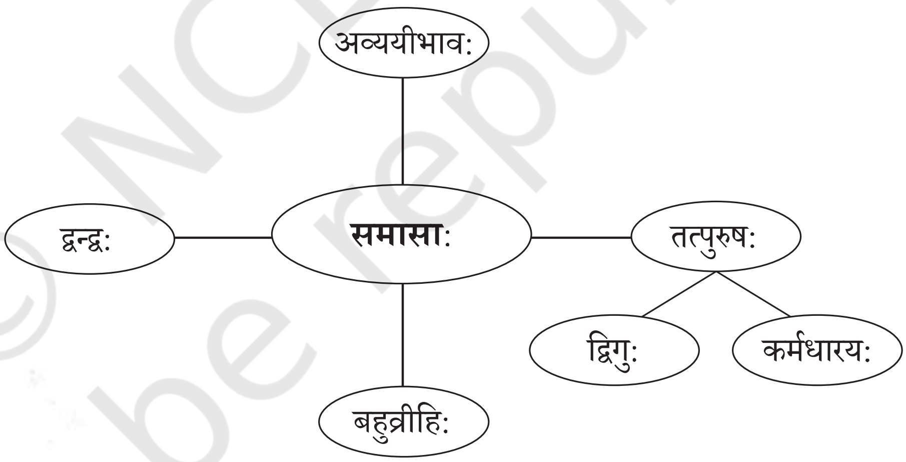

© NCERT not to be republished

1075CH08

8

प्रत्यया:

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

(i) बालक: पठितुं विद्यालयं गच्छति।

(ii) पठित्वा गुरुं प्रणम्य स: गृहमागच्छति।

(iii) तत: स: तर्तुम् तरणतालं गच्छति।

(iv) तस्य मित्रं व्यायामं कर्तुं व्यायामशालां गच्छति।

(v) तत: आगत्य तौ पाठान् स्मरत:।

उपरिलिखितानि रेखाङ्कितपदानि प्रत्यययुक्तानि सन्ति। भवन्त: नवकक्षायां एतान् प्रत्ययान् पठितवन्त:, अधुना तेषां पुनरभ्यासं कृत्वा एतानि अतिरिच्य कतिपयान् प्रत्ययान् पठिष्याम:।

(क) शब्दस्य धातो: वा अन्ते ये शब्दांशा: प्रयुज्यन्ते ते प्रत्यया: भवन्ति।
(ख) प्रत्ययानां योगेन शब्दस्य अर्थ: परिवर्तते।
(ग) प्रत्यया: त्रिविधा: भवन्ति।

प्रत्यया:

- कृदन्ता: — क्रियासु युज्यमाना: प्रत्यया:
- तद्धिता: — शब्देषु युज्यमाना: प्रत्यया:
- स्त्रीप्रत्यया: — पुल्लिङ्गशब्दानां स्त्रीलिङ्गे परिवर्तनाय प्रयुज्यमाना: प्रत्यया:

ध्यातव्यम् तथ्यम्—

(क) क्त्वा-तुमुन्-प्रत्यययुक्तानि पदानि अव्ययानि भवन्ति।
(ख) धातुना विशेषणं निर्मातुं, "कर्तुं योग्यम्" इत्यर्थे तव्यत्, अनीयर्, यत् प्रत्यया: युज्यन्ते।
(ग) धातुना (क्रियया) विशेषणं निर्मातुं शतृशानचौ प्रत्ययौ प्रयुज्येते।
(घ) भूतकालिकक्रियाणां प्रयोगाय क्त-क्तवतू प्रत्ययौ प्रयुज्येते।
(ङ) अनेन गुणेन युक्त इत्यर्थे मतुप्/वतुप्, ठक्, णिनि च प्रत्यया: प्रयुज्यन्ते।
(च) भाववाचकसंज्ञां विज्ञापयितुं त्व, तल् च प्रत्ययौ प्रयुज्येते।

© NCERT not to be republished

शतृ-प्रत्यय:

2. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठन्तु —

(i) ध्यायत: विषयान् पुंस: तेषु सङ्ग: उपजायते।

(ii) गच्छन्त: यात्रिण: जल्पन्ति।

(iii) खादन् नर: न वदति।

(iv) चिन्तयन् लव: लिखति।

(v) गायन्ती बालिका प्रशंसां प्राप्नोति।

(vi) पतत् फलं त्रुट्यति (विभक्तं भवति)

उपरिलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदानि शतृ-प्रत्यययुक्तानि सन्ति। शतृप्रत्यययुक्तानि पदानि विशेषणानि भवन्ति। एतेषां रूपम् एवं भवति —

पठ्	+ शतृ	-	पठत्
लिख्	+ शतृ	-	लिखत्
धाव्	+ शतृ	-	धावत्
गम्	+ शतृ	-	गच्छत्
भू	+ शतृ	-	भवत्
नी	+ शतृ	-	नयत्
क्रीड्	+ शतृ	-	क्रीडत्
ब्रू	+ शतृ	-	वदत्
श्रु	+ शतृ	-	शृण्वत्
कृ	+ शतृ	-	कुर्वत्
पा/पिब्	+ शतृ	-	पिबत्

एतेषां पदानां प्रयोगं पश्याम: — (पुल्लिङ्गे)

विभक्ति:	**एकवचनम्**		**द्विवचनम्**		**बहुवचनम्**	
प्रथमा	पठन्	बालक:	पठन्तौ	बालकौ	पठन्त:	बालका:
द्वितीया	पठन्तं	बालकम्	पठन्तौ	बालकौ	पठत:	बालकान्
तृतीया	पठता	बालकेन	पठद्भ्यां	बालकाभ्याम्	पठद्भि:	बालकै:
चतुर्थी	पठते	बालकाय	पठद्भ्यां	बालकाभ्याम्	पठद्भ्य:	बालकेभ्य:
पञ्चमी	पठत:	बालकात्	पठद्भ्यां	बालकाभ्याम्	पठद्भ्य:	बालकेभ्य:
षष्ठी	पठत:	बालकस्य	पठतो:	बालकयो:	पठतां	बालकानाम्
सप्तमी	पठति	बालके	पठतो:	बालकयो:	पठत्सु	बालकेषु
सम्बोधनम्	हे पठन्	बालक!	हे पठन्तौ	बालकौ!	हे पठन्त:	बालका:!

© NCERT not to be republished

(स्त्रीलिङ्गे)

विभक्ति:	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
प्रथमा	पठन्ती	बालिका	पठन्त्यौ	बालिके	पठन्त्य:	बालिका:
द्वितीया	पठन्तीं	बालिकाम्	पठन्त्यौ	बालिके	पठन्ती:	बालिका:
तृतीया	पठन्त्या	बालिकया	पठन्तीभ्यां	बालिकाभ्याम्	पठन्तीभि:	बालिकाभि:
चतुर्थी	पठन्त्यै	बालिकायै	पठन्तीभ्यां	बालिकाभ्याम्	पठन्तीभ्य:	बालिकभ्य:
पञ्चमी	पठन्त्या:	बालिकाया:	पठन्तीभ्यां	बालिकाभ्याम्	पठन्तीभ्य:	बालिकभ्य:
षष्ठी	पठन्त्या:	बालिकाया:	पठन्त्यो:	बालिकयो:	पठन्तीनाम्	बालिकानाम्
सप्तमी	पठन्त्याम्	बालिकायाम्	पठन्त्यो:	बालिकयो:	पठन्तीषु	बालिकासु
सम्बोधनम्	हे पठन्ति	बालिके!	हे पठन्त्यौ	बालिके!	हे पठन्त्य:	बालिका:!

(नपुंसकलिङ्गे)

विभक्ति:	एकवचनम्		द्विवचनम्		बहुवचनम्	
प्रथमा	पतत्	फलम्	पतती	फले	पतन्ति	फलानि
द्वितीया	पतत्	फलम्	पतती	फले	पतन्ति	फलानि
तृतीया	पतता	फलेन	पतद्भ्याम्	फलाभ्याम्	पतद्भि:	फलै:
चतुर्थी	पतते	फलाय	पतद्भ्याम्	फलाभ्याम्	पतद्भ्य:	फलेभ्य:
पञ्चमी	पतत:	फलात्	पतद्भ्याम्	फलाभ्याम्	पतद्भ्य:	फलेभ्य:
षष्ठी	पतत:	फलस्य	पततो:	फलयो:	पतताम्	फलानाम्
सप्तमी	पतति	फले	पततो:	फलयो:	पतत्सु	फलेषु
सम्बोधनम्	हे पतत्	फल!	हे पतती	फले!	हे पतन्ति	फलानि!

शानच् प्रत्यय:

3. शानच्-प्रत्यययुक्तपदानि अपि विशेषणानि भवन्ति।

परस्मैपदि-धातुभि: सह शतृप्रत्यय: प्रयुज्यते। आत्मनेपदिधातुभि: सह शानच् प्रत्यय: अपि प्रयुज्यते—

सेव्	+ शानच्	-	सेवमान:
मुद्	+ शानच्	-	मोदमान:
रुच्	+ शानच्	-	रोचमान:
वृध्	+ शानच्	-	वर्धमान:
सह्	+ शानच्	-	सहमान:
लभ्	+ शानच्	-	लभमान:

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

एतेषां प्रयोगान् अध: पश्याम:—

सेवमान: बालक:	सेवमानौ बालकौ	सेवमाना: बालका:

एतस्य रूपाणि पुँल्लिङ्गे बालकवत् भवन्ति।

सेवमाना बालिका	सेवमाने बालिके	सेवमाना: बालिका:

एतस्य रूपं स्त्रीलिङ्गे लतावत् चलति।

लभमानं धनम्	लभमाने धने	लभमानानि धनानि
सेवमानं मित्रम्	सेवमाने मित्रे	सेवमानानि धनानि

नपुंसकलिङ्गे एतस्य रूपं फलवत् भवति।

अभ्यास:

1. शतृप्रत्ययं योजयित्वा वाक्यपूर्तिं कुरूत —

(i) .... धावका: यश: प्राप्नुवन्ति। (धाव्+शतृ)

(ii) वस्त्राणि .... रजक: श्रान्त: भवति। (नी+शतृ)

(iii) जलं .... तृषार्तौ सन्तुष्टौ स्त:। (पिब्+शतृ)

(iv) कथां .... महिला शिशुं शाययति। (श्रु+णिच्+शतृ)

(v) कार्यं .... स्त्रिय: गीतं गायन्ति। (कृ+शतृ)

2. शानच्प्रत्ययं योजयित्वा वाक्यपूर्तिं कुरूत—

(i) गुरुं <u>सेव्+शानच्</u> .... छात्रा: सफलतां लभन्ते।

(ii) कष्टं <u>सह्+शानच्</u> .... जना: दु:खिन: भवन्ति।

(iii) सत्यं <u>ब्रू+शानच्</u> .... नरा: सम्मानं प्राप्नुवन्ति।

(iv) तस्य <u>वृध्+शानच्</u> .... प्रगति: पितरं हर्षयति।

(v) <u>मुद्+शानच्</u> .... बालिका नृत्यति।

3. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदस्य शुद्धमुत्तरं प्रदत्तेभ्य: विकल्पेभ्य: चित्वा लिखत—

(क) कथां श्रु+शतृ महिला: ज्ञानं लभन्ते।

शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्य:

(ख) गम्+शतृ बालिके चिन्तयत:।

गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तौ

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

(ग) वद्+शतृ बालकम् आकारय।

वदन् वदन्तौ वदन्तम्

(घ) धाव्+शतृ क्रीडकेन पथिक: आहत:।

धावन् धावन्तम् धावता

(ङ) श्रान्त: भू+शतृ अरुण: स्वपिति।

भवन् भवन्तौ भवन्त:।

तव्यत्-प्रत्यय:

अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

	विधिलिङ्लकार:	**'तव्यत्'** प्रत्यय:
(i)	अमित: पाठं स्मरेत्।	अमितेन पाठ: स्मर्तव्य:।
(ii)	रमा लेखान् लिखेत्।	रमया लेखा: लेखितव्या:।
(iii)	वयं वृक्षान् आरोपयेम।	अस्माभि: वृक्षा: आरोपयितव्या:।
(iv)	वयं प्रतिदिनं दुग्धं पिबेम।	अस्माभि: प्रतिदिनं दुग्धं पातव्यम्।
(v)	यूयं फलानि खादेत।	युष्माभि: फलानि खादितव्यानि।
(vi)	छात्रा: प्रश्नान् पृच्छेयु:।	छात्रै: प्रश्ना: प्रष्टव्या:।
(vii)	यूयं कार्यं कुर्यात्।	युष्माभि: कार्यं कर्त्तव्यम्।
(viii)	स: धर्मं पालयेत्।	तेन धर्म: पालयितव्य:।
(ix)	सर्वे कथां शृणुयु:।	सर्वै: कथा श्रोतव्या।
(x)	स: उच्चै: हसेत्।	तेन उच्चै: हसितव्यम्।

अत्र भवन्त: किं पश्यन्ति?

एतानि सर्वाणि वाक्यानि 'तव्यत्' प्रत्यययुक्तानि सन्ति।

विशेष:—

- तव्यत्-प्रत्ययस्य प्रयोग: 'विधिलिङ्लकारस्य' अर्थे भवति।
- अस्य अर्थ: भवति सम्भावना, अनुमति: इत्यादय:।
- तव्यत्-प्रत्ययस्य 'त्' वर्णस्य लोप: भवति 'तव्य' धातो: पश्चात् प्रयुज्यते। यथा- पठ्+तव्यत्=पठितव्य
- प्रत्ययस्य पश्चात् अस्य रूपाणि—

Rationalised 2023-24
© NCERT not to be republished

पुल्लिङ्गे	– बालवत्	पठितव्य:	पठितव्यौ	पठितव्या:
स्त्रीलिङ्गे	– लतावत्	पठितव्या	पठितव्ये	पठितव्या:
नपुंसकलिङ्गे	– फलवत्	पठितव्यम्	पठितव्ये	पठितव्यानि

• 'तव्यत्' प्रत्ययस्य प्रयोग: कर्मवाच्ये भवति —

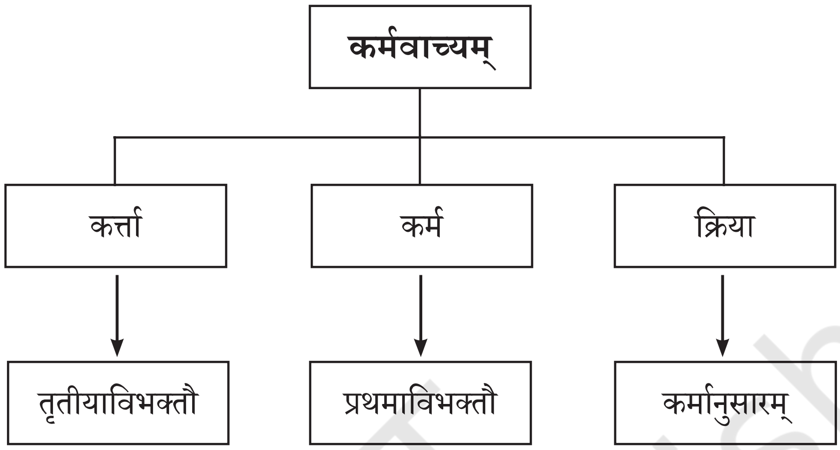

अभ्यास:

1. रिक्तस्थानानि पूरयत —

(i) रामेण पाठ: ....। (लिख्+तव्यत्)
(ii) लतया पुष्पाणि न ....। (त्रुट्+तव्यत्)
(iii) त्वया जलं वृथा न................................। (कृ+तव्यत्)
(iv) त्वया उच्चै: न................................। (वद्+तव्यत्)
(v) अस्माभि: बहि:................................। (भ्रम्+तव्यत्)
(vi) सर्वै: सत्यं................................। (वद्+तव्यत्)
(vii) युष्माभि: सन्तुलितभोजनम् एव................................। (खाद्+तव्यत्)
(viii) अमितेन अवश्यमेव तत्र................................। (गम्+तव्यत्)
(ix) नकुलेन पाठा:................................। (पठ्+तव्यत्)
(x) तै: धर्म:................................। (पाल्+तव्यत्)

2. कोष्ठकप्रदत्तशब्दै: सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत —

(i) .... एतत् कार्यं कर्त्तव्यम्। (अस्मद्)
(ii) .... खगा: रक्षणीया:। (युष्मद्)
(iii) .... पाठा: पठितव्या:। (नमित)
(iv) .... अनुशासनं पालयितव्यम्। (सर्व)

© NCERT not to be republished

(v) .... देशरक्षा कर्त्तव्या। (सैनिक)

(vi) .... मधुरं वक्तव्यम्। (जन)

(vii) .... परिश्रम: कर्त्तव्य:। (श्रमिक)

(viii) .... नियमा: पालयितव्या:। (अध्यापक)

(ix) .... मनसा पाठयितव्यम्। (शिक्षक)

(x) .... लेखौ लिखितव्यौ। (तत्)

3. कोष्ठकप्रदत्तशब्दै: सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

(i) न्यायाधीशेन .... कर्त्तव्य:। (न्याय)

(ii) त्वया .... खादितव्यम्। (पौष्टिकभोजन)

(iii) सर्वै: प्रात: .... कर्त्तव्यम्। (भ्रमण)

(iv) तेन .... पठितव्या:। (कथा)

(v) अस्माभि: .... स्मर्तव्या:। (पाठ)

(vi) युष्माभि: .... एव सेवितव्यानि। (सुचरित)

(vii) जनै: .... एव कर्त्तव्यानि। (सुकार्य)

(viii) छात्रै: .... प्रष्टव्या:। (प्रश्न)

(ix) बालै: .... न दूषयितव्यम्। (जल)

(x) युष्माभि: .... न त्रोटयितव्यानि। (पुष्प)

अनीयर्-प्रत्यय:

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

(i) बालै: वृद्धा: सदैव पूजनीया:।

(ii) छात्रै: अध्यापका: सम्माननीया:।

(iii) अस्माभि: पितरौ पूजनीयौ।

(iv) युष्माभि: गुरूणां आज्ञा पालनीया।

(v) सर्वै: जलं रक्षणीयम्।

(vi) जनै: धरा रक्षणीया।

(vii) सर्वै: वृक्षा: आरोपणीया:।

(viii) अस्माभि: पुष्पाणि न त्रोटनीयानि।

(ix) सर्वै: अनुशासनं पालनीयम्।

(x) सुमितेन सुचरितानि सेवितव्यानि।

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि 'अनीयर्' प्रत्यययुक्तानि सन्ति।

- 'अनीयर्' प्रत्ययस्य प्रयोग: योग्यार्थे भवति।
- 'अनीयर्' प्रत्ययस्य 'र्' वर्णस्य लोप: भवति, केवलम् 'अनीय' धातो: पश्चात् प्रयुज्यते।
  यथा- पठ्+अनीयर् = पठनीय।
- धातो: पश्चात् यदा 'अनीयर्' प्रत्ययस्य प्रयोग: भवति तदा अस्य रूपाणि —

पुल्लिङ्गे	—	बालवत्	=	पठनीय:	पठनीयौ	पठनीया:
स्त्रीलिङ्गे	—	लतावत्	=	पठनीया	पठनीये	पठनीया:
नपुंसकलिङ्गे	—	फलवत्	=	पठनीयम्	पठनीये	पठनीयानि

'अनीयर्' प्रत्ययस्य प्रयोग: कर्मवाच्ये भवति।

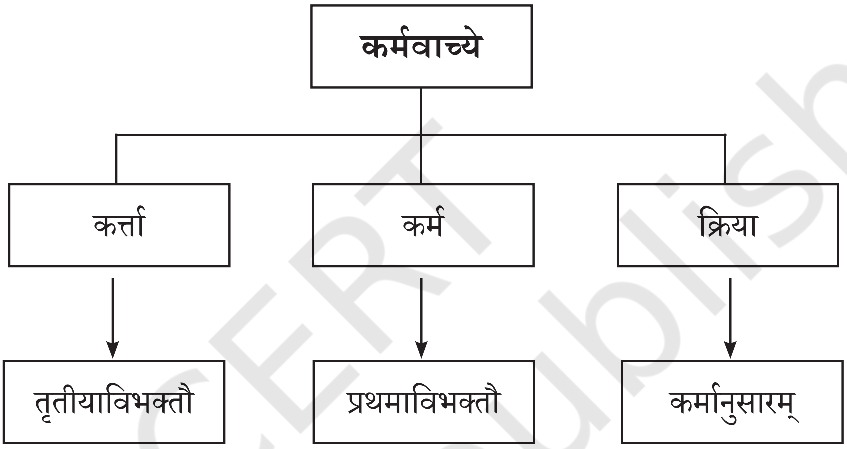

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा 'अनीयर्' प्रत्यययुक्तपदानि चित्वा समक्षं लिखत —

पदानि

(i) अस्माभि: धर्म: आचरणीय:। ....

(ii) जनै: परिश्रम: करणीय:। ....

(iii) सर्वै: पर्यावरणस्य रक्षा करणीया। ....

(iv) बालै: नियमा: पालनीया:। ....

(v) त्वया एष: पाठ: पठनीय:। ....

(vi) सर्वै: समयस्य अनुपालनं कर्त्तव्यम्। ....

(vii) त्वया कदापि वृथा न वदनीयम्। ....

(viii) अनेन एतत् न करणीयम्। ....

(ix) अस्माभि: दूषितं जलं न पानीयम्। ....

(x) युष्माभि: पर्युषितम् अन्नं न खादनीयम्। ....

© NCERT not to be republished

2. अधोलिखितेषु वाक्येषु 'अनीयर्' प्रत्यययुक्तानि पदानि इति (✓) चिह्नेन चिह्नितं कुरुत—

(i) मनसा सततं स्मरणीयम्
(ii) वचसा सततं वदनीयम्
(iii) लोकहितं मम करणीयम्
(iv) न भोगभवने रमणीयम्
(v) न सुखशयने शयनीयम्
(vi) अहर्निशं जागरणीयम्
(vii) लोकहितं मम करणीयम्
(viii) न जातु दु:खं गणनीयम्
(ix) न च निजसौख्यं मननीयम्
(x) कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्
(xi) लोकहितं मम करणीयम्
(xii) दु:खसागरे तरणीयम्
(xiii) कष्टपर्वते चरणीयम्
(xiv) विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्
(xv) लोकहितं मम करणीयम्
(xvi) सदा मया सञ्चरणीयम्
(xvii) लोकहितं मम करणीयम्

3. कोष्ठकप्रदत्तपदैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

(i) युष्माभि: प्रात: उत्थाय ....। (पठ्+अनीयर्)
(ii) जनै: सर्वदा सर्वेषां कल्याणं ....। (कृ+अनीयर्)
(iii) अस्माभि: सुकार्याणि.................................। (कृ+अनीयर्)
(iv) सर्वै: ईशवन्दना.................................। (स्मृ+अनीयर्)
(v) त्वया मधुराणि वचनानि.................................। (वद्+अनीयर्)
(vi) सैनिकै: दु:खं न.................................। (गण्+अनीयर्)
(vii) अस्माभि: धर्म:.................................। (आ+चर्+अनीयर्)
(viii) त्वया वृथा न.................................। (वच्+अनीयर्)
(ix) जनै: प्रात:.................................। (जागृ+अनीयर्)

© NCERT not to be republished

4. उदाहरणानुसारं लिखत —

	पुल्लिङ्गे			स्त्रीलिङ्गे			नपुंसकलिङ्गे		
शब्द:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
हसनीय-	हसनीय:	हसनीयौ	हसनीया:	हसनीया	हसनीये	हसनीया:	हसनीयम्	हसनीये	हसनीयानि
पठनीय-	....	....	....	....	....	....	....	....	....
पानीय-	....	....	....	....	....	....	....	....	....
ग्रहणीय-	....	....	....	....	....	....	....	....	....

तद्धित-प्रत्यया:

शिक्षक: — अधोलिखितवाक्यानि ध्यानेन पठत —

(i) बुद्धिमान् सदैव सफल: भवति।

(ii) कीर्तिमान् सर्वत्र यश: प्राप्नोति।

(iii) धनवान् निर्धनस्य साहाय्यं करोति।

(iv) शक्तिमान् जन: भारं वोढुं समर्थ: भवति।

(v) बलवान् जन: निर्बलं न उपहरेत्।

एतेषु वाक्येषु कर्तृपदेषु वयं बुद्धिकीर्तिधनशक्तिबलम् इत्यादिषु किं योजितवन्त: येन अर्थ: बुद्ध्या युक्त:, कीर्त्या युक्त:, शक्त्या युक्त:, बलयुक्त: च भवति।

छात्र: — महोदय! बुद्धिकीर्तिशक्तय: इत्यादिशब्देषु 'मान्' इति योजित: धन-बलशब्दाभ्यां वान् इति योजित:।

शिक्षक: — सुष्ठु! सम्यगभिज्ञातम्

1. मान् वान् एव मतुप्, वतुप् प्रत्यययो: प्रयोग: युक्तताया: अर्थे भवति।
2. मतुप् प्रत्ययस्य मत्, वतुप् प्रत्ययस्य च वत् शब्देषु संयोज्यते पुन: हलन्तशब्दानुसारं रूपनिर्माणं भवति।
3. अकारान्तशब्देषु वतुप् प्रत्यय: अ-भिन्नस्वरान्तशब्देषु च मतुप्-प्रत्ययस्य प्रयोग: भवति।
4. स्त्रीलिङ्गे बुद्धिमती, धनवती इत्यादिप्रकारेण नदीशब्दवत् रूपनिर्माणं भवति। अधुना अनयो: प्रयोगस्य अभ्यासं कुर्म: ।

यथा —

धनवत् (पुल्लिङ्गे)

विभक्ति:	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	धनवान्	धनवन्तौ	धनवन्त:
द्वितीया	धनवन्तम्	धनवन्तौ	धनवत:
तृतीया	धनवता	धनवद्भ्याम्	धनवद्भि:

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

चतुर्थी	धनवते	धनवद्भ्याम्	धनवद्भ्यः
पञ्चमी	धनवतः	धनवद्भ्याम्	धनवद्भ्यः
षष्ठी	धनवतः	धनवतोः	धनवताम्
सप्तमी	धनवति	धनवतोः	धनवत्सु
सम्बोधनम्	हे धनवन्!	हे धनवन्तौ!	हे धनवन्तः!

धनवती (स्त्रीलिङ्गे)

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	धनवती	धनवत्यौ	धनवत्यः
द्वितीया	धनवतीम्	धनवत्यौ	धनवतीः
तृतीया	धनवत्या	धनवतीभ्याम्	धनवतीभिः
चतुर्थी	धनवत्यै	धनवतीभ्याम्	धनवतीभ्यः
पञ्चमी	धनवत्याः	धनवतीभ्याम्	धनवतीभ्यः
षष्ठी	धनवत्याः	धनवत्योः	धनवतीनाम्
सप्तमी	धनवत्याम्	धनवत्योः	धनवतीषु
सम्बोधनम्	हे धनवति!	हे धनवत्यौ!	हे धनवत्यः!

धनवत् (नपुसंकलिङ्गे)

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	धनवत्	धनवती	धनवन्ति
द्वितीया	धनवत्	धनवती	धनवन्ति

- अन्यासु विभक्तिषु पुल्लिङ्गवद् रूपाणि भवन्ति।

इन् प्रत्यययुक्तपदानां रूपाण्यपि हलन्तशब्दवद् भवन्ति। तेभ्यः स्त्रीलिङ्गावबोधाय स्त्रीप्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा स्त्रीलिङ्गपदनिर्माणम् अपि भवति यथा—

गुणिन् (पुल्लिङ्गे)

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणीनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधनम्	हे गुणि!	हे गुणिनौ!	हे गुणिनः

© NCERT not to be republished

गुणिनी (स्त्रीलिङ्गे)

विभक्ति:	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	गुणिनी	गुणिन्यौ	गुणिन्य:
द्वितीया	गुणिनीम्	गुणिन्यौ	गुणिनी:
तृतीया	गुणिन्या	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्य:
चतुर्थी	गुणिन्यै	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्य:
पञ्चमी	गुणिन्या:	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्य:
षष्ठी	गुणिन्या:	गुणिन्यो:	गुणिनीनाम्
सप्तमी	गुणिन्याम्	गुणिन्यो:	गुणिनीषु
सम्बोधनम्	हे गुणिनि!	हे गुणिन्यौ!	हे गुणिन्य:!

अभ्यास:

1. **अधोलिखितवाक्येषु समुचितपदेन रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत—**

(i) (बल + इन्) .... जना: निर्बलेषु बलप्रयोगं न कुर्यु:।

(ii) रथिनम् (................+................) जनम् वार्तायां मग्नं न कुर्यात्।

(iii) शिल्पिन्य:(................+................) बालिका: कुत्र गता:?

(iv) दण्डिनि (................+................) जने न विश्वसिहि।

(v) (कर+इन्) .... वने वसति।

(vi) धनिन:(................+................) गर्विता: न भवेयु:।

(vii) सीता अवदत् - अहम् ....(कुशल+इन्) अस्मि।

(viii) बलिनौ (................+................) अपमानं न सहेते।

(ix) (................+................) गुणिना जनेन एतत् कार्यं सुष्ठु कृतम्।

(x) दण्डिन:(................+................) दण्डं धारयन्ति।

2. **प्रदत्तशब्देषु मतुप् अथवा वतुप् प्रत्ययस्य यथापेक्षितं रूपं संयोज्य/वियोज्य लिखत—**

(i) बुद्धिमती (................+................) नारी प्रशस्यते।

(ii) एतौ छात्रौ (शक्ति+मतुप्) .... स्त:।

(iii) ता: कन्या: गुणवत्य: (................+................) सन्ति।

(iv) लक्ष्मीवान् (................+................) लक्ष्म्या: आदरं कुर्यात्।

(v) ....(धन+वतुप्) जना: दरिद्राणां सहायतां कुर्वन्तु।

© NCERT not to be republished

(vi) सत्यवत्यै (..........+..........) नार्यै पुस्तकं यच्छ।

(vii) (सत्य+वतुप्).................... जनै: सदा सत्यभाषणं क्रियते।

(viii) बलवता (..........+..........) जनेन निर्बलेषु बलं न प्रयोक्तव्यम्।

(ix) (शक्ति+मतुप्).................... नार्या इदं कार्यं कृतम्

(x) गुणवद्भि: (..........+..........) छात्रै: ध्यानेन पठ्यते।

इन् (णिनि) प्रत्यय:

अकारान्तशब्दै: सह 'युक्त' इत्यर्थे णिनि (इन्) प्रत्ययस्य प्रयोग: अपि भवति यथा—

गुण + णिनि (इन्)–गुणिन् – गुणै: युक्त:

दण्ड + इन् –दण्डिन् – दण्डेन युक्त:

शिल्प + इन् –शिल्पिन् – शिल्पकलया युक्त:

कर + इन् –करिन् (गज:) –करेण (शुण्डेन) युक्त:

बल + इन् –बलिन् – बलेन युक्त:

एतेषां प्रयोग: अपि वाक्येषु शब्दरूपनिर्माणाय क्रियते।

त्व-तल्-प्रत्ययौ

शिक्षक: — एतं श्लोकं पठत—

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

अत्र 'विद्वत्त्वम्, नृपत्वम्' इति पदयो: कस्य प्रत्ययस्य प्रयोग:?

छात्रा: — गुरुवर! न जानीम: वयम्। कृपया बोधयतु।

शिक्षक: — अत्र भाववाचकस्य 'त्व' इति प्रत्ययस्य प्रयोग:।

[विद्वस्+त्व=विद्वत्त्वम्
नृप+त्व=नृपत्वम्]

'त्व' प्रत्ययस्य प्रयोग: इत्येवं क्रियते

अस्य प्रत्ययस्य प्रयोगेण शब्द: नपुंसकलिङ्गे भवति। अत: शब्दरूपं 'फलम्' इति शब्दवत् निर्मीयते।

उमेश: — यथा दीर्घत्वम्।

शिक्षक: — आम् शोभनम्। एवमेव अन्यशब्दानपि निर्माय वदन्तु।

महेश: — लघुत्वम्, महत्त्वम्

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

शिक्षक: — अतिशोभनम्। अधुना एतां पङ्क्तिं पठत-
का जडता? पाठतोऽप्यनभ्यास:।
अर्थात् यदि पठितस्य अभ्यास: न क्रियते तर्हि जडता आयाति। अत्र भाववाच्ये एव तल् प्रत्यय: प्रयुक्त:।

रहीम: — किं त्व, तल् च द्वावेव भाववाचकौ प्रत्ययौ?

शिक्षक: — आम् सम्यगवगतम्।

रमेश: — तर्हि किमन्तरं द्वयो: मध्ये?

शिक्षक: — अन्तरं केवलं लिङ्गप्रयोगस्य एव।

छात्रा: — कथमिव?

शिक्षक: — तल् प्रत्ययस्य प्रयोगेण शब्द: स्त्रीलिङ्ग: भवति। यथा जडता, दीर्घता, लघुता, महत्ता इत्यादिप्रकारेण तल् प्रत्यययुतस्य शब्दस्य रूपाणि 'बालिका' शब्दवत् भवन्ति।
इदानीमस्या: तालिकाया: माध्यमेन अवगच्छाम:-

लघु	—	लघुता	लघुत्वम्
महत्	—	....	....
दीर्घ	—	....	....
गुरु	—	....	....
पवित्र	—	....	....

छात्रा: — तालिकां पूरयन्ति।

शिक्षक: — अधुना वाक्येषु एतयो: अभ्यासं कुर्म: ।

अध: प्रदत्तवाक्येषु त्व/तल्-प्रत्ययस्य संयोजनं/वियोजनं वा कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत—

(i) कृष्णसुदाम्नो: मित्रता (..............................+..............................) विश्वप्रसिद्धा।

(ii) विद्वत्वम् (..............................+..............................) च नृपत्वम् (.............................. +..............................) च नैव तुल्यम्।

(iii) कार्येषु दीर्घसूत्रता (..............................+..............................) कदापि न कर्तव्या।

(iv) आकारस्य (लघु+त्व) .... कार्यबाधक: न भवेत्।

(v) पशव: स्वपशुत्वम् (..............................+..............................) तु दर्शयन्ति एव।

(vi) वेदानां (महत्+त्व) .... को न जानाति।

(vii) गङ्गायाः पवित्रता (.......................+.........................) जगत्प्रसिद्धा।

(viii) मूर्खः स्वमूर्खतां (..........................+..........................) सभायां न प्रदर्शयेत्।

(ix) नदीनां (दीर्घ+तल्) .... चिन्तनात् परः विषयः।

(x) मित्रेण सह मित्रत्वम् (.......................+..........................) कदापि न त्याज्यम्।

ठक्- प्रत्ययः

अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- स एकः श्रेष्ठः नागरिकः अस्ति।
- एतद् आध्यात्मिकं कार्यम् अस्ति।
- एषः धार्मिकः ग्रन्थोऽस्ति।
- अद्य विद्यालये सांस्कृतिकः कार्यक्रमोऽस्ति।
- देशस्य सेवा अस्माकं नैतिकं कर्त्तव्यम् अस्ति।
- एतत् अस्माकं दैनिकं कार्यम् अस्ति।
- अद्य अस्माकं वार्षिकी परीक्षा अस्ति।
- एषः कार्मिकः परिश्रमी अस्ति।
- एषा मासिकी पत्रिका अस्ति।
- दिल्लीप्रदेशे अनेकानि ऐतिहासिकानि स्थानानि सन्ति।

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि सर्वाणि 'ठक्' प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।

- 'ठक्' प्रत्ययः भावार्थे प्रयुज्यते।
- 'ठक्' प्रत्ययः 'इक' रूपेण परिवर्तितः भवति।
- 'ठक्' प्रत्यये आदिस्वरे वृद्धिः भवति।

यथा — धर्म+ठक्=धार्मिक

- 'ठक्' प्रत्ययस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु भवन्ति।

यथा —

पुल्लिङ्गे –	बालकवत् –	नैतिकः	नैतिकौ	नैतिकाः
स्त्रीलिङ्गे –	नदीवत् –	नैतिकी	नैतिक्यौ	नैतिक्यः
नपुंसकलिङ्गे –	फलवत् –	नैतिकम्	नैतिके	नैतिकानि

'ठक्' प्रत्ययस्य प्रयोगः विशेषणरुपेण भवति।

© NCERT not to be republished

अभ्यास:

1. **अधोलिखितेषु कोष्ठकप्रदत्तशब्दै: सह 'ठक्' प्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत—**

   (i) .... (धर्म+ठक्) जना: धर्मम् एव आचरन्ति।

   (ii) अद्य .... (वर्ष+ठक्) परीक्षापरिणाम: प्राप्स्यते।

   (iii) अद्य वयं .... (इतिहास+ठक्) स्थलानि द्रष्टुं गच्छाम:।

   (iv) .... (प्रथम+ठक्) शिक्षा बाल्यत: एव भवति।

   (v) .... (सेना+ठक्) देशं रक्षन्ति।

   (vi) अधुना .... (अध्यात्म+ठक्) शिक्षा अनिवार्या।

   (vii) .... (नगर+ठक्) एव देशम् उन्नयन्ति।

   (viii) एता: .... (विज्ञान+ठक्) चिन्तायां मग्ना: सन्ति।

2. **'ठक्' प्रत्यययुक्तपदानि चित्वा लिखत—**

   (i) भौतिकी उन्नतिरपि अनिवार्या।

   (ii) अधुना वार्षिकं कार्यं सम्पन्नम्।

   (iii) सैनिका: देशम् उन्नयन्ति।

   (iv) दैविकी विपदा कष्टकरी भवति।

   (v) एष: सार्वभौमिक: सिद्धान्तोऽस्ति।

   (vi) सार्वकालिका: उपदेशा: एते।

   (vii) सामाजिकं कार्यम् एव एतत्।

   (viii) वैज्ञानिका: अन्वेषणे रता: भवन्ति।

   (ix) भारतस्य भौगोलिकी स्थिति: सुन्दरा अस्ति।

   (x) एषा कवे: मौलिकी कृति:।

स्त्री-प्रत्यया:

अधोलिखितवाक्यानि ध्यानेन पठन्तु —

- इयं एका छात्रा अस्ति।
- विद्योत्तमा विदुषी आसीत्।
- अध्यापिका छात्रान् पाठयति।
- अजा तृणं चरति।
- आचार्या स्नेहेन पाठयति।

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

- गायिका गीतं गायति।
- सुता गृहस्य भूषणं भवति।
- नदी मलिना न कर्त्तव्या।
- नायिका अभिनयं करोति।

उपरि लिखितानि रेखाङ्कितपदानि स्त्रीलिङ्गे सन्ति। पुल्लिङ्गपदानां स्त्रीलिङ्गे परिवर्तनाय स्त्रीप्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते। अत्र वयं टाप् प्रत्ययौ पठिष्यामः। टाप् प्रत्यये (आ) शिष्यते, ङीप् च प्रत्ययः (ई/आनी) शिष्यते।

नद + ङीप् - नदी
गोप + ङीप् - गोपी
महिष + ङीप् - महिषी
ब्राह्मण + ङीप् - ब्राह्मणी
वदन् + ङीप् - वदन्ती
श्रीमन् + ङीप् - श्रीमती
दातृ + ङीप् - दात्री
गुणिन् + ङीप् - गुणिनी
तपस्विन् + ङीप् - तपस्विनी

सर्वेषां रूपाणि नदीवत् भवन्ति यथा– गोपी गोप्यौ गोप्यः।

छात्र + टाप् - छात्रा
गायक + टाप् - गायिका
धावक + टाप् - धाविका
शिक्षक + टाप् - शिक्षिका
साधक + टाप् - साधिका
प्रथम + टाप् - प्रथमा
द्वितीय + टाप् - द्वितीया
सरल + टाप् - सरला
अज + टाप् - अजा
मूषक + टाप् - मूषिका
सुत + टाप् - सुता
बालक + टाप् - बालिका

सर्वेषां रूपाणि लतावत् भवन्ति यथा– गायिका गायिके गायिकाः

© NCERT not to be republished
Rationalised 2023-24

अभ्यास:

1. शुद्धं विकल्पं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत—

(i) इयं .... पठति। (छात्र:/छात्रा)

(ii) बालिकासु .... अध्ययनशीला अस्ति। (प्रथम:/ प्रथमा)

(iii) शोभनानां भोजनानां .... भव। (दातृ/ दात्री)

(iv) एषा .... हवनं करोति। (तपस्वी/ तपस्विनी)

(v) गङ्गा एका .... अस्ति। (नद/ नदी)

2. कोष्ठकप्रदत्तपदानां समुचितं प्रयोगं कुर्वत्य:/ कुर्वत्य: रिक्तस्थानानि पूरयत—

मञ्जूषा

श्रीमती, प्राध्यापिका, नदी, तपस्विन्या, नदीम्, प्रथमा, मातुलानी, बालिका:, गच्छन्ती, मेधाविनी, छात्रा:

(i) इयम् एका ....अस्ति

(ii) ....परित: वृक्षा: सन्ति।

(iii) ....सह तस्य पुत्र: अपि प्रवचनं करोति।

(iv) एता: ....सन्ति।

(v) ता: सर्वा: ....सन्ति।

(vi) ....वाचाला अस्ति।

(vii) ग्रामं ....श्रमिका श्रान्ता अस्ति।

(viii) एषा बालिका .... अस्ति।

(ix) मम .... विदेशं गच्छति।

(x) ....रमा एका.. अस्ति।

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

3. अधोलिखिते अनुच्छेदे रेखाङ्कितपदानि स्त्रीलिङ्गे परिवर्त्य अनुच्छेदं पुन: लिखत—

एक: बालक: ग्रामे वसति। स: विद्यालयं गच्छति। तेन सह तस्य भ्राता अपि गच्छति। तस्य शिक्षक: तं प्रेम्णा पाठयति। विद्यालये अनेके छात्रा: सन्ति। तेषु एक: अत्यधिक: मेधावी अस्ति।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

9

1075CH09

अव्ययानि

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

- दुर्वहम् अत्र जीवितम्।
- प्रकृति: एव शरणम्।
- स: सदा सत्यं वदति।
- यानानां पङ्क्तयो हि अनन्ता:।
- वायुयानं भृशं दूषितम्।
- जलं निर्मलं न अस्ति।
- एतत् खलु राजासनम् अस्ति।
- अलम् अतिशालीनतया।
- ननु भगवान् वाल्मीकि: अयम्।

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि सर्वाणि अव्ययपदानि सन्ति। अव्ययपदानि लिङ्गवचनविभक्तिषु न परिवर्तन्ते। तद्यथा —

(क) i. बाल: अपि धावति। ii. बालिका अपि धावति।

अत्र लिङ्गकारणात् अपि परिवर्तनं न भवति।

(ख) i. यदा स: आगच्छति तदा ते गच्छन्ति। ii. यदा ते आगच्छन्ति तदा वयं गच्छाम:।

अत्र वचनकारणात् अपि 'यदा-तदा' अव्यययो: परिवर्तनं न भवति।

(ग) i. बाल: उच्चै: वदति। ii. पिता बालम् उच्चै: वदति।

अत्र विभक्तिकारणाद् अपि 'उच्चै:' इति अव्ययपदे परिवर्तनं न भवति।

अत:—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

- अव्ययानि न परिवर्तन्ते।
- अव्ययानि त्रिषु लिङ्गेषु सदृशानि भवन्ति।
- अव्ययानि त्रिषु वचनेषु सदृशानि भवन्ति।
- अव्ययानि सर्वासु विभक्तिषु सदृशानि भवन्ति।

© NCERT not to be republished

अव्ययपदानि

कालवाचकानि	स्थानवाचकानि	युग्मानि	समानार्थकानि	विकीर्णानि
पुरा- प्राचीनकाल में	यत्र- जहाँ	यावत्-तावत् = जब तब	ननु, नूनम्, खलु - निश्चय	अपि-भी
सद्यः- तुरन्त	तत्र- वहाँ	यत्र-तत्र= जहाँ वहाँ	सम्प्रति, अधुना, इदानीम्, साम्प्रतम् - अब	वृथा-बेकार
सपदि- तुरन्त	उपरि- ऊपर	शनैः-शनैः= धीरे-धीरे	सदा	अथ किम्- हाँ और क्या
अचिरात्- अभी	कुत्र- कहाँ	यदा = जब	सर्वदा	च- और
अचिरेण- अभी	अत्र- यहाँ	तदा = तब	इत्थम्- इस प्रकार से	अपरम्- और भी
सततम्- निरन्तर	सर्वत्र- सब जगह	कदा = कब	एवम्- इस प्रकार	सत्वरम्- शीघ्र
अभितः- दोनो ओर	नीचैः- नीचे	यदि तर्हि= यदि तो		अन्यथा- दूसरे प्रकार से
परितः- चारो ओर		मुहुर्मुहुः= बार-बार		सर्वथा- सब प्रकार से
उभयतः- दोनो ओर		यथा-तथा= जैसा वैसा		एव- ही
सर्वतः- सब ओर		यथापि तथापि= जैसे भी वैसे भी		प्रति- ओर
कदाचित्- कभी, किसी समय				अलम्- बस, समर्थ
अचिरम्- अभी				च- और
एकदा- एक बार				न- नहीं
सकृत्- एक बार				मा- मत
सहसा- अचानक				अतः- इसलिए
सदा- हमेशा				इति- इस प्रकार
इतस्ततः- इधर-उधर				उच्चैः- ज़ोर से
कुतः- कहाँ से				पुनः- फिर
नक्तम्- रात				तूष्णीम्- चुपचाप
दिवा- दिन				तु- तो
अद्य- आज				परम्- परन्तु
ह्यः- बीता हुआ कल				कथम्-कैसे
श्वः- आने वाला कल				अनृतम्- झूठ
वृथा- व्यर्थ				ततः- तत्पश्चात्
समीपे- पास में				परस्परम्-आपस में
दूरे - दूर				इव- के समान

© NCERT not to be republished

अभ्यास:

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा अव्ययपदानि चित्वा लिखत—

		अव्ययपदानि
(i)	एकदा तस्य भार्या पितुर्गृहं प्रति चलिता।	– ....
(ii)	भवान् कुत: भयात् पलायित:।	– ....
(iii)	तत्र गम्यताम्।	– ....
(iv)	त्वं सत्वरं चल।	– ....
(v)	तेन सदृशं न अस्ति।	– ....
(vi)	गीता सुगीता च वदत:।	– ....
(vii)	यदा स: पठति तदा एव शोभते।	– ....
(viii)	तापसौ लवकुशौ तत: प्रविशत:।	– ....
(ix)	अलम् अतिदाक्षिण्येन।	– ....
(x)	अहम् अपि श्रावयामि।	– ....

2. उचिताव्ययपदै: रिक्तस्थानानि पूरयत—

मञ्जूषा

सर्वत्र, एव, इति, ननु, एवम्, तत्र, उच्चै:, तथापि, बहुधा, मा

(i) मम गुरु: .... भगवान् वाल्मीकि:।

(ii) क: .... भणति?

(iii) कुपिता सा .... वदति।

(iv) त्वं .... गच्छ।

(v) यूयं चापलं .... कुरुत।

(vi) कृषीवल: बहुवारं प्रयत्नमकरोत् .... वृष: नोत्थित:।

(vii) कृषक: बलीवर्दं .... पीडयति।

(viii) बहूनि अपत्यानि मे सन्ति .... सत्यम्।

(ix) सर्वेषु अपत्येषु जननी तुल्यवत्सला .... ।

(x) .... जलोपप्लव: सञ्जात:।

© NCERT not to be republished

3. **विपर्ययाव्ययपदैः सह योजयत—**

यत्र	यथा ....
यथैव	यदा ....
यदैव	यावत् ....
अत्र..................	यदि ....

4. **उचितार्थैः सह मेलनं कुरुत—**

(i)	पुरा	नहीं/मत
(ii)	उच्चैः	हमेशा
(iii)	नूनम्	परंतु
(iv)	इत्थम्	ही
(v)	सर्वथा	इस प्रकार
(vi)	एवम्	सब प्रकार से
(vii)	एव	इस प्रकार से
(viii)	परम्	निश्चय
(ix)	सदा	ज़ोर से
(x)	मा	प्राचीनकाल में

© NCERT not to be republished

5. उचिताव्ययपदैः सह रिक्तस्थानानि पूरयत—

मञ्जूषा

यथा-तथा, यदि-तर्हि, यथैव-तथैव, यावत्-तावत्, यत्र-तत्र।

(i) .... लवः .... कुशः।

(ii) .... अहं कृष्णवर्णः ....त्वं किं गौराङ्गः!

(iii) .... गुरुः वदति .... शिष्यः करोति।

(iv) .... वृक्षाः .... खगाः।

(v) .... लता आगच्छति .... त्वं तिष्ठ।

6. उदाहरणानुसारं लिखत—

(i) श्वः सोमवासरः....................

(ii) ....

(iii) ....

(iv) ....

(v) ....

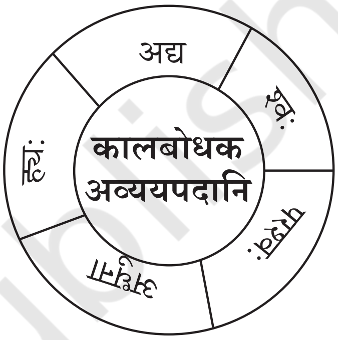

7. पर्यायाव्ययपदानि लिखत—

ननु

....

सम्प्रति

....

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

10

1075CH10

समयः

छात्राः एतानि उदाहरणानि पश्यन्तु—

- अधुना दशवादनं संवृत्तम्।
- सार्धदशवादने अहं बहिः गच्छामि
- इदानीं रात्रेः नववादनम्।
- पादोनदशवादने शय्यां गच्छामि।
- माता— पुत्र! षड्वादनं जातम्!
- पुत्र— आम् मातः। उत्तिष्ठामि। मया तु सार्धसप्तवादने विद्यालयं प्रति गन्तव्यम् अस्ति।
- सम्प्रति अष्टवादनं जातम्।
- एकादशवादने मित्रम् आगच्छति।

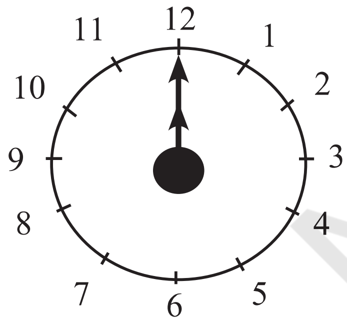

द्वादशवादनम्

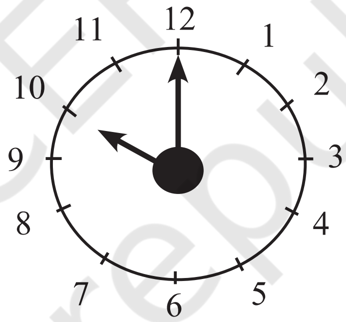

दशवादनम्

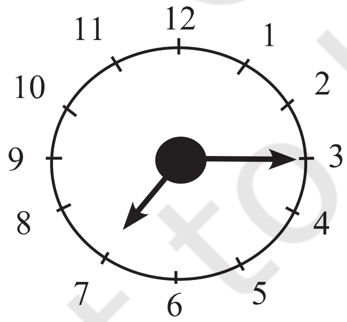

सपादसप्तवादनम्

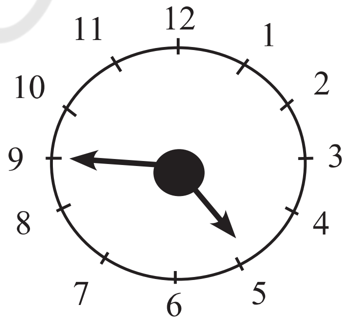

पादोनपञ्चवादनम्

© NCERT not to be republished

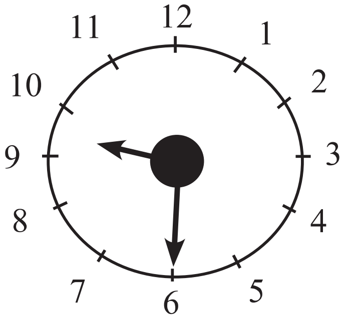

सार्धनववादनम्

अभ्यास:

1. अधोलिखितवाक्येषु उदाहरणानुसारं समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–
उदाहरणम् —

द्वितलीयरेलवाहनं .... (10:15) वादने जयपुरं प्राप्नोति।
द्वितलीयरेलवाहनं सपाददशवादने जयपुरं प्राप्नोति।

(i) पुरुषोत्तम-एक्सप्रेस इति रेलयानं .... (9:30) वादने पुरीत: प्रस्थानं करोति।

(ii) चेतक-एक्सप्रेस इति रेलयानं .... (4:45) वादने दिल्लीम् आगच्छति।

(iii) हावड़ा-एक्सप्रेस .... (11:00) वादने हावड़ास्थानकं प्राप्नोति।

(iv) रेलयानमेकं .... (8:15) उत्तराञ्चलं प्रति गच्छति।

2. अधोलिखितवाक्येषु उदाहरणानुसारं समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–
उदाहरणम् —

माता प्रात: ....(5:00) वादने उत्तिष्ठति।
माता प्रात: पञ्चवादने उत्तिष्ठति।

(i) राहुल: प्रातर्भ्रमणाय .... (6:15) वादने उद्यानं गच्छति।

(ii) मल्लिका .... (7:30) वादने प्रातराशं करोति।

(iii) अनन्या .... (5:45) वादने क्रीडति।

(iv) सर्वे .... (10:00) वादने शयनं कुर्वन्ति।।

© NCERT not to be republished

3. **अधोलिखितवाक्येषु समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत—**
उदाहरणम्—

प्रातः .... (7:00) वादनतः .... (7:45) वादनपर्यन्तं विद्यालये प्रार्थनासभा भवति।

प्रातः सप्तवादनतः पादोनाष्टवादनपर्यन्तं विद्यालये प्रार्थनासभा भवति।

(i) .... (8:15) वादनतः .... (9:00) वादनपर्यन्तं विज्ञानविषयस्य कालांशः भवति।

(ii) वयं .... (9:00) वादनतः .... (9:45) वादनपर्यन्तं गणितविषयं पठामः।

(iii) .... (2:45) वादनतः .... (3:30) वादनपर्यन्तं हिन्दीभाषाकालांशः भवति।।

(iv) संस्कृतशिक्षकः .... (10:15) वादने अध्यापयति।

4. **अधोलिखितवाक्येषु समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत—**
उदाहरणम्—

छात्रः ....(5:00) वादने उत्तिष्ठति ....(6:15) वादने व्यायामं करोति।

छात्रः पञ्चवादने उत्तिष्ठति सपादषड्वादने व्यायामं करोति।

(i) छात्रः .... (7:30) वादने प्रातराशं कृत्वा ....(9:45) वादने विद्यालयं गच्छति।

(ii) .... (4:00) वादने गृहमागत्य .... (4:30) वादनपर्यन्तं विश्रामं करोति।

(iii) .... (5:00) वादने भोजनं कृत्वा .... (9:30) वादनपर्यन्तम् अध्ययनं करोति।

(iv) रात्रौ .... (9:45) वादनतः .... (5:00) वादनपर्यन्तं शयनं करोति।

© NCERT not to be republished

11

1075CH11

वाच्यम्

बालका:! एतानि उदाहरणानि ध्यानेन पठन्तु—

(क)		**(ख)**
बालक: पाठं पठति।	—	बालकेन पाठ: पठ्यते।
छात्र: लेखं लिखति।	—	छात्रेण लेख: लिख्यते।
कृषक: कार्यं करोति।	—	कृषकेण कार्यं क्रियते।
शिक्षक: पाठयति।	—	शिक्षकेण पाठ्यते।
श्रमिक: पाषाणं त्रोटयति।	—	श्रमिकेण पाषाण: त्रोट्यते।
बालिका नृत्यति।	—	बालिकया नृत्यते।
धावक: धावति।	—	धावकेन धाव्यते।
क्रीडक: क्रीडति।	—	क्रीडकेन क्रीड्यते।
अहं गृहं गच्छामि।	—	मया गृहं गम्यते।
आवां भ्रमाव:।	—	आवाभ्यां भ्रम्यते।
वयं कार्यं कुर्म:।	—	अस्माभि: कार्यं क्रियते।
त्वं किं करोषि?	—	त्वया किं क्रियते?
युवां कुत्र गच्छथ:?	—	युवाभ्यां कुत्र गम्यते?
यूयं कन्दुकं क्रीडथ।	—	युष्माभि: कन्दुकं क्रीड्यते।
माता भोजनं पचति।	—	मात्रा भोजनं पच्यते।
पिता आपणं गच्छति।	—	पित्रा आपणं गम्यते।
मम मित्रं चलचित्रं पश्यति।	—	मम मित्रेण चलचित्रं दृश्यते।
अविवेकी वृक्षान् कृन्तति।	—	अविवेकिना वृक्षा: कर्त्यन्ते।
लता कथां शृणोति।	—	लतया कथा श्रूयते।
तृषार्त: जलं पिबति।	—	तृषार्तेन जलं पीयते।
बुभुक्षित: भोजनं करोति।	—	बुभुक्षितेन भोजनं क्रियते।
बालिका गीतं गायति।	—	बालिकया गीतं गीयते।
शिशु: रोदिति।	—	शिशुना रुद्यते।

© NCERT not to be republished

अहं स्वपिमि।	—	मया सुप्यते।
त्वं पाठं स्मरसि।	—	त्वया पाठ: स्मर्यते।
स: कथां कथयति।	—	तेन कथा कथ्यते।

उपरि उभयो: स्थानयो: कथनस्य भाव: एक: एव अस्ति परं कथनस्य शैली भिन्ना अस्ति। प्रथमे 'क' खण्डे वाक्येषु कर्त्तु: प्राधान्यम् अस्ति, क्रियारूपाण्यपि कर्तृपदानुसारं प्रचलन्ति। परं 'ख' खण्डे कर्मण: भावस्य वा प्राधान्यम् अस्ति, अत्र क्रियारूपाणि अपि कर्मपदानुसारं प्रयुज्यन्ते।

अत्र ध्यातव्यम् —

अवधेयांशा:—

- कथनस्य काऽपि विशिष्टा विधा वाच्यम् इति कथ्यते।
- वाच्यं त्रिविधं भवति -कर्तृवाच्यं, कर्मवाच्यं भाववाच्यञ्च।
- कर्तृवाच्ये कर्त्ता प्रधान: भवति, कर्तरि च प्रथमाविभक्ति: प्रयुज्यते, कर्मणि द्वितीया विभक्ति: भवति क्रियारूपञ्च कर्तृपदानुसारं प्रचलति।
- कर्मवाच्ये कर्मण: प्रधानता भवति, कर्मणि प्रथमा विभक्ति: भवति कर्त्तरि च तृतीया विभक्ति: भवति क्रियारूपञ्च कर्मपदानुसारं भवति।।
- यस्मिन् वाक्ये कर्म न भवति (अकर्मकधातुषु) तेषां भाववाच्ये परिवर्तनं भवति।
- भाववाच्ये क्रिया प्रथमपुरुषे एकवचने भवति।
- लज्ज्, ह्री, भू, अस्, विद्, स्था, जागृ, वृध्, एध्, शी, क्षि, भी, जीव्, मृ, स्वप्, क्रीड्, खेल्, रम्, रुच्, दीप्, ज्वल् इत्यादय: अकर्मकधातव: सन्ति।

कतिपयक्रियारूपाणि अध: प्रदीयन्ते—

कर्तृवाच्यम्	**कर्मवाच्यम्/भाववाच्यम्**
पठति	पठ्यते
लिखति	लिख्यते
हसति	हस्यते
तिष्ठति	स्थीयते
ज्वलति	ज्वल्यते
वहति	उह्यते
भवति/अस्ति	भूयते
जागर्ति	जाग्रियते
स्वपिति	सुप्यते
जीवति	जीव्यते

Rationalised 2023-24
© NCERT not to be republished

सेवते	सेव्यते
लज्जते	लज्ज्यते
खादति	खाद्यते
क्रीडति	क्रीड्यते
रमते	रम्यते
रोचते	रुच्यते
वर्धते	वर्ध्यते
बिभेति	बिभ्यते
पतति	पत्यते
शृणोति	श्रूयते
पिबति	पीयते
पश्यति	दृश्यते
रोदिति	रुद्यते
गच्छति	गम्यते
पठति	पठ्यते
पाठयति	पाठ्यते

अभ्यास:

1. अधोलिखितवाक्येषु कर्तृपदं परिवर्त्य वाक्यानि लिखत—

(i) बालक: पायसं खादति।

.... पायस: खाद्यते।

(ii) अहं फलं खादामि।

.... फलं खाद्यते।

(iii) त्वं किं शृणोषि?

.... किं श्रूयते?

(iv) आवां चित्राणि पश्याव:।

.... चित्राणि दृश्यन्ते।

(v) वयं पाठं स्मराम:।

.... पाठ: स्मर्यते।

© NCERT not to be republished

(vi) बालकौ धावतः।

……………… धाव्यते।

(vii) कुक्कुराः इतस्ततः भ्रमन्ति।

………………इतस्ततः भ्रम्यते।

(viii) गजः शनैः शनैः चलति।

………………शनैः शनैः चल्यते।

(ix) वानरः कूर्दति।

………………कूर्द्यते।

(x) अहं शाटिकां क्रीणामि।

……………… शाटिका क्रीयते।

2. अधोलिखितवाक्येषु कर्मपदं परिवर्त्य वाक्यानि लिखत—

(i) श्रमिकः भारं वहति।

श्रमिकेण ……………… उह्यते।

(ii) सः पाषाणं त्रोटयति।

तेन ………………त्रोट्यते।

(iii) सा गीतं गायति।

तया ………………गीयते।

(iv) माता रोटिकां पचति।

मात्रा ………………पच्यते।

(v) पिता फलानि आनयति।

पित्रा ………………आनीयन्ते।

(vi) सेवकः सेवां करोति।

सेवकेन ……………… क्रियते।

(vii) चिकित्सकः उपचारं करोति।

चिकित्सकेन………………क्रियते।

(viii) नीलिमा पाठं स्मरति।

नीलिमया ……………… स्मर्यते।

© NCERT not to be republished

(ix) अहं गृहं गच्छामि।

मया .... गम्यते।

(x) आवां लेखान् लिखाव:।

आवाभ्यां .... लिख्यन्ते।

3. अधोलिखितवाक्येषु क्रियापदपरिवर्तनं कृत्वा वाक्यानि लिखत —

(i) अहं जलं पिबामि।

मया जलं .... ।

(ii) आवां विद्यालयं गच्छाव:

आवाभ्यां विद्यालय: ....।

(iii) वयं ग्रामं गच्छाम:।

अस्माभि: ग्राम:................................ ।

(iv) त्वं फलानि खादसि।

त्वया फलानि .... ।

(v) छात्र: अध्ययनं करोति।

छात्रेण अध्ययनं .... ।

(vi) अहं श्रान्त: भवामि।

मया श्रान्त: .... ।

(vii) बालक: क्रीडति।

बालकेन .... ।

(viii) शिष्य: गुरुं सेवते।

शिष्येण गुरु: ....।

(ix) पाचक: भोजनं पचति।

पाचकेन भोजनं ....।

(x) धावक: धावति।

धावकेन ....।

© NCERT not to be republished

12

1075CH12

अशुद्धिसंशोधनम्

अध्यापक: — 'तुम सब पुस्तक पढ़ो' – अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत।

(छात्रा: विचिन्तयन्ति)

अध्यापक: — कृतम् किम्?

(छात्रा: विचारमग्ना:)

अध्यापक: — उमेश! भवान् वदतु।

उमेश: — यूयं पुस्तकं पठन्तु।

अध्यापक: — 'यूयं पुस्तकं पठन्तु' इति अशुद्धं वाक्यम्। अमित! उत्तिष्ठ। शुद्धं करोतु।

अमित: — यूयं पुस्तकं पठत।

अध्यापक: — अतिसुन्दरम्। एतद् एव शुद्धं वाक्यम्।

छात्रा: — आम्।

अध्यापक: — संस्कृते बहूनि कारणानि भवन्ति यै: वाक्यानि अशुद्धानि भवन्ति।

(किञ्चित् विरम्य)

अध्यापक: — किं भवन्त: जानन्ति अशुद्धय: कियत्य: भवन्ति। पश्यन्तु

(अध्यापक: श्यामपट्टे लिखति।)

1. कर्तृक्रिययो: अशुद्धय:—

अशुद्धम् वाक्यम्		**शुद्धम् वाक्यम्**
(i) त्वं पाठं पठति।	—	त्वं पाठं पठसि।
(ii) ते लेखं लिखति।	—	ते लेखं लिखन्ति। (पुल्लिङ्गे)
		ते लेखं लिखत:। (स्त्रीलिङ्गे)
(iii) वयं भोजनं खादामि।	—	वयं भोजनं खादाम:।

© NCERT not to be republished

(iv) यूयं बहि: गच्छ। — यूयं बहि: गच्छत।
(v) त्वं लेखं लिखतु। — त्वं लेखं लिख।
(vi) युवां भोजनं खादताम्। — युवां भोजनं खादतम्।
(vii) आवां खेलनाय गच्छाम:। — आवां खेलनाय गच्छाव:।
(viii) अहं तत्र गमिष्याम:। — अहं तत्र गमिष्यामि।
(ix) स: एव बुद्धिमान् सन्ति। — स: एव बुद्धिमान् अस्ति।
(x) तौ उपवने क्रीडाव:। — तौ उपवने क्रीडत:।
(xi) ता: भोजनं पचति। — ता: भोजनं पचन्ति।

2. विशेषणविशेष्ययो: अशुद्धय:—

(i) चतुर: बाला: वदन्ति। — चतुरा: बाला: वदन्ति।
(ii) एक: कन्या एव एवं वदति। — एका कन्या एव एवं वदति।
(iii) नील: गगनं शोभते। — नीलं गगनं शोभते।
(iv) कुशला बाला: एव प्रश्नं पृच्छन्ति। — कुशला: बाला: एव प्रश्नं पृच्छन्ति।
(v) मधुरं फलानि खाद। — मधुरं फलं खाद।
(vi) कुशल: बाला एव स:। — कुशल: बाल: एव स:।
(vii) सुन्दराणि चित्रं स: रचयति। — सुन्दराणि चित्राणि स: रचयति।
(viii) तत् फलानि मधुराणि सन्ति। — तानि फलानि मधुराणि सन्ति।
(ix) ते बालिका: बुद्धिमत्य: सन्ति। — ता: बालिका: बुद्धिमत्य: सन्ति।

3. लिङ्गसम्बन्धि–अशुद्धय:—

(i) ते मम मित्रा: सन्ति। — तानि मम मित्राणि सन्ति।
(ii) फला: करण्डके सन्ति। — फलानि करण्डके सन्ति।
(iii) वृक्षाणि हरिता: सन्ति। — वृक्षा: हरिता: सन्ति।
(iv) उपवने पुष्पा: सन्ति। — उपवने पुष्पाणि सन्ति।
(v) शाखेषु खगा: सन्ति। — शाखासु खगा: सन्ति।
(vi) देवालयासु देवा: वसन्ति। — देवालयेषु देवा: वसन्ति।

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

(vii) उपवन: सुन्दरम् अस्ति। — उपवनं सुन्दरम् अस्ति।

(viii) वन: अतिविस्तृतम् अस्ति। — वनम् अतिविस्तृतम् अस्ति।

(ix) खगानि आकाशे उड्डयन्ते। — खगा: आकाशे उड्डयन्ते।

(x) राधाया: ग्रीवम् शोभना अस्ति। — राधाया: ग्रीवा शोभना अस्ति।

4. वाच्यसम्बन्धि–अशुद्धय:—

(i) स: पाठ: पठ्यते। — तेन पाठ: पठ्यते।

(ii) तेन फलानि खाद्यते। — तेन फलानि खाद्यन्ते।

(iii) त्वम् लेख: लिख्यते। — त्वया लेख: लिख्यते।

(iv) त्वया ग्रन्थान् पठ्यन्ते। — त्वया ग्रन्था: पठ्यन्ते।

(v) त्वया भोजनं करोषि। — त्वया भोजनं क्रियते।

(vi) मया पाठा: स्मरामि । — मया पाठा: स्मर्यन्ते ।

(vii) तया कार्यं क्रियन्ते । — तया कार्यं क्रियते ।

(viii) अहं नियमा: पाल्यन्ते। — मया नियमा: पाल्यन्ते।

(ix) राधया गीतं गायति। — राधा गीतं गायति।

(x) अमितेन प्रात: उत्तिष्ठति। — अमितेन प्रात: उत्थीयते।

5. उपपदसम्बन्धि–अशुद्धय:—

(i) सीता रामस्य सह वनम् अगच्छत। — सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।

(ii) स: ग्रामस्य प्रति गच्छति। — स: ग्रामं प्रति गच्छति।

(iii) राधा मात्रे सदृशी अस्ति। — राधा मात्रा सदृशी अस्ति।

(iv) पिता पुत्रे क्रुध्यति। — पिता पुत्राय क्रुध्यति।

(v) स: अश्वेन पतति। — स: अश्वात् पतति।

(vi) स: विद्यालयेन आगच्छति। — स: विद्यालयात् आगच्छति।

(vii) वयं ग्रामे गमिष्याम:। — वयं ग्रामं गमिष्याम:।

(viii) बालक: कुक्कुरेण बिभेति। — बालक: कुक्कुरात् बिभेति।

(ix) पिता पुत्राय विश्वसिति। — पिता पुत्रे विश्वसिति।

(x) माता पुत्रीं स्निह्यति। — माता पुत्र्यां स्निह्यति।

© NCERT not to be republished

6. **वचनसम्बन्धि–अशुद्धय:—**

(i) स: पाठं पठन्ति। — स: पाठं पठति ।

(ii) वयं लेखं लिखामि। — वयं लेखं लिखाम:।

(iii) त्वं कुत्र गच्छथ। — त्वं कुत्र गच्छसि।

(iv) ते पाठं स्मरति। — ते पाठं स्मरन्ति।

(v) यूयं तत्र गच्छतम्। — यूयं तत्र गच्छत।

(vi) सर्वे शक्तिमन्त: अस्ति । — सर्वे शक्तिमन्त: सन्ति।

(vii) त्वया सर्वाणि कार्याणि करणीयम्। — त्वया सर्वाणि कार्याणि करणीयानि।

(viii) ता: कन्या: तत्र अस्ति। — ता: कन्या: तत्र सन्ति।

(ix) तौ बालकौ गच्छति। — तौ बालकौ गच्छत:।

(x) ते बालिके पठन्ति । — ते बालिके पठत:।

7. **संख्यासम्बन्धि–अशुद्धय:—**

(i) त्रय: बालिका: वार्तालापं कुर्वन्ति। — तिस्र: बालिका: वार्तालापं कुर्वन्ति।

(ii) चत्वार: बालिका: क्रीडन्ति। — चतस्र: बालिका: क्रीडन्ति।

(iii) एका पुरुष: कार्यं करोति। — एक: पुरुष: कार्यं करोति।

(iv) त्रीणि सैनिका: देशं रक्षन्ति। — त्रय: सैनिका: देशं रक्षन्ति।

(v) पञ्चा: बालका: पठन्ति। — पञ्च बालका: पठन्ति।

(vi) द्वे बालकौ खादत:। — द्वौ बालकौ खादत:।

(vii) त्रय: पुस्तकानि सन्ति। — त्रीणि पुस्तकानि सन्ति।

(viii) एक: पात्रं तत्र अस्ति। — एकं पात्रं तत्र अस्ति।

(ix) त्रीणि पुरुषा: एव कार्यं कुर्वन्ति। — त्रय: पुरुषा: एव कार्यं कुर्वन्ति।

(x) चत्वार: कन्या: प्रसीदन्ति। — चतस्र: कन्या: प्रसीदन्ति।

8. **अन्या: अशुद्धय:—**

(i) राधा श्व: गच्छति । — राधा श्व: गमिष्यति।

(ii) बालक: ह्य: गच्छति । — बालक: ह्य: अगच्छत्।

(iii) भवान् किं कथयसि । — भवान् किं कथयति।

© NCERT not to be republished

(iv) रमा श्व: करोति । — रमा श्व: करिष्यति।

(v) स: ह्य: न पठति । — स: ह्य: न अपठत्।

अभ्यास:

1. अधोलिखितानि वाक्यानि शुद्धानि कुरुत —

(i) वयं चित्रं पश्यन्ति। ....

(ii) भवान् भोजनं खाद। ....

(iii) त्वं पाठं स्मरतु। ....

(iv) स: पीत: वस्त्रं धारयति। ....

(v) त्रीणि वृक्षा: तत्र शोभन्ते। ....

(vi) ता: महिला: न गमिष्यति। ....

(vii) त्वम् किं क्रियते। ....

(viii) पिता श्व: आगच्छति। ....

(ix) युष्माभि: किं पठन्ति। ....

(x) स: तत्र न सन्ति। ....

(xi) अमितेन एतत् कार्यं करोति । ....

(xii) यूयं तत्र न गन्तव्यम्। ....

(xiii) मया एतानि फलानि खादितव्यम् । ....

(xiv) कन्या: पाठं पठति। ....

(xv) अम्बा भोजनं पचन्ति । ....

(xvi) तेन भोजनं खादनीयानि । ....

(xvii) अम्बा तत्र सन्ति। ....

(xviii) त्वम् जलं पानीयम्। ....

(xix) ते लेखान् लिखति। ....

(xx) अस्माभि: फलानि खाद्यते। ....

© NCERT not to be republished

13

1075CH13

मिश्रिताभ्यासः

अभ्यासः I

1. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

पठनम् अतीव अरुचिकरं मन्यमानः सुवीरः हतोत्साहः भूत्वा कक्षस्य एकस्मिन् कोणे विचारमग्नः अतिष्ठत् । तस्य मनसि असफलतायाः कारणात् आत्मघातस्य भावना जागृता । दुःखितः भूत्वा आत्मचिन्तनं कुर्वन् सः भित्तिम् आरोहन्तम् एकं पिपीलकं पश्यति, यः पुनः पुनः पतित्वा अपि हतोत्साहितः न भवति, अपि तु सततं प्रयासेन सः अन्ततः भित्तिम् आरोहति तत्रस्थं मिष्टान्नं च प्राप्नोति । तस्य विवेको जागृतो भवति । आत्मनः आत्मघातस्य भावनां निन्दयन् सः चिन्तयति यत् यद्येष पिपीलकः सततप्रयासेन सफलः भवितुं शक्नोति तर्हि न किमपि असम्भवं जगति । एतद्विचिन्त्य सः पठनस्य पुनः पुनरभ्यासं कुर्वन् कक्षायां विशिष्टं स्थानं प्राप्तवान् । तस्मिन् एतत् परिवर्तनं दृष्ट्वा शिक्षकः तस्य प्रशंसां कुर्वन् बोधयति— "वत्स! वीरभोग्या वसुन्धरा । वसुधायां बहूनि वस्तूनि सन्ति परन्तु परिश्रमशीलाः वीराः एव तानि प्राप्नुवन्ति ।"

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) कः हतोत्साहः अभवत्? ....

(ख) असफलतायाः कारणात् सुवीरस्य मनसि कस्य भावना जागृता?

....

(ग) पिपीलकः भित्तौ किं प्राप्नोति? ....

(घ) सुवीरः पुनः पुनरभ्यासेन किं स्थानं प्राप्तवान्? ....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) सुवीरः आत्मघातस्य भावनां निन्दयन् किं चिन्तयति?

....

(ख) के वसुधायां वसूनि प्राप्नुवन्ति?

....

© NCERT not to be republished

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) 'सः अन्ततः भित्तिम् आरोहति'- अत्र किम् अव्यय-पदम्?

....

(ख) 'संसारे' इति पदस्य किं समानार्थकपदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

....

(ग) 'तस्य विवेकः जागृतः अभवत्'- अत्र किं कर्तृपदम्?

....

(घ) 'वसुधायां बहूनि वसूनि सन्ति'- अत्र किं विशेषणपदम्?

....

2. 'आत्मघातः कस्याः अपि समस्यायाः समाधानं न भवति' एतद्विषयम् अधिकृत्य एकम् लघुम् अनुच्छेदं लिखत —

....

....

....

....

....

3. 'पठनस्य के लाभाः' - इति वर्णनं कुर्वन्तः मित्रं प्रति पत्रमेकं लिखत —

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4. सन्धिच्छेदः सन्धिः वा क्रियताम् —

(i) हतोत्साहः .... + ...

(ii) विवेकः+जागृतः ....

© NCERT not to be republished

(iii) स:+अन्तत: ....+.................

(iv) एतद्विचिन्त्य ....

5. समासं विग्रहं वा कृत्वा वाक्यानि पुन: लिखत —

(i) सुवीर: <u>हत: उत्साह: यस्य स:</u> भूत्वा एकस्मिन् कोणे तिष्ठति।

....

(ii) तस्य मनसि <u>आत्मघातस्य</u> भावना जागृता।

....

(iii) स: अभ्यासं कुर्वन् कक्षायां <u>विशिष्टं स्थानं</u> प्राप्तवान्।

....

(iv) वत्स! <u>वीरै: भोग्या</u> वसुन्धरा।

....

6. उचित-प्रत्ययप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत —

(i) पठनम् अरुचिकरं .... (मन्+शानच्) छात्रा: सफला: न भवन्ति।

(ii) सततप्रयासेन मन्दोऽपि सफल:.................... (भू+तुमुन्) शक्नोति।

(iii) अस्मिन् वर्षे अहम् कक्षायां विशिष्टं स्थानं....................। (प्र+आप+क्तवतु)

(iv) पुन: पुन: पतित्वा अपि हतोत्सहित: न....................। (भू+तव्यत्)

7. प्रदत्तवाक्यानां वाच्यपरिवर्तनम् कृत्वा लिखत —

(i) सुवीर: एकस्मिन् कोणे तिष्ठति।

....

(ii) पिपीलक: अन्तत: भित्तिम् आरोहति।

....

(iii) शिक्षकेण तस्य प्रशंसा क्रियते।

....

(iv) परिश्रमशीलै: वीरै: एव वसूनि प्राप्यन्ते।

....

8. प्रदत्तवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत —

(i) उसका विवेक जागृत हो जाता है।

....

(ii) उसने वृक्ष पर चढ़ते हुए साँप को देखा।

....

© NCERT not to be republished

(iii) हमें पुन: पुन: पाठों का अभ्यास करना चाहिए।

....

(iv) मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।

....

9. प्रदत्तानि वाक्यानि शुद्धानि कृत्वा पुन: लिखत—

(i) बालक: एकस्मिन् कोणे तिष्ठति। ....

(ii) स: भित्तिम् आरोहन्तं पिपीलकं पश्यति। ....

(iii) वसुधायां बहूनि वसूनि सन्ति। ....

(iv) अहम् उत्साहित: भूत्वा तत्रागच्छम्। ....

अभ्यास: II

1. लिखितमनुच्छेदं पठित्वा निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत—

वयं सर्वे सुखम् इच्छाम: । कोऽपि दु:खं नैव इच्छति । अत: दु:खानां विनाश: कथं भवति, इति ज्ञातव्यम्। गीतायाम् अर्जुनं प्रति श्रीकृष्ण: अकथयत्, "प्रसादे सर्वदु:खानां हानिरस्योपजायते ।" अत: सर्वेषां दु:खानाम् अभावस्य कृते मनस: प्रसन्नता अत्यावश्यकी वर्तते । विपरीतपरिस्थितिषु ये धैर्यं न त्यजन्ति ते सर्वदा आन्तरिक-प्रसन्नताया: माध्यमेन प्रतिकूलपरिस्थिती: विरुध्य विजयम् अधिगच्छन्ति। प्रियजनस्य रुग्णतायां ये सेवां कृत्वा प्रसन्ना: भवन्ति ते न केवलम् प्रियजनस्य दु:खस्य अपि तु स्वदु:खस्य अपि विनाशं कृत्वा भूयोऽपि प्रसन्ना: भवन्ति, परन्तु ये आत्मन: परस्य वा रोगं, समस्यां वा दृष्ट्वा केवलं हाहाकारं कुर्वन्ति तेषां दु:खेषु वृद्धि: एव भवति। अत: विषाद: कदापि न कर्तव्य: प्रसन्नता च कदापि न त्याज्या।

(i) एकपदेन उत्तरत —

(क) प्रसादे केषां हानि: भवति? ....

(ख) ये समस्यायां प्राप्तायां केवलं हाहाकारं कुर्वन्ति तेषां दु:खेषु किं भवति?

....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) प्रतिकूलपरिस्थिती: विरुध्य के विजयम् अधिगच्छन्ति?

....

(ख) किं कदापि न कर्तव्यं किम् च न त्याज्यम्?

....

not to be republished © NCERT
Rationalised 2023-24

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत —

(क) 'पराजयम्' इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

....

(ख) 'तेषाम् दु:खेषु वृद्धि: भवति' इति वाक्यांशे 'भवति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

....

(ग) 'सर्वेषाम्' इति सर्वनामपदम् अत्र कस्मै प्रयुक्तम्?

....

(घ) 'स्वस्य' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र आगतम्?

....

(iv) गद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

....

2. प्रसन्नताया: महत्त्वविषये पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं सरलसंस्कृतेन लिखत-

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. गृहे पितु: रुग्णताया: कारणेन भवत:/भवत्या: मित्रम् दु:खित: अस्ति। तं सान्त्वयन्त: पत्रमेकं सरलसंस्कृतेन लिखत—

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

4. **अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानि अधिकृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत—**

(i) हाहाकारेण तु दु:खेषु वृद्धि:+एव भवति। ....

(ii) मनस: प्रसन्नता तु अत्यावश्यकी। .... + ...

(iii) क: + अपि दु:खं नैव इच्छति। ....

(iv) विषाद: कदापि न कर्तव्य:। .... + ...

(v) वृद्धानां सेवां कृत्वा प्रसन्नो भव। .... + ...

(vi) वयं सर्वे सुखम्+इच्छाम:। ....

5. **रेखांकितपदानां समस्तपदं विग्रहं वा कृत्वा वाक्यानि पुन: लिखत—**

(i) दु:खानां विनाश: कथं भवति इति ज्ञातव्यम्।

....

(ii) नीतिषु लाभालाभौ न विचारणीयौ।

....

(iii) दु:खानाम् अभाव: मनस: प्रसन्नतायै आवश्यक:।

....

6. **उचितप्रत्ययप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत—**

(i) दु:खानां विनाशस्य उपायं ज्ञा + तव्यत्। ....

(ii) प्रियजनस्य रुग्णता दु:खदायिका। .... + ...

(iii) रोगं दृष्ट्वा केवलं हाहाकारं न कर्तव्यम्। .... + ...

(iv) त्वं प्रतिकूलपरिस्थितौ वि+रुध्+ल्यप् विजयं प्राप्नुहि। .... + ...

7. **प्रदत्तवाक्यानां वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत—**

(i) गीतायां श्रीकृष्ण: अर्जुनं प्रति कथयति।

....

(ii) वयं सर्वे सुखम् इच्छाम:।

....

(iii) विनम्रजन: पितरं सेवते।

....

(iv) पुत्रेण औषधै: पितु: रोगविनाशस्य प्रयत्न: क्रियते।

....

© NCERT not to be republished

8. प्रदत्तवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

(i) हम सभी सुख चाहते हैं।

....

(ii) मन की प्रसन्नता कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

....

(iii) गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा।

....

(iv) वह प्रियजन की रुग्णता में सेवा करके प्रसन्न होता है।

....

9. प्रदत्तानि वाक्यानि शुद्धानि कृत्वा पुन: लिखत—

(i) मूर्खा: जना: दु:खं दृष्ट्वा केवलं हाहाकारं करोति।

....

(ii) दु:खानाम् अभावस्य कृते मनस: प्रसन्नता अत्यावश्यकी वर्तते।

....

(iii) रोगं समस्यां वा दृष्ट्वा तस्य समाधानं कुरु।

....

(iv) विषाद: कदापि न कर्तव्य:।

....

© NCERT not to be republished

14

1075CH14

आदर्शप्रश्नपत्रम्

समय:– होरात्रयम् **सम्पूर्णाङ्का:-80**

सामान्यनिर्देशा:—

- अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वार: खण्डा: सन्ति।
- प्रत्येकं खण्डम् अधिकृत्य एकस्मिन् स्थाने क्रमेण उत्तराणि लेखनीयानि।
- सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि।
- प्रश्नपत्रानुसारं प्रश्नसंख्या अवश्यमेव लेखनीया।

खण्ड – 'क'
(अपठित: अनुच्छेद: – 10 अङ्का:)

1. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

बाल्यावस्था जीवनस्य महत्त्वपूर्ण: काल: भवति। अस्मिन् समये यदि वयं परिश्रमं कुर्म: तदा जीवनं सुखमयं भवति। विद्यार्थी बाल्यकाले विद्याध्ययने प्रवृत्त: भवति चेत् तस्य परीक्षाफलं शोभनं भवति, विषयस्यापि ज्ञानं सरलतया भवति। स: स्वस्वप्नं पूरयितुं समर्थो भवति। एवमेव चरित्रनिर्माणे चापि बाल्यकाल: महत्त्वपूर्णं स्थानम् आदधाति। बाल्यकाले यादृशा: संस्कारा: लभ्यन्ते तादृश: एव आचार: व्यवहार: च आजीवनम् अस्माभि: सह तिष्ठत:। अत एव अस्माभि: बाल्यकाले अवधानपूर्वकं गुणाधानस्य प्रयास: कर्त्तव्य:। अस्मिन् समये अध्ययनप्राप्तये अपि सावधानमनसा प्रयत्न: करणीय:। शरीरस्वास्थ्यरक्षायै चापि बाल्यकालादेव पौष्टिकाहार: ग्रहीतव्य: व्यायाम: चापि करणीय:।

(i) एकपदेन उत्तरत— **1×2=2**

(क) बाल्यकाले अवधानपूर्वकं कस्य प्रयास: कर्त्तव्य:?

(ख) किमर्थं पौष्टिकाहार: ग्रहीतव्य:?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— **2×2=4**

(क) जीवनं कदा सुखमयं भवति?

(ख) कौ अस्माभि: सह सदैव तिष्ठत:?

not to be republished © NCERT

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— **1×3=3**

(क) 'अनवधानमनसा' इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

(ख) 'महत्त्वपूर्ण: काल:' इत्यनयो: किं विशेषणपदम्?

(ग) 'बाल्यावस्था जीवनस्य महत्त्वपूर्ण: काल: भवति' इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

(iv) प्रदत्तगद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत— **1**

खण्ड – 'ख'

(रचनात्मक-कार्यम् — 15 अङ्का:)

2. भवान् (अनिमेष:) शैक्षिकयात्रार्थं शिक्षकै: सह अरुणाचलप्रदेशं गन्तुमिच्छति। तदर्थम् अनुमतिं प्राप्तये यात्राव्ययार्थं च रूप्यकाणि लब्धुं पितरं प्रति लिखितं पत्रमिदं मञ्जूषाप्रदत्तपदानां सहायतया पूरयत— **½×10=5**

मञ्जूषा

अनुमति:, मातृचरणयो:, रूप्यकाणि, यात्राव्ययार्थम्, व्यस्त:, शैक्षिकयात्रार्थम्, छात्रा:, कुशली, यथाशीघ्रम्, भवत:

छात्रावासत:

दिनाङ्क:..........

पूज्य पितृचरणा:

प्रणतय:।

अत्र अहं सकुशल: स्वाध्ययने ....अस्मि। आशासे भवान् अपि .... अस्ति। मम विद्यालयात् दशमकक्षाया: अनेके .... शिक्षकै: सह ....अरुणाचल-प्रदेशं गन्तुम् इच्छन्ति। यदि भवत: .... स्यात्, अहमपि तै: सह गन्तुकामोऽस्मि। .... सहस्ररूप्यकाणि अपि आवश्यकानि। ....। स्वमन्तव्यं सूचयतु। यदि ....सम्मति: अस्ति .... अपि प्रेषयतु। .... मम प्रणति: निवेदनीया।

भवत: पुत्र:

अनिमेष:

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

3. अध:प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा तदाधारितानि पञ्चवाक्यानि लिखत — **5**

....

....

....

....

....

अथवा

'वर्धमानं प्रदूषणम्' इति विषयमधिकृत्य मञ्जूषात: पदानि चित्वा पञ्चवाक्यात्मकम् अनुच्छेदं लिखत। **5**

मञ्जूषा

वैश्विक-उष्णता, यानानां व्यवहार:, विषाक्तवायु:, अवकरक्षेपणम्, जलप्रदूषणम्, वायुप्रदूषणम्, ध्वनिप्रदूषणम्, कोलाहल:, शुचिपर्यावरणम्, मलिनम्, यन्त्रागारम्

4. अधोलिखित-वाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत —

(i) छात्र विद्यालय जाता है। A student goes to school.
(ii) मैं परिश्रम करता हूँ। I work hard.
(iii) तुम क्या करते हो? What do you do?
(iv) पिता के साथ पुत्र घूमता है। Son walk with his father.
(v) शिक्षक पाठ पढ़ाते हैं। Teacher teaches the lesson.

....

....

....

....

....

खण्ड – 'ग'

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम् — 25 अङ्का:)

5. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत— **1×4=4**

(i) पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्ति: तत् कृतज्ञता।
(ii) सेवितव्यो महावृक्ष: फलच्छायासमन्वित: ।
(iii) विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम् ।
(iv) स एव वह्नि:+दहते शरीरम्।

6. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समस्तपदं लिखत— **1×4=4**

(i) यदि अहं कृष्ण: वर्ण: यस्य स: तर्हि श्रीरामस्य वर्ण: कीदृश:?
(ii) सर्वेषां महत्त्वं विद्यते समयम् अनतिक्रम्य ।

Rationalised 2023-24

(iii) मिलित्वा प्रकृते: सौन्दर्यम् रक्षणीयम्।

(iv) माता च पिता च वन्दनीयौ।

7. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययौ संयुज्य विभज्य वा रिक्तस्थानानि पूरयत— 1×4=4

(i) श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णु+तल्.............................।

(ii) वैज्ञानिका:...............................कथयन्ति यत् पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।

(iii) बुद्धि+मतुप्...............................सर्वत्र पूज्यते।

(iv) राजसिहंस्य पत्नी बुद्धिमती...............................आसीत्।

8. प्रदत्तेभ्य: विकल्पेभ्य: समुचितं विकल्पं चित्वा वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत— 1×3=3

(i) ....सत्यं कथ्यते। (त्वम्/त्वाम्/त्वया)

(ii) काक: पिकस्य...............................पालयति।(सन्तति:/ सन्ततिम्/ सन्तत्या)

(iii) पित्रा पुत्राय विद्याधनं...............................। (ददाति/ दीयते/ यच्छति)

9. कोष्ठके प्रदत्त-समयवाचकान् अङ्कान् संस्कृतेन लिखत— 1×4=4

(i) बालक:..........................वादने उत्तिष्ठति। (6:00)

(ii) स:..........................विद्यालयं गच्छति। (7:15)

(iii) ....वादने विद्यालये अर्धावकाश: भवति। (11:30)

(iv) स:.......................... वादने विद्यालयात् गृहम् गच्छति। (1:45)

10. मञ्जूषाप्रदत्त-अव्ययपदै: रिक्तस्थानानि पूरयत— ½×6=3

मञ्जूषा

यत्र, अद्य, सदा, यदि, तत्र, तर्हि

(i) ....परिश्रमं कुर्म: ....सफला: भवाम:।

(ii) .... समयस्य सदुपयोग: करणीय:।

(iii) जीवनम् .... दुर्वहं जातमस्ति।

(iv) .... हरीतिमा ....पर्यावरणं शुद्धम्।

11. रेखाङ्कितपदं संशोध्य वाक्यानि लिखत— 1×3=3

(i) ते नार्य: गल्पं कुर्वन्ति।

(ii) अहं परिश्रमं करोति ।

(iii) बालक: कार्यं कुर्वन्ति।

© NCERT not to be republished

खण्ड – 'घ'

(पठित-अवबोधनम् – 30 अङ्काः)

12. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत— **5**

कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। तेन वित्तेन स्वपुत्रम् एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः, पुत्रं च द्रष्टुं प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः सः बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

(i) एकपदेन उत्तरत— **½×2=1**

(क) निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किम् उपार्जितवान्?

(ख) अर्थकार्श्येन पीडितः सः केन प्राचलत्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— **1×1=1**

(क) निर्धनः जनः वित्तेन किं कृतवान्?

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— **1×3=3**

(क) 'धनम्' इत्यस्य समानार्थकपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

(ख) 'निर्धनः जनः' इत्यनयोः किं विशेषणपदम्?

(ग) 'परमर्थकार्श्येन पीडितः सः बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्' इति वाक्ये 'सः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

13. अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत— **5**

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः॥

(i) एकपदेन उत्तरत— **½×2=1**

(क) केन उदीरितः अर्थः गृह्यते?

(ख) काः परेङ्गितज्ञानफलाः भवन्ति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— **1×1=1**

(क) पण्डितः जनः किम् ऊहति?

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— **1×3=3**

(क) 'अश्वाः' इति अर्थे पद्ये किं पदं प्रयुक्तम्?

(ख) 'मूर्खः' इत्यस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

(ग) 'हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः' इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

© NCERT not to be republished

14. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत— 5

चाणक्य: — भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्य: प्रकृतिभ्य: प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजान:।

चन्दनदास: — आज्ञापयतु आर्य:, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।

चाणक्य: — भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्ध: प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।

चन्दनदास: — (सहर्षम्) आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।

चाणक्य: — भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेश: कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्या: स्म:।

(i) एकपदेन उत्तरत— ½×2=1

(क) प्रीताभ्य: प्रकृतिभ्य: राजान: किम् इच्छन्ति?

(ख) कस्य अर्थसम्बन्ध: प्रीतिमुत्पादयति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— 1×1=1

(क) चन्दनदासेन (भवता) किं प्रष्टव्यम्?

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— 1×3=3

(क) 'दु:खाभाव:' इति अर्थे नाट्यांशे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ख) 'आर्य अनुगृहीतोऽस्मि' अत्र 'अस्मि' इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?

(ग) 'किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते' इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

15. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत— 1×4=4

(i) <u>विद्वांस</u> एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्त: प्रकीर्तिता:।

(ii) समीपे <u>एका नदी</u> प्रवहति।

(iii) <u>अतिदाक्षिण्येन</u> अलम्।

(iv) <u>गहनकानने</u> सा व्याघ्रं ददर्श।

16. अधोलिखितयो: श्लोकयो: अन्वये रिक्तस्थानानि पूरयत— ½×8=4

(i) त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।
परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधी:।।

अन्वय:– य: .... वाचं त्यक्त्वा .... अभ्युदीरयेत् (स:) .... पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं ....।

(ii) अपत्येषु च सर्वेषु जननी तुल्यवत्सला।
पुत्रे दीने तु सा माता कृपार्द्रहृदया भवेत्।।

अन्वय:- सर्वेषु च .... जननी .... भवति। सा माता दीने .... तु .... भवेत्।

अथवा

अधोलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थे रिक्तस्थानपूर्तिं मञ्जूषाप्रदत्तपदानां सहायतया कुरुत— **1×4=4**

मञ्जूषा

कार्यम् सुखप्राप्ते: कल्याणम् अन्येषाम्

य: इच्छत्यात्मन: श्रेय: प्रभूतानि सुखानि च।
न कुर्यादहितं कर्म स: परेभ्य: कदापि च ॥

भावार्थ:—य: नर: आत्मन:..इच्छति, तस्य..अपि इच्छा अस्ति, स:.................................कृते कदापि अकल्याणकरं ....न कुर्यात् इति अवधातव्यम्।

17. अधोलिखितवाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत— **½×8=4**

(i) बुद्धिमती व्याघ्रभयात् मुक्ता जाता।
(ii) ग्रामे राजसिंह: नाम राजपुत्र: वसति स्म।
(iii) गलबद्धशृगालक: व्याघ्र: सहसा पलायित:।
(iv) व्याघ्र: शृगालं निजगले बद्ध्वा काननं गतवान्।
(v) तस्य भार्या पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
(vi) जम्बुक: व्याघ्रं पुन: तत्र गन्तुं प्रेरितवान्।
(vii) इयं व्याघ्रमारी इति विचिन्त्य भयेन व्याघ्र: पलायित:।
(viii) सा पुत्रौ उक्तवती– एकं व्याघ्रं विभज्य खादतम्।

18. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् उत्तरं विकल्पेभ्य: चित्वा लिखत— **1×3=3**

(i) अत्र जीवनं <u>दुर्वहं</u> जातम्।
सरलम्/कठिनम्/जटिलम्

(ii) <u>संव्यवहाराणां</u> वृद्धिलाभा: प्रचीयन्ते।
संस्काराणाम्/संलापानाम्/व्यापाराणाम्

(iii) <u>तोयै:</u> अल्पै: अपि तरो: पुष्टि: भवति।
जलै:/त्वग्भि/दुग्धै:।

not to be republished © NCERT

परिशिष्टम्

व्यवहार-वाक्यानि

हरिः ॐ / नमो नमः/ नमस्कारः/ प्रणामः!	— *Hello!*
सुप्रभातम्	— *Good morning*
सुमध्याह्नम्	— *Good afternoon*
शुभरात्रिः	— *Good night*
अस्तु	— *Alright/ Okay*
कृपया	— *Please*
धन्यवादः	— *Thank you*
स्वागतम्	— *Welcome*
क्षम्यताम्	— *Excuse me/ Pardon me/ Sorry*
चिन्ता मास्तु	— *Don't worry*
श्रीमन्	— *Sir*
मान्या/आर्या	— *Lady*
साधु-साधु/ समीचीनम्	— *Very good*
आम्	— *Yes*
ना	— *No*
अलम्	— *Enough/ Stop*
श्रीमन्! अहं जल-पानार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— *Sir! May I go to drink water?*
श्रीमन्! अहं लघुशङ्कार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— *Sir! May I go to toilet?*
श्रीमन्! अहं किम कार्यार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— *Sir! I want to go for some work?*
अहं प्रष्टुम् इच्छामि	— *I want to ask something*
अहं न जानामि	— *I don't know*
मया न ज्ञातम्	— *I didn't understand*
कथमस्ति भवान्/भवती?	— *How are you?*
आगच्छन्तु	— *Come in*

© NCERT not to be republished

उपविशन्तु	— *Sit down*
उत्तिष्ठन्तु	— *Stand up*
ज्ञातम् वा ?	— *Do you understand?*
बहिर्गच्छतु	— *Get out*
अलं वार्तालापेन/ मा वदत	— *Don't talk*
पुनः मिलामः	— *See you again*
जन्मदिनस्य शुभाशयाः	— *Happy birthday*
नववर्षस्य शुभाशयाः	— *Hearty greetings for a happy New Year*
सफलतायै अभिनन्दनम्	— *Hearty congratulations on your success*
शुभाः ते पन्थानः	— *Happy journey*
नववर्षं नवचैतन्यं ददातु	— *Let the new year bring a new life*
भवदीयः समारम्भः यशस्वी भवतु	— *Wishing the function a grand success*
शतं जीव शरदो वर्धमानाः	— *May you live for a hundred years*
भवत: नाम किम्?	— *What is your name?*
भवान् कुत्र गच्छति?	— *Where are you going?*
भवान् कस्यां कक्षायां पठति?	— *In which class do you study?*
भवत: विद्यालस्य नाम किम्?	— *What is the name of your school?*
भवान् कुत्र वसति?	— *Where do you live?*
मम नाम .... अस्ति	— *My name is ....*
अपि कुशलं ते/ भवत:/ भवत्या?	— *Are you fine?*
कथं चिरादागतोऽसि?	— *Why did you come late?*
किं जातम्?	— *What happened?*
अपि सर्वं कुशलम्?	— *Is everything Okay?*

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

भवान् ह्य: कुत्र गत: आसीत्? — *Where did you go yesterday?*

भवता/भवत्या किं पृष्टम्? — *What have you asked?*

भवता/ भवत्या किं कथ्यते? — *What do you say?*

किम् एतत् उचितम्? — *Is this right?*

भवता/ भवत्या! ज्ञातम् एतत्? — *Do you! understand this?*

किम् भवान्/भवती एतदर्थम् अनुमति: दास्यति? — *Would you give me permission for this?*

मम अपि एष: विचारोऽस्ति — *This is also my opinion*

सर्वे कुशलिन: सन्ति — *Everyone is fine*

शान्तं भव — *Be calm*

कलहं मा कुरुत — *Don't quarrel*

तूष्णीं भव। — *Be quiet*

उपविशत यूयम् — *Sit down please*

पाठं पठत — *Read this lesson*

पाठं स्मरत — *Learn this lesson*

सत्यं वद — *Always speak the truth*

प्रियं वद — *Always speak politely*

किं खादसि? — *What do you eat?*

शनै: वद — *Speak slowly*

उच्चै: मा वद — *Don't speak loudly*

किमर्थम् उच्चै: वदसि? — *Why do you speak loudly?*

वृथा मा वद — *Don't speak unnecessarily*

किमर्थम् एवं जल्पसि? — *Why are you beating around the bush?*

शीघ्रं कुरु — *Be quick*

अलम् अतिविस्तरेण — *Unnecessary elaboration is not required*

अलम् अतिविकत्थनेन — *Unnecessary selfpraise is not required*

© NCERT not to be republished

अलम् मिथ: कलहेन	— *Don't quarrel*
उच्चै: करतलध्वनिं कुरुत	— *Clap loudly*
अत्र उपविशत	— *Sit here*
अवकरम् इतस्तत: मा क्षिपत	— *Don't throw garbage here and there*
गीतं गायत	— *Sing a song*
मह्यं चाकलेहं देहि	— *Give me a chocolate*
अहम् अपि खादितुम् इच्छामि	— *I also want to eat*
लेखं लिखत	— *Write an essay*
भोजने किम् अस्ति?	— *What is the menu for the meal?*
गत: काल: पुन: न आयाति	— *The past never comes back*
समयस्य सदुपयोगं कुरुत	— *Always use your time wisely*
पठितस्य अभ्यासं कुरुत	— *Practice what you read*
मया कार्यं कृतम्	— *I have completed my work*
मया कार्यं न कृतम्	— *I have not completed my work*
पाठं स्मृतं न वा ?	— *Have you learnt this lesson?*
किमर्थं तूष्णीम् असि ?	— *Why are you quiet?*
त्वरितं कुरुत	— *Do it quickly*
एतत् उचितं न अस्ति	— *This is not fair*
निरर्थकं कार्यं मा कुरुत	— *Don't do useless work*
सुष्ठु उक्तम्	— *Well said*
सज्जा: भवत	— *Be ready*
अभ्यासं कुरुत	— *Do Practise*

© NCERT not to be republished

ध्येय-वाक्यानि

सेवा अस्माकं धर्म:	— थल सेना
शं नो वरुण:	— जल सेना
नभ: स्पृशं दीप्तम्	— वायु सेना
योगक्षेमं वहाम्यहम्	— भारतीय जीवन बीमा निगम
विद्ययाऽमृतमश्नुते	— राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
यतो धर्मस्ततो जय:	— उच्चतम न्यायालय
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्	— अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद्
निष्ठा धृति: सत्यम्	— दिल्ली विश्वविद्यालय
विद्ययाऽमृतमश्नुते	— काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
बलस्य मूलं विज्ञानम्	— रक्षानुसंधान विकास संगठन
अहर्निशं सेवामहे	— डाक तार विभाग
सत्यं शिवं सुन्दरम्	— दूरदर्शन
आदित्याज्जायते वृष्टि:	— भारतीय मौसम विभाग
बहुजनहिताय बहुजनसुखाय	— आकाशवाणी
तत् त्वं पूषन् अपावृणु	— केन्द्रीय विद्यालय संगठन
ज्ञानविज्ञानविमुक्तये	— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
असतो मा सद्गमय	— केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा संस्थान
सत्यमेव जयते	— भारत सरकार
धर्मचक्रप्रवर्तनाय	— लोक सभा
युद्धं प्रज्ञायै	— सैन्य विद्यालय
योऽनूचान: स नो महान्	— राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
योग: कर्मसु कौशलम्	— भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी
जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी	— नेपाल सरकार
जलेष्वेव जयामहे	— इण्डोनेशिया जल सेना
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन	— इण्डोनेशिया वायु सेना
आकाशे शत्रून् जहि	— थल सेना में वायु रक्षा विभाग
श्रमेव एव जयते	— श्रम मंत्रालय

© NCERT not to be republished

संवादा:

1. निशा — नमो नम: सखि! एवं धावन्ती कुत्र गन्तुं तत्परा असि ?

गरिमा — सखि! वस्तुत: अत्यन्तं त्वरायामस्मि, अद्य मम विद्यालये सौन्दर्यप्रतियोगिता अस्ति, तत्रैव गमनीयम्।

निशा — सौन्दर्यप्रतियोगिताऽस्ति। सौन्दर्ये कीदृशी प्रतियोगिता? एतत्तु विधात्रा प्रदत्तं रूपमेव। विधातु: निर्णये कीदृशी प्रतियोगिता?

गरिमा — एतत्तु सर्वथा सत्यं परं विधात्रा प्रदत्तं रूपं क: कथं रक्षति गुणान्वितं च करोति इति अस्य कृते प्रतियोगिता आवश्यकी।

निशा — सखि ! त्वं सत्यं वदसि, परं किं केवलं बाह्यरूपमेव महत्त्वपूर्णम्? किम् आन्तरिकगुणानां न किमपि महत्त्वम्?

गरिमा — एवं नास्ति सखि! विजेतृनिर्धारणाय सौन्दर्यप्रतियोगितासु बाह्यसौन्दर्येण सह मानवीयगुणानामपि परीक्षणं भवति।

निशा — कथमान्तरिकगुणा: परीक्ष्यन्ते इति तु मम जिज्ञासा वर्धते?

गरिमा — प्रश्नोत्तरमाध्यमेन, प्रतिभागिनीनां व्यवहारेण च आन्तरिकगुणानां परीक्षणं भवति।

निशा — वस्तुत: एव दर्शनीया प्रतियोगिता। किमहमपि त्वया सह प्रतियोगितां द्रष्टुं चलेयम्?

गरिमा — आम् आम्। अवश्यमेव। आगच्छ मया सह। शीघ्रं चलाव:। प्रतियोगिताया: समयस्तु सञ्जात:।

2. दर्पण: — किमर्थं खिन्नाऽस्ति भवती?

मेधा — कस्त्वम्? कथं ज्ञातं त्वया?

दर्पण: — आश्चर्यम्! भवती मां न जानाति?

मेधा — मम मातापितासखिभिरपि अविज्ञातं तथ्यं त्वया अवगतम्। मम कृते तु एतदेव महदाश्चर्यम् ।

दर्पण: — भो! अहं दर्पणोऽस्मि।
भवती मां तव प्रतिरूपमेव अवजानातु ।

मेधा — किमेवम्?

दर्पण: — आम्! प्राय: जना: निजं सुन्दरतमं रूपं द्रष्टुमिच्छन्ति परं ते न जानन्ति यदहं केवलं यथायथं रूपमेव दर्शयामि ।

मेधा — उचितं कथितं त्वया। जना: स्वार्थस्य वशीभूय अस्मान् सततं भ्रामयितुं प्रयतन्ते।

दर्पण: — एतदर्थमेव जना: तथ्यमवगन्तुं न समर्था: ।

© NCERT not to be republished

मेधा — सत्यमुक्तं त्वया। वयमपि मिथ्याप्रशंसया भ्रान्ता: भूत्वा तथ्यं विस्मृत्य अहङ्कारिण: भवाम:। त्वमेव तथ्यं ज्ञापयित्वा अस्मभ्यम् आत्ममन्थनस्य अवसरं प्रयच्छसि।

दर्पण: — एतदेव मम वास्तविकं प्रयोजनम्।

मेधा — धन्यवादा: बोधनाय। गच्छामि खिन्नतापहरणाय।
अधुना प्रतिदिनं द्रष्टुम् आगमिष्यामि।

दर्पण: — (विहस्य) शुभास्ते सन्तु पन्थान:।

3. इक्षुदण्ड: — भो: निम्बवृक्ष! निरन्तरं विशालताम् प्राप्स्यसि मत्समक्षम्। तव फलानि तु लघूनि कटूनि च। जानासि किं कियत् मधुरं अहम् अस्मि। सर्वान् एव मधुररसेन पूरयामि।

निम्बवृक्ष: — आम् वस्तुत: एव त्वमतिमधुररसेन युक्त:। जना: न केवलं खादन्ति त्वाम् अपि तु तव रसमपि मग्नतया पिबन्ति। परं यदा शरीरं व्रणयुक्तं जायते मधुरताया: प्राचुर्येण तदा मम प्रयोगेण एव त्वच: रोगा: नश्यन्ति।

इक्षुदण्ड: — कथमेवं भणसि मित्र! अहं तु मधुरताया: भाण्डारम्। मत्त: एव गुडशर्करयो: निर्माणं भवति यच्च मिष्टान्नानां मूलम्। मम रसपानं तु ग्रीष्मतापं हरति, एतदर्थं तु आपणे यत्र तत्र सर्वत्र इक्षुरस: विक्रीयते।

निम्बवृक्ष: — सत्यं परं तेन मधुररसपानेन मधुमेहरोगिणां व्याधिरपि वर्धते। कथं विस्मरसि इदं तथ्यम्?

इक्षुदण्ड: — विस्मरामि न परं वस्तुत: मधुमेहरोगस्य तु अन्यान्यपि बहूनि कारणानि। मुख्यत: अस्मै रोगाय जीवनचर्या, सन्तुलितभोजनाभाव: इत्यादीनि कारणानि।

निम्बवृक्ष: — मित्र! अहं एतन्न कथयामि यत् रोग: तव कारणेन भवति अपि तु मधुमेहरोगिणां रोग: वर्धते यदा तदा तस्य हरणाय ममोपयोग: एव हितकारी भवति।

इक्षुदण्ड: — आम् एतत्तु सर्वथा सत्यम्। एवम् आवां द्वावेव तापहारकौ उपयोगिनौ च। अत एव प्रतिवेशिनौ।

4. अङ्कुश: — अमित! अमित! आगच्छ। शीघ्रम् आगच्छ।

अमित: — (अमित: न शृणोति)

अङ्कुश: — अमित! भवान् कुत्र अस्ति? किमर्थं न शीघ्रम् आगच्छति।

अमित: — आगच्छामि। आगच्छामि।

अङ्कुश: — अवश्यमेव अन्तर्जाले कालं वृथा यापयति।

© NCERT not to be republished

Rationalised 2023-24

अमित: — किम् इच्छति भवान् ?

अङ्कुश: — अहं किञ्चित् न इच्छामि, परं भवान् दिवारात्रम् अन्तर्जाले किं करोति? कालं वृथा नयति।

अमित: — मया काल: वृथा न नीत:।

अङ्कुश: — अहर्निशम् अस्य प्रयोगं करोति तथापि कथयति- "कालं वृथा न नयामि।"

अमित: — आम्। आम्। सत्यं कथयामि अहम्। परियोजनार्थं सामग्रीसञ्चयनं करोमि।

अङ्कुश: — मृषा मा वद। सामग्रीसञ्चयनम् अर्धहोरापरिमितमेव कालम् अपेक्षते। भवान् तत्र किञ्चिद् अन्यत् पश्यति।

अमित: — अहं किञ्चिद् अन्यत् न पश्यामि।

अङ्कुश: — अन्तर्जालस्य उचितप्रयोग: एव करणीय:, अतिप्रयोगं तु वर्जयेत्।

अमित: — (शिरो नमयित्वा किञ्चिद् न वदति)

5. राधा — मोहिनि! किमर्थं चिन्तिता इव प्रतीयसे ?

मोहिनी — परं मम पुत्र: अन्यथासमर्थ: अस्ति। तस्य कृते विशेषविद्यालयस्य आवश्यकता अस्ति।

राधा — किमर्थम् ! अस्माकं वसत्याम् एव सर्वोदय: विद्यालय: वर्तते। तत्रैव प्रवेशं कारयतु।

मोहिनी — एतत् कथं सम्भवम्? एतादृशेभ्य: छात्रेभ्य: विशेषावधानस्य आवश्यकता भवति।

राधा: — विशेषविद्यालय:? न, न, भागिनि! सर्वकारस्य योजना अस्ति सर्वे विद्यार्थिन: सहैव अध्ययनं कुर्वन्तु।

मोहिनी — धन्यवादा: भगिनि! महतीं चिन्ताम् अपसारितवती भवती।

राधा — एवं नास्ति। समावेशिशिक्षाया: उद्देश्यमस्ति– सर्वे विद्यार्थिन: सर्वेषाम् आवश्यकताम् अवबुध्य परस्परं साहाय्यं कुर्वन्तु।

मोहिनी — किमेतत् सत्यम्? किं राकेश: अपि सामान्यबालकै: सह पठितुं शक्नोति? (विद्यालयस्य................चलति)

राधा — अथ किम्?

मोहिनी — अहं राकेशस्य शिक्षार्थं चिन्तिता अस्मि।

6. (विद्यालयस्य अवकाशाय घण्टानाद: भवति सर्वे छात्रा: गृहं प्रति गन्तुमुत्सुका: धावन्त: इव प्रतीयन्ते परं गिरीश: तु मन्दं मन्दम् एव उद्विग्नमना: भूत्वा चलति।)

हरीश: — मित्र गिरीश! त्वम् अवकाशे जातेऽपि गृहं प्रति गन्तुमुत्सुक: किमर्थं नैव दृश्यसे? अपि कुशलं सर्वम् ?

गिरीश: — आम् सर्वं कुशलं परं गृहे न कोऽपि अस्ति मह्यं प्रतीक्षारत:। अत: एव मन्दगत्या गच्छामि।

हरीश: — किमर्थम्? त्वमेकाकी एवासि गृहे ?

गिरीश: — आम् स्वपित्रो: अहमेव एकाकी पुत्र:।

हरीश: — तर्हि मातापित्रो: कश्चिदपि गृहे न भवति किम् ?

गिरीश: — नैव, मम पितरौ प्रात:काले कार्यालयं गच्छत: । रात्रौ नववादनात्पूर्वं कोऽपि गृहं नागच्छति।

हरीश: — अहो! सत्यमेव चिन्ताया: विषय:। तव पितामह: इत्यादय: कुत्र वसन्ति ?

गिरीश: — पितामह: पितामही च पितृव्येन सह ग्रामे वसत:। अधुना तानेव प्रार्थयिष्यामि यदागत्य ते सर्वे अत्रैव वसन्तु।

हरीश: — आम् पितामहं, पितामहीं, पितृव्यं च सर्वान् ग्रामात् आकारय।

गिरीश: — (शीघ्रं गच्छन्) आम् अधुनैव गत्वा दूरभाषेण संवादं करोमि। आशास्ति यत् ते ममाग्रहम् अवश्यमेव स्वीकरिष्यन्ति।

हरीश: — अत्युत्तम: विचार: । एवमेव कुरु।

गिरीश: — अस्तु मित्र! गच्छामि पुनर्मेलनाय।

हरीश: — शिवास्ते सन्तु पन्थान: ।

7. (सुमित: अमित: च उपवने भ्रमत:)

अमित: — सुमित! चिन्तित: दृश्यसे।

सुमित: — आम्। चिन्तितोऽस्मि।

अमित: — किमर्थम् ?

सुमित: — गणितपरीक्षायां मया न्यूना: अङ्का: प्राप्ता: ।

अमित: — तेन किम्?

सुमित: — गणितविषय: तु अनिवार्य-विषयोऽस्ति।

अमित: — जानामि अहम्।

सुमित: — परं मया तु अस्मिन् विषये सदैव काठिन्यम् अनुभूतम्।

अमित: — तेन किम्?

सुमित: — अग्रे किं करिष्यामि ?

अमित: — किं न जानासि केवलं दशमकक्षापर्यन्तम् एव अस्य विषयस्य पठनम् निवार्यम्।

सुमित: — जानामि तु।

अमित: — तर्हि किमर्थं त्वं चिन्तामग्न:? चित्रकलां गृहीत्वा स्वयोग्यतां प्रदर्शय।

सुमित: — (किञ्चित् न वदति)

अमित: — भवान् चित्रकलायां निपुण: अस्ति।

© NCERT not to be republished

सुमित: — (शिर: प्रचालयति)
अमित: — चित्रकलाया: माहात्म्यं तु प्रतिदिनं वर्धते एव।
(संवदन्तौ गृहं प्रति गच्छत:)

8. शिक्षिका — भवन्त: सर्वे दशमकक्षाया: छात्रा:। किं भवन्त: स्वजीवनलक्ष्यविषये चिन्तितवन्त: ?

एक:छात्र:— आम् महोदये! अहं गणितविषयं गृहीत्वा अभियान्त्रिकीं पठिष्यामि।
(मनोज:)

शिक्षिका — शोभनम्, मनोज: तु अभियान्त्रिकीं पठिष्यति। श्यामे! त्वं किं पठिष्यसि ?
श्यामा — महोदये! मम रुचि: सङ्गीते अस्ति, अत: अहं सङ्गीतविषयं गृहीत्वा स्नातकपरीक्षां सम्मुखीकरिष्यामि, तदनन्तरं साधनां कृत्वा सङ्गीतक्षेत्रे भविष्यनिर्माणं करिष्यामि।
शिक्षिका — बहुशोभनम्। तरुण! शिर: विनमय्य किं चिन्तयसि?
तरुण: — अहं व्यावसायिक-प्रबन्धनक्षेत्रे (एम.बी.ए.) कर्तुम् इच्छामि परम्..........
शिक्षिका — परं किम्?
तरुण: — मम पिता एक: निर्धन: कृषक:, स: व्यावसायिक-प्रबन्धनशिक्षायै अत्यधिकं शुल्कं दातुम् अक्षम:।
शिक्षिका — तरुण! एतदर्थं चिन्तां मा कुरु। मेधाविनां छात्राणां कृते धनस्य कापि समस्या न भवति। सर्वे वित्तकोषा: उच्चाध्ययनाय ऋणं ददति। त्वं दत्तचित्तो भूत्वा अध्ययनं कुरु। तव शुल्कस्य चिन्ता सर्वकारस्य अस्ति। अध्ययनं समाप्य एव ऋणशोधनं कर्तव्यं भविष्यति।
तरुण: — सत्यम् महोदये! मम मनस: चिन्ता अपगता। धन्यवादा:।

9. सुमेधा — (शनै: शनै: किञ्चित् वदति)
माता — सुमेधे ! शनै:शनै: किं वदसि ?
सुमेधा — यत् पठितं तत् स्मरामि।
माता — परं हस्ते पुस्तकं तु न अस्ति।
सुमेधा — (पुन: स्मर्तुं रता अभवत्)
माता — प्रथमं स्मर तदनु पुनरावृत्तिं कुरु।
सुमेधा — मया स्मृतम् अधुना अभ्यासं करोमि।
माता — पुनरावृत्ति: तु अनिवार्या।
सुमेधा — अध्यापकेन अपि एतत् कथितम्।
माता — पुन: पुन: अभ्यासेन विषय: हृदयङ्गम: भवति।
सुमेधा — आम्

Rationalised 2023-24

© NCERT not to be republished

माता	—	किं जानाति भवती, पुन: पुन: अभ्यासेन एव अर्जुन: श्रेष्ठ: धनुर्धर: अभवत्।
सुमेधा	—	पठितं मया।
माता	—	अत: सततम् अभ्यासं कुरु।

10.

तन्वी	—	सखि अवनि! भवती ह्य: विद्यालयं न आगतवती। अपि कुशलिनी त्वम्?
अवनी	—	आम् तन्वि! आम्, सर्वथा कुशलिनी अस्मि। ह्य: तु पक्षिणां सौन्दर्यं द्रष्टुम् पक्षिविहारं गता आसम्।
तन्वी	—	अहो! अत्यद्भुतम्। कुत्रास्ति पक्षिविहार:?
अवनी	—	भारते अनेके पक्षिविहारा: सन्ति अहं तु दिल्ल्या: समीये 'नोएडा' इति नगरम् अगच्छम्।
तन्वी	—	के के खगा: दृष्टा: तत्र ?
अवनी	—	तत्र न केवलं सामान्या:, अपि तु दुर्लभा: खगा: अपि दृष्टा:, यथा-काष्ठकूट:, नीलकण्ठ:, विविधा: चटका: परमधुना वृक्षाणां कर्तनेन वनानां नाशेन च तेषामाश्रयस्थलानि नष्टानि।
तन्वी	—	(मध्ये एव) विरम सखि विरम। मम उत्कण्ठा वर्धते।
अवनी	—	आम् एताम् अनुभूतिमेव प्राप्तुमहं तत्र गता आसम्।
तन्वी	—	आम् सत्यं कथयसि सखि! पक्षिण: यदा पक्षौ प्रसार्य इतस्तत: कूजन्त: उड्डयन्ते तदा तान् दृष्ट्वा अपूर्वा एवानन्दानुभूति: भवति।
अवनी	—	वस्तुत: खेदस्य विषय: अस्माकं पितर: तु कथयन्ति यत् तेषां शैशवावस्थायाम् अनेके खगा: गृहेषु इतस्तत: विचरन्ति स्म।
तन्वी	—	वस्तुत: अद्यत्वे नगरेषु तु पक्षिणां दर्शनं प्राय: दुर्लभमेव।
अवनी	—	तदैवाधुना पशुपक्षिसंरक्षणाय विविधा: पक्षिविहारा:, अभयारण्यानि च निर्मीयन्ते।

© NCERT not to be republished